क
५६/३

कल्याण

वर्ष ४९] * * * [अङ्क ३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

(संस्करण १,७०,२५०)

विषय-सूची

कल्याण, सौर चैत्र, श्रीकृष्ण-संवत् ५२००, मार्च १९७५

विषय	पृष्ठ-संख्या
१—संकीर्तन-प्रेमी श्रीहनुमान [कविता] ...	५७
२—पञ्चमुख पवनकुमारका ध्यान [संकलित—मन्त्र-महार्णव]	५८
३—देवर्षि नारदकृत श्रीहनुमानजीकी स्तुति [संकलित—श्रीबृहद्भागवतामृतम्] ...	५८
४—श्रीहनुमद्व्रत-पूजा-पद्धति (अनुवादक—साहित्याचार्य पाण्डेय पं० श्रीराम-नारायणदत्तजी शास्त्री 'राम') ...	५९
५—वीरविंशतिकाख्यं श्रीहनुमत्स्तोत्रम् (कवि-पति श्रीउमापतिशर्मा द्विवेदिविरचित)	६६
६—(नारदपुराणोक्त) श्रीमारुतिकवच [संकलित]	६९
७—श्रीहनुमदुपनिषद् (अनुवादक—पं० श्रीजानकीनाथजी शर्मा) ...	७३
८—तन्त्रसारोक्त श्रीहनुमत्कल्प (अनुवादक—पं० श्रीरामाधारजी शुक्ल, शास्त्री, साहित्यकेसरी)	७४
९—श्रीसौभाग्यहनुमन्महामन्त्रकी प्रयोग-विधि (अनुवादक—पं० श्रीरामाधारजी शुक्ल, शास्त्री, साहित्यकेसरी) ...	७७
१०—धर्मारण्यके ब्राह्मणोंद्वारा श्रीहनुमानजीकी स्तुति [संकलित—स्कन्दपुराण] ...	७८
११—हनुमद्द्वादशाक्षर-मन्त्रके प्रयोगकी विधि	७९
१२—श्रीहनुमदष्टादशाक्षरमन्त्र-प्रयोग (अनुवादक—श्रीवैदेहीशरणजी शास्त्री)	८१
१३—श्रीरामकृतं श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम् [संकलित —मन्त्रमहार्णव] ...	८३
१४—महायोगी श्रीहनुमान (पं० श्रीरेवाप्रसादजी द्विवेदी)	१०३
१५—श्रीभरत और हनुमानजी (श्रीरामाश्रय-प्रसादसिंहजी) ...	१०५
१६—'कल्याण'का आगामी विशेषाङ्क 'श्रीभगवत्कृपा-अङ्क'की प्रस्तावित विषय-सूची	१०७
१७—पढ़ो, समझो और करो ...	११०

चित्र-सूची

१—दासानुदास श्रीहनुमान	(रेखाचित्र) ...	मुखपृष्ठ
२—संकीर्तन-प्रेमी श्रीहनुमान	(तिरंगा) ...	५७

Free of Charge] जय विराट जय जगत्पते । गौरीपति जय रमापते ॥ [बिना मूल्य

आदि सम्पादक—नित्यलीलालीन भाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार

सम्पादक—स्वामी रामसुखदास

मुद्रक-प्रकाशक—मोतीलाल जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संकीर्तन-प्रेमी श्रीहनुमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

सीतारामपदाम्बुजे मधुपवद् यन्मानसं लीयते सीतारामगुणावली निशि दिवा यज्जिह्वया पीयते ।
सीतारामविचित्ररूपमनिशं यच्चक्षुषोर्भूषणं सीतारामसुनामध्याननिरतं तं मारुतिं सम्भजे ॥

(श्रीरामायणरसायन)

वर्ष ४९ } गोरखपुर, सौर चैत्र, श्रीकृष्ण-संवत् ५२००, मार्च १९७५ { संख्या ३ पूर्ण संख्या ५८०

संकीर्तन-प्रेमी श्रीहनुमान

ध्यानमग्न हनुमान नाचते-गाते राम नाम अविराम ।
जय सियाराम, जय सियाराम, जय सियाराम, जय सियाराम ॥
जय रघुनायक, जय सुखदायक, जय वरदायक, जय सियाराम ।
जय सियाराम, जय सियाराम, जय सियाराम, जय सियाराम ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चमुख पवनकुमारका ध्यान

पूर्वं तु वानरं वक्त्रं कोटिसूर्यसमप्रभम्। दंष्ट्राकरालवदनं भ्रूकुटीकुटिलेक्षणम् ॥ १ ॥
अस्यैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम्। अत्युग्रतेजोवपुषं भीषणं भयनाशनम् ॥ २ ॥
पश्चिमं गारुडं वक्त्रं वक्रतुण्डं महाबलम्। सर्वनागप्रशमनं विषभूतादिकृन्तनम् ॥ ३ ॥
उत्तरं सौकरं वक्त्रं कृष्णं दीप्तं नभोपमम्। पातालसिंहवेतालज्वररोगादिकृन्तनम् ॥ ४ ॥
ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम्। येन वक्त्रेण विप्रेन्द्र तारकाख्यं महासुरम् ॥ ५ ॥
जघान शरणं तत् स्यात् सर्वशत्रुहरं परम् ॥५½॥ (मन्त्रमहार्णव)

(पञ्चमुख श्रीहनुमानजीका) पूर्वकी ओरका मुख वानरका है, उसकी प्रभा करोड़ों सूर्योंके तुल्य है। वह विकराल दाढ़ोंसे युक्त है और उसकी भृकुटियाँ चढ़ी हुई हैं ॥ १ ॥ इन्हींका दक्षिणकी ओरवाला मुख नृसिंह भगवान्‌का है, यह महान् अद्भुत, अत्यन्त उग्र तेजसे युक्त, भयावह और (शरणागतोंके लिये) भयनाशक है ॥ २ ॥ इनका पश्चिम दिशावाला मुख गरुड़का है, इसकी चोंच टेढ़ी और अत्यन्त पुष्ट है। यह सभी नागोंको परास्त करनेवाला तथा विष एवं भूत-प्रेत आदिका उच्छेदक है ॥ ३ ॥ इनका उत्तरकी ओरका मुख सूकरका है, यह दीप्तिमान्, आकाशके सदृश कृष्णवर्ण तथा पातालचारी जीवों, सिंह, वेताल एवं ज्वर आदि रोगोंका विदारक है ॥ ४ ॥ इनका ऊपरकी ओर उठा हुआ पाँचवाँ मुख घोड़ेका है, यह अत्यन्त भयानक और राक्षसोंका संहारक है। विप्रवर ! जिस मुखके द्वारा हनुमानजीने तारक नामक महादैत्यका वध किया था, वह समस्त शत्रुओंका विघातक एवं सर्वोत्कृष्ट मुख (भक्तोंके लिये) रक्षक हो ॥ ५½ ॥

देवर्षि-नारदकृत श्रीहनुमानजीकी स्तुति

सत्यमेव भगवत्कृपाभरस्यास्पदं निरुपमं भवान् परम्।
यो हि नित्यमहहो ! महाप्रभोश्चित्रचित्रभजनामृतार्णवः ॥
दासः सखा वाहनमासनं ध्वजश्छत्रं वितानं व्यजनं च वन्दी।
मन्त्री भिषग्योधपतिः सहायश्रेष्ठो महाकीर्तिविवर्धनश्च ॥
समर्पितात्मा परमप्रसादभृत्तदीयसत्कीर्तिकथैकजीवनः।
तदाश्रितानन्दविवर्धनः सदा महत्तमः श्रीगरुडादितोऽधिकः ॥
अहो भवानेव विशुद्धभक्तिमान् परं न सेवासुखतोऽधिमत्य यः।
इमं प्रभुं वाचमुदारशेखरं जगाद तद्भक्तगणप्रमोदिनीम् ॥
भवबन्धच्छिदे तस्यै स्पृहयामि न मुक्तये। भवान् प्रभुरहं दास इति यत्र विलुप्यते ॥

(श्रीबृहद्भागवतामृतम् १। ४। ६४–६८)

अहो ! यह बात सत्य है कि आप ही भगवान्‌के अनुपम—श्रेष्ठ कृपापात्र हैं; क्योंकि आप ही प्रभुकी चित्र-विचित्र नित्य सेवारूपी अमृतके समुद्र हैं। आप ही भगवान्‌के दास, सखा, वाहन, आसन, ध्वजा, छत्र, वितान, पंखा, यशोगायक, मन्त्री, वैद्य, सेनापति, श्रेष्ठ सहायक और उनकी महान् कीर्तिकी वृद्धि करनेवाले हैं। आपने अपनी आत्माका प्रभुके प्रति पूर्ण समर्पण कर दिया है, आप उनकी कृपाके भाजन हैं, एकमात्र उनकी सत्कीर्तिका कथन करते रहना ही आपका जीवन है, आप उनके भक्तोंका आनन्द बढ़ाते रहते हैं, आपकी महिमा गरुड़ आदिसे भी अधिक है। अहो ! आप ही विशुद्ध भक्तिके पात्र हैं, आप सेवा-सुखसे अधिक किसी अन्य सुखको मानते ही नहीं। आपने उदारशिरोमणि प्रभुसे ऐसी बात कही थी, जिससे सब भक्त बहुत आनन्दित हुए थे—“प्रभो ! जहाँ यह सम्बन्ध टूट जाता है कि ‘आप प्रभु हैं और मैं आपका दास हूँ’, संसाररूपी बन्धनसे छुड़ानेवाली उस मुक्तिकी मैं इच्छा नहीं करता।”

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीहनुमद्व्रत-पूजा-पद्धति

(अनुवादक—साहित्याचार्य पाण्डेय पं० श्रीरामनारायणदत्तजी शास्त्री 'राम')

मार्गशीर्ष मासके शुक्लपक्षकी त्रयोदशीको हनुमद्व्रत होता है। इसे आरम्भ करनेवाले पुरुषको आचारके अनुसार पहले पम्पा-पूजा करनी चाहिये। उसके लिये इस प्रकार संकल्प करे—देश-काल कीर्तनके पश्चात् अमुक गोत्र, अमुक शर्मा (वर्मा गुप्त वा) विशिष्टाचारपरम्पराप्राप्तां पम्पापूजां यथाशक्तिद्रव्यैः करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प कर व्रत आरम्भ करनेवाला उपासक मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशीको ही शौच-संतोष आदि नियमोंके पालनपूर्वक ब्रह्मचारी एवं जितेन्द्रिय रहकर अच्छी तरह रात्रि व्यतीत करे। फिर प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर वह सम्पूर्ण पदार्थों एवं कर्तव्योंकी देख-भाल करे। इस विषयमें सूत और शौनकका संवाद इस प्रकार है—

शौनक आदि ऋषियोंने पूछा—'सूतजी! हनुमद्व्रतका संकल्प करनेकी इच्छावाले लोग पूछा करते हैं कि किस स्थानपर इस व्रतका सम्यक् प्रकारसे अनुष्ठान करना चाहिये। आप यह व्रत बताइये। वह व्रत क्या है? पूर्वजोंने उस अद्भुत व्रतका अनुष्ठान कहाँ किया है?

व्रतके लिये व्रज और वृन्दावन आदि बहुत-से स्थान हैं। बावड़ियाँ, कुएँ, पोखरे, नहरें या छोटी नदियाँ, कृत्रिम और विस्तृत नदियाँ तथा नद, समुद्र आदि, पर्वत, सरिताएँ, वृक्ष—ये बहुत-से स्थान हैं। इनपर विचार कर आप हमारे लिये स्थानका निर्णय करें; क्योंकि आप समस्त वक्ताओंमें श्रेष्ठ हैं।'

सूतजी बोले—महाभाग महर्षिगण! आपलोगोंने बहुत अच्छी बात पूछी है। मैं इस विषयका सम्यक्रूपसे प्रतिपादन करता हूँ। बहुत-से ऐसे पवित्र देश एवं स्थान हैं, जो पुण्यकी वृद्धि करनेवाले हैं तथापि मुनीश्वरो! जो सबसे गोपनीय स्थान है, उसे मैं बताता हूँ। आप सब लोग सुनें।

'पहले पम्पा-नदीके तटपर हनुमानजीकी पूजा की गयी थी। इसलिये उसीके तटपर हनुमद्व्रत किया जाय तो सर्वोत्तम है। विभिन्न देशोंमें रहनेवाले लोगोंको पहले यत्नपूर्वक पम्पाका आवाहन-पूजन करना चाहिये। ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर शौच आदिसे निवृत्त हो आलस्य छोड़कर नित्यकर्म करे। तत्पश्चात् योगक्षेमके कार्यमें लगे। पाँच बाजोंके साथ अपने भाई-बन्धुओंसे घिरकर उस स्थानके आसपासकी किसी नदीके तटपर जाय। वहाँ मौन होकर स्नान करे। अघमर्षण मन्त्रोंके पाठसे अपनेको शुद्ध करे और एकाग्रचित्त हो जाय। तदनन्तर संध्या-वन्दनपूर्वक नित्यकर्म पूरा करे। फिर यत्नपूर्वक पितरोंका तर्पण कर ललाटमें उज्ज्वल तिलक लगाये। तत्पश्चात् व्रती पुरुष पम्पाकी पूजाके लिये सब ओरसे सोलह उपचारोंका संग्रह करे। फिर इस प्रकार पूजा आरम्भ करे—

आवाहन

हेमकूटगिरिप्रान्तजनानां गिरिसानुगाम्।
पम्पामावाहयाम्यस्यां नद्यां हृद्यां प्रयत्नतः॥

हेमकूटगिरिके प्रान्तमें रहनेवाले लोगोंकी आदरणीया, गिरिशिखर-गामिनी, मनोरम पम्पानदी (या पुष्करिणी*) का मैं इस नदीमें प्रयत्नपूर्वक आवाहन करता हूँ।

आसनसमर्पण

तरंगशतकल्लोले रिङ्गत्तामरसोज्ज्वले।
पम्पानदि नमस्तुभ्यं गृहाणासनमुत्तमम्॥

सैकड़ों तरंगोंके साथ कल्लोल करनेवाली तथा हिलते हुए कमलसमूहोंसे सुशोभित पम्पे! तुम्हें नमस्कार है। तुम यह उत्तम आसन ग्रहण करो।

पाद्य

हृद्यं सुगन्धसम्पन्नं शुद्धं शुद्धाम्बुसत्कृतम्।
पाद्यं गृहाण पम्पाख्ये महानदि नमोऽस्तु ते॥

पम्पा-नामवाली महानदी! तुम्हें नमस्कार है। यह मनोरम, सुगन्धयुक्त, शुद्ध एवं स्वच्छ जल पाद्यके रूपमें सत्कारपूर्वक समर्पित है। तुम इसे ग्रहण करो।

अर्घ्य

भागीरथि नमस्तुभ्यं सलिलेन सुशोभने।
अनर्घ्यमर्घ्यमनघे गृह्यतामिदमुत्तमम्॥

पम्पे! तुम भागीरथीस्वरूपा हो। तुम्हें नमस्कार है।

* श्रीमद्वाल्मीकि-रामायण, महाभारत, रघुवंश एवं कोशादिमें पम्पाका पुष्करिणी तथा नदी-दोनों रूपोंमें वर्णन प्राप्त होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वच्छ सलिलसे सुशोभित होनेवाली निष्पाप नदी ! तुम इस बहुमूल्य उत्तम अर्घ्यको स्वीकार करो ।

आचमनीय

पम्पानदि महापुण्ये सम्पादितसुशोभने ।
गोदावरीजलेनाद्य गृहाणाचमनीयकम् ॥

महापुण्यमयी पम्पानदी ! तुम परम कल्याण सम्पादित करनेवाली हो । आज गोदावरीके जलसे दिया गया यह आचमनीय स्वीकार करो ।

पञ्चामृतस्नान

दुग्धाऽऽज्येक्षुरसैः पुण्यैर्दध्ना च मधुना तथा ।
पञ्चामृतैः स्नापयिष्ये पम्पानदि नमोऽस्तु ते ॥

पम्पानदि ! तुम्हें नमस्कार है । मैं पवित्र दूध, घी, इक्षुरस, दही और मधु—इन पञ्चामृतोंद्वारा तुम्हें स्नान कराता हूँ ।

शुद्धोदकस्नान

शुद्धनीलैः शुद्धजलैर्नारिकेलाम्बुभिस्तथा ।
पुण्यैः कृष्णानदीतोयैः सिञ्चामि त्वां सरिद्वरे ॥

सरिताओंमें श्रेष्ठ पम्पे ! मैं तुम्हें शुद्ध, नील एवं स्वच्छ जलसे, नारियलके पानीसे तथा कृष्णानदीके पवित्र जलसे अभिषिक्त करता हूँ ।

वस्त्र

महामूल्यं च कार्पासं दिव्यवस्त्रमनुत्तमम् ।
पम्पानदि महापुण्ये पम्पाशोभातिशोभने ॥

महापुण्यमयी पम्पानदी ! तुम पम्पासरोवरकी शोभासे अत्यन्त शोभायमान हो । मैं तुम्हें कपासका बना हुआ बहुमूल्य एवं परम उत्तम दिव्य वस्त्र समर्पित करता हूँ ।

यज्ञोपवीत

श्रौतस्मार्तादिसत्कर्मफलदं पावनं शुभम् ।
यज्ञोपवीतमधुना कल्पये सरिदुत्तमे ॥

सरिताओंमें श्रेष्ठ पम्पे ! अब मैं तुम्हारे लिये यज्ञोपवीत प्रस्तुत करता हूँ, जो श्रौत, स्मार्त आदि सत्कर्मोंका फल प्रदान करनेवाला, पावन एवं शुभ है ।

गन्ध

कर्पूरगुटिकामिश्रं कस्तूर्या च विमर्दितम् ।
यत्नेन कल्पितं गन्धं लेपयेऽङ्गं सरिद्वरे ॥

सरिद्वरे पम्पे ! कर्पूरके डलेसे मिश्रित तथा कस्तूरीसे विमर्दित यह गन्ध बड़े यत्नसे तैयार किया गया है । मैं तुम्हारे अङ्गमें इसका लेपन करता हूँ ।

अक्षत

लक्षणोक्तान् हरिद्राक्तानक्षतांश्चोत्तमाञ्छुभान् ।
पम्पानदि गृहाणेमाञ्छुभशोभातिवृद्धये ॥

पम्पानदि ! ये उत्तम एवं शुभ अक्षत शास्त्रोक्त लक्षणोंसे युक्त तथा हल्दीमें रँगे हुए हैं । तुम इन्हें अपनी शुभ शोभाकी अतिशय वृद्धिके लिये स्वीकार करो ।

कुङ्कुम

अतसीकुसुमोपेतं पङ्करुहदलोज्ज्वलम् ।
कुङ्कुमं शंकरजटासम्भूते सरिदर्पये ॥

भगवान् शंकरकी जटासे प्रकट हुई नदी ! तीसीके फूलसे युक्त तथा कमलदलसे प्रकाशमान यह कुङ्कुम तुम्हें अर्पित करता हूँ ।

नेत्राञ्जन

कज्जलं त्रिजगद्वन्द्यं महापुण्यतरंगिणि ।
नेत्रयोः पालमनघं गृह्यतां सरितां वरे ॥

तीनों लोकोंकी वन्दनीया महापुण्यमयी तरंगिणी ! सरिताओंमें श्रेष्ठ पम्पे ! यह नेत्रोंमें लगाने योग्य निर्दोष कज्जल ग्रहण करो ।

पुष्प

शतपत्रैश्च कह्लारैः कुमुदैर्बकुलैरपि ।
मल्लिकाजातिपुन्नागैः केतकैश्चापि चम्पकैः ॥
तुलसीदामभिश्चापि तथा बिल्वदलैरपि ।
पूजयामि महापुण्ये पम्पानदि नमोऽस्तु ते ॥

परम पुण्यमयी पम्पानदी ! तुम्हें नमस्कार है । मैं कमल, कह्लार, कुमुद, बकुल, मल्लिका, जाती, पुन्नाग, केवड़ा, चम्पा और तुलसीकी माला तथा बेलपत्रोंद्वारा तुम्हारी पूजा करता हूँ ।

अङ्गपूजा

गोदावर्यै नमः, पादौ पूजयामि । कृष्णायै नमः, गुल्फौ पूजयामि । पापहारिण्यै नमः, जङ्घे पूजयामि । सुभ्रुवे नमः, जानुनी पूजयामि । उरुतरङ्गिण्यै नमः, ऊरू पूजयामि । तडिदुज्ज्वलजवायै नमः, कटिं पूजयामि । अम्बुशोभिन्यै नमः, नितम्बं पूजयामि । अणुमध्यायै नमः, मध्यं पूजयामि । मुक्तस्तनायै नमः, स्तनौ पूजयामि । कम्बुकण्ठायै नमः,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कण्ठं पूजयामि। ललितबाहुतरंगायै नमः, बाहू पूजयामि। दीर्घवेण्यै नमः, वेणीं पूजयामि। सुवक्त्रायै नमः, वक्त्रं पूजयामि। दुर्वारवारिपूरायै नमः, शिरः पूजयामि। सहस्रमुखायै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

धूप

सदशाङ्गं शुभं दिव्यं सगुग्गुलमनुत्तमम्।
साज्यं परिमलोद्भूतं धूपं स्वीकुरु पावने॥

पावन नदी पम्पे! तुम घृतमिश्रित मनोहर गन्ध प्रकट करनेवाला यह धूप स्वीकार करो। इसमें दशाङ्ग और गुग्गुल पड़े हैं। यह शुभ, दिव्य और परम उत्तम है।

दीप

साज्यमग्निप्रकाशोद्यत्कोटिसूर्यसमद्युतिम्।
पश्य दीपं प्रसन्नाङ्गे पम्पानदि नमोऽस्तु ते॥

स्वच्छ अङ्गोंवाली पम्पानदी! तुम्हें नमस्कार है। तुम इस घृतपूरित दिव्य दीपको देखो। यह अग्निके प्रकाशसे युक्त हो उगते हुए करोड़ों सूर्योंके समान द्युति बिखेर रहा है।

नैवेद्य

शाल्यन्नं स्वर्णपात्रस्थं शाकापूपसमन्वितम्।
साज्यं दधि पायसं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

देवि! ये सोनेकी थालीमें रखे हुए अगहनी चावलके भात, शाक एवं पूए हैं। घी, दही और खीर भी है, तुम यह नैवेद्य ग्रहण करो।

ताम्बूल

पूगैः सुशोभनैश्चापि नागवल्लीदलैर्युतम्।
ताम्बूलं गृह्यतां देवि पम्पानदि नमोऽस्तु ते॥

देवि! सुन्दर सुपारी और नागवल्लीके दलोंसे युक्त यह ताम्बूल ग्रहण करो। पम्पानदि! तुम्हें नमस्कार है।

हनुमत्-व्रतको करनेवाले पुरुषोंको पम्पा नदीके लिये सुवर्णमय पुष्प अर्पित करना चाहिये। यह व्रत-पूर्तिजनित महान् यश, दिव्य स्फूर्ति और उत्तम कीर्तिको देनेवाला है।

प्रदक्षिणा

प्रदक्षिणत्रयं देवि प्रयत्नेन प्रकल्पितम्।
पश्याद्य पावने देवि पम्पानदि नमोऽस्तु ते॥

देवि! पावन पम्पा नदी! आज मैंने यत्नपूर्वक तीन बार तुम्हारी परिक्रमा की है। इसे देखो और स्वीकार करो। तुम्हें नमस्कार है।

नमस्कार

नमस्ते नमस्ते विशालोज्ज्वलाङ्गे नमस्ते नमस्ते लसत्सत्तरंगे।
नमस्ते नमस्ते गिरिप्रान्तरंगे नमस्ते नमस्ते कलद्बर्हिरङ्गे॥

विशाल उज्ज्वल अङ्गवाली देवि! तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है। सुशोभित सुन्दर तरंगवाली पम्पे! तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है। पर्वत-प्रान्तमें क्रीडा करनेवाली सरिद्वरे! तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है। अपने अङ्ग अर्थात् तटभूमिपर विचरते हुए मयूरोंकी शोभासे सम्पन्न पम्पे! तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।

क्षमापन

अपराधशतं देवि मत्कृतं च दिने दिने।
क्षम्यतां पावने देवि पम्पानदि नमोऽस्तु ते॥

पावन पम्पा नदीरूपी देवि! तुम्हें नमस्कार है। देवि! दिन-दिन मेरेद्वारा जो सैकड़ों अपराध हुए हैं, आप उन्हें क्षमा करें।

प्रार्थना

पम्पानदि महापुण्य तरंगिणि नमोऽस्तु ते।
त्वत्तीरे हनुमत्पूजा कृता रामेण धीमता॥
मनोरथफलावाप्तिस्तस्याभीष्टं न संशयः।
सुग्रीवेण च तीरेऽस्मिन् कपिवर्यपतेर्व्रतम्॥
सत्कृतं च मनोवाञ्छा सद्यस्तस्य बभूव सा।
अतस्त्वन्नीरपुलिने कृते हनुमतो व्रते॥
श्रेयांसि मम सर्वाणि निर्विघ्नानि भवन्त्विह।

परम पुण्यमय तरंगोंसे सुशोभित पम्पा नदी! तुम्हें नमस्कार है। बुद्धिमान् श्रीरामने तुम्हारे तटपर हनुमानजीकी पूजा की थी। उन्हें मनोवाञ्छित फल प्राप्त हुआ। उनका अभीष्ट सिद्ध हो गया, इसमें संशय नहीं। सुग्रीवने भी तुम्हारे कूलपर कपिवर्यपति हनुमानजीका व्रत किया, इससे उनकी भी मनोवाञ्छा तत्काल सफल हुई। अतः तुम्हारे नीरके पुलिनपर हनुमानजीका व्रत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करनेके कारण मेरे भी सम्पूर्ण श्रेय यहाँ निर्विघ्न सिद्ध हों।

इस प्रकार पम्पानामक शुभ नदीकी प्रार्थना करके हाथमें कलशका जल ले आदरपूर्वक अपने घरको जाय।

इस प्रकार पम्पाकी पूजा पूरी हुई। इसके बाद श्रीहनुमानजीकी पूजा करनी चाहिये। उसकी विधि इस प्रकार है—

पहले निम्नाङ्कित वाक्य बोलकर संकल्प करे। देश-कालके उच्चारणके बाद अमुकगोत्रोऽहं मया आचरितस्य व्रतस्य आचर्यमाणस्य च व्रतस्य सम्पूर्णफलावाप्त्यर्थं भार्यया सह हनुमत्पूजां करिष्ये।

संकल्पके बाद प्रधानपूजाके अङ्गरूपसे 'ॐ श्रीगणेशाय नमः' इस मन्त्रसे गणेशजीका पूजन करके भूशुद्धि और भूतशुद्धि करे। तत्पश्चात् कलशकी पूजा करके पीठ-पूजा करे। पीठके अधोभागमें क्रमशः 'अतलाय नमः, वितलाय नमः, सुतलाय नमः, रसातलाय नमः, तलातलाय नमः, महातलाय नमः, पातालाय नमः'—इस प्रकार सात पातालोंकी पूजा करके पीठपर—'शब्दात्मने नमः' इस मन्त्रसे सब ओर पूजन करे। पीठगत कमलके ऊपर 'कमठाय नमः'से कमठकी पूजा करे। उसके ऊपर—'सहस्रमणिमत्फणाभिः प्रकाशमानाय शेषाय नमः।' इस मन्त्रसे शेषकी पूजा करे। फिर आठ दिशाओंमें 'अष्टदिग्गजेभ्यो नमः' इस मन्त्रसे दिग्गजोंकी पूजा करे। दिग्गजोंके ऊपर भूमण्डलकी भावना करके 'भूमण्डलाय नमः' इस मन्त्रसे भूमण्डलकी पूजा करे। उसके ऊपर-ऊपर क्रमशः 'भूर्लोकाय नमः, भुवर्लोकाय नमः, स्वर्लोकाय नमः, जनलोकाय नमः, तपोलोकाय नमः, महर्लोकाय नमः, सत्यलोकाय नमः'—इन मन्त्रोंसे सात लोकोंकी पूजा करके 'अष्टदिक्पालेभ्यो नमः'का उच्चारण कर दिक्पालोंकी पूजा करे। भूमण्डलके मध्य भागमें 'मेरवे नमः' इस मन्त्रसे मेरुकी पूजा करे।

मेरुके दक्षिण भागमें द्रोणशैलकी[1], उसके मध्यभागमें कल्पवृक्षकी[2], उसके मूलभागमें सुवर्ण[3] वेदिकाकी, वेदीपर वृक्षके पूर्वभागमें 'नवरत्नखचितचारुरत्नपीठाय नमः' इस मन्त्रसे रत्नपीठकी पूजा करे।

इस प्रकार पूजन कर पाँच रंगोंसे स्वस्तिक, शङ्ख, कमल तथा रंगवल्ली अङ्कित करके इनके मध्यमें तेरह दलोंका कमल लिखे। उसके ऊपर श्वेत चावल रखकर चावलके ऊपर कलश स्थापित करे। उस कलशको शुद्ध जलसे भरे। उसके ऊपर पीताम्बर रखे। पीताम्बरपर पुनः त्रयोदशदल कमल अङ्कित करे। उन दलोंमें 'ॐ नमो भगवते वायुनन्दनाय'—इस तेरह अक्षरवाले मन्त्रके वर्णबीजोंका पूर्वादिक्रमसे उल्लेख करे। फिर तेरह गाँठवाला डोरा, जो हल्दीमें रँगा हुआ हो, उस कमलपर स्थापित करे। तत्पश्चात् प्राणायाम करके अन्तःकरणको शुद्ध कर उत्तराभिमुख बैठे। फिर सीतासहित श्रीरामचन्द्रजीका ध्यानादि मानसपूजन करके श्रीहनुमानजीका आवाहन करे।

आवाहन

श्रीहनुमतः प्राणा इह प्राणा हनुमतो जीव इह स्थितः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि हनुमत इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

श्रीरामचरणाम्भोजयुगलस्थिरमानसम्।
आवाहयामि वरदं हनुमन्तमभीष्टदम्॥

भगवान् श्रीरामके युगलचरणारविन्दोंमें स्थिरभावसे मनको लगाये रखनेवाले, अभीष्टदाता एवं वरदायक हनुमानजीका मैं आवाहन करता हूँ।

आवाहनं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः॥

ध्यान

कर्णिकारसुवर्णाभं वर्णनीयं गुणोत्तमम्।
अर्णवोल्लङ्घनोद्युक्तं तूर्णं ध्यायामि मारुतिम्॥

कनेरके फूल और सुवर्णके समान जिनकी अङ्ग-कान्ति है, जिनमें वर्णनीय (प्रशंसनीय) उत्तम गुण विद्यमान हैं तथा जो समुद्रको लाँघ जानेके लिये उद्यत हैं, उन शीघ्रगामी पवननन्दन हनुमानजीका मैं ध्यान करता हूँ।

ध्यानं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः॥

आसन

नवरत्नमयं दिव्यं चतुरस्रमनुत्तमम्।
सौवर्णमासनं तुभ्यं कल्पये कपिनायक॥

मन्त्र—१. द्रोणशैलाय नमः। २. कल्पवृक्षाय नमः। ३. सुवर्णवेदिकायै नमः।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कपिनायक हनुमानजी ! मैं आपके लिये सोनेका सिंहासन प्रस्तुत करता हूँ, जिसमें नौ प्रकारके रत्न जटित हैं तथा जो दिव्य, चौकोर और अत्यन्त उत्तम है।

आसनं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

पाद्य

सुवर्णकलशानीतं सुष्ठु वासितमादरात्।
पादयोः पाद्यमनघ प्रतिगृह्ण प्रसीद मे ॥

निष्पाप पवनपुत्र ! मैं आपके चरणोंमें पाद्य-जल अर्पित करता हूँ, जो सोनेके कलशमें लाया गया है और जिसे आदरपूर्वक सुवासित किया गया है। आप इसे ग्रहण कीजिये और मुझपर प्रसन्न होइये।

पाद्यं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

अर्घ्य

कुसुमाक्षतसम्मिश्रं गृह्यतां कपिपुंगव।
दास्यामि तेऽञ्जनीपुत्र स्वमर्घ्यं रत्नसंयुतम् ॥

कपिप्रवर अञ्जनीनन्दन ! मैं आपको फूल, अक्षत और रत्नोंसे युक्त अर्घ्य दे रहा हूँ। आप इसे स्वीकार करें।

अर्घ्यं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

आचमन

महाराक्षसदर्पघ्न सुराधिपसुपूजित।
विमलं शमलघ्न त्वं गृहाणाचमनीयकम् ॥

बड़े-बड़े राक्षसोंका दर्प चूर्ण करनेवाले देवेन्द्रपूजित हनुमानजी ! आप पापका नाश करनेवाले हैं। इस निर्मल आचमनीय जलको ग्रहण करें।

आचमनं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

पञ्चामृतस्नान

मध्वाज्यक्षीरदधिभिः सगुडैर्मन्त्रसंयुतैः।
पञ्चामृतैः पृथक् स्नानैः सिञ्चामि त्वां कपीश्वर ॥

कपीश्वर ! मैं मधु, घी, दूध, दही और गुड़—इन पाँच मन्त्रयुक्त अमृतोंद्वारा आपको पृथक्-पृथक् स्नान कराता हूँ।

पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

शुद्धोदकस्नान

सुवर्णकलशानीतैर्गङ्गादिसरिदुद्भवैः।
शुद्धोदकैः कपीश त्वामभिषिञ्चामि मारुते ॥

कपिराज वायुनन्दन ! सोनेके कलशमें लाये हुए गङ्गा आदि नदियोंके शुद्ध जलसे मैं आपका अभिषेक करता हूँ।

शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

मौञ्जीमेखला

ग्रथितां नवभी रत्नैर्मेखलां त्रिगुणीकृताम्।
मौञ्जीं मुञ्जमयीं पीतां गृहाण पवनात्मज ॥

पवनकुमार ! यह मूँजकी बनी हुई त्रिगुणित एवं पीतवर्णकी मौञ्जी-मेखला, जिसमें नवरत्न गुँथे हुए हैं, आपको अर्पित है, इसे ग्रहण कीजिये।

मौञ्जीमेखलां समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

कटिसूत्र एवं कौपीन

कटिसूत्रं गृहाणेदं कौपीनं ब्रह्मचारिणः।
कौशेयं कपिशार्दूल हरिद्राक्तं सुमङ्गलम् ॥

कपिसिंह ! ब्रह्मचारीके लिये उपयोगी यह कटिसूत्र तथा रेशमी कौपीन, जो हल्दीमें रँगा हुआ है, ग्रहण कीजिये, यह परम मङ्गलमय है।

कटिसूत्रम् एवं कौपीनं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

उत्तरीय

पीताम्बरं सुवर्णाभमुत्तरीयार्थमेव च।
दास्यामि जानकीप्राणत्राणकारण गृह्यताम् ॥

जानकीके प्राणोंकी रक्षा करनेवाले श्रीहनुमानजी ! मैं उत्तरीयके लिये आपको यह सुनहरा पीताम्बर दे रहा हूँ। आप इसे स्वीकार कीजिये।

उत्तरीयं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

यज्ञोपवीत

श्रौतस्मार्त्तादिकर्तॄणां साङ्गोपाङ्गफलप्रदम्।
यज्ञोपवीतमनघं धारयानिलनन्दन ॥

वायुनन्दन ! जो श्रौत-स्मार्त्त आदि कर्म करनेवालोंके लिये साङ्गोपाङ्ग फल देनेवाला तथा पाप-दोषसे रहित है, उस यज्ञोपवीतको धारण कीजिये।

यज्ञोपवीतं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

गन्ध

दिव्यकर्पूरसंयुक्तं मृगनाभिसमन्वितम्।
सकुङ्कुमं पीतगन्धं ललाटे धारय प्रभो ॥

प्रभो ! जो दिव्यकर्पूरसे युक्त, कस्तूरीमिश्रित तथा कुङ्कुमविशिष्ट है, उस पीले रंगके गन्ध अथवा चन्दनको आप अपने ललाटमें धारण कीजिये।

गन्धं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अक्षत

हरिद्राक्तानक्षतांस्त्वं कुङ्कुमद्रव्यमिश्रितान् ।
धारय श्रीगन्धमध्ये शुभशोभनवृद्धये ॥

प्रभो ! हल्दीसे रँगे हुए कुङ्कुममिश्रित इन अक्षतोंको गन्ध या चन्दनके बीचमें सुन्दर शोभाकी वृद्धिके लिये धारण कीजिये ।

अक्षतान् समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

पुष्प

नीलोत्पलैः कोकनदैः कह्लारैः कमलैरपि ।
कुमुदैः पुण्डरीकैस्त्वां पूजयामि कपीश्वर ॥
मल्लिकाजातिपुष्पैश्च पाटलैः कुटजैरपि ।
केतकीबकुलैश्चूतैः पुन्नागैर्नागकेसरैः ॥
चम्पकैः शतपत्रैश्च करवीरैर्मनोहरैः ।
पूजये त्वां कपिश्रेष्ठ सबिल्वैस्तुलसीदलैः ॥

कपीश्वर ! कपिश्रेष्ठ ! मैं नील उत्पल, कोकनद, कह्लार, कमल, कुमुद और पुण्डरीक पुष्पोंसे आपकी पूजा करता हूँ । मल्लिका, जाती, पाटल, कुटज, केतकी, बकुल, आम्र, पुन्नाग, नागकेसर, चम्पा, शतदल और करवीर आदि मनोहर पुष्पोंसे तथा बिल्वपत्र और तुलसीदलोंसे आपकी अर्चना करता हूँ ।

पुष्पाणि समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

ग्रन्थिपूजा

अञ्जनीसूनवे नमः, प्रथमग्रन्थिं पूजयामि । हनुमते नमः, द्वितीयग्रन्थिं पूजयामि । वायुपुत्राय नमः, तृतीयग्रन्थिं पूजयामि । महाबलाय नमः, चतुर्थग्रन्थिं पूजयामि । रामेष्टाय नमः, पञ्चमग्रन्थिं पूजयामि । फाल्गुनसखाय नमः, षष्ठग्रन्थिं पूजयामि । पिङ्गाक्षाय नमः, सप्तमग्रन्थिं पूजयामि । अमितविक्रमाय नमः, अष्टमग्रन्थिं पूजयामि । कपीश्वराय नमः, नवमग्रन्थिं पूजयामि । सीताशोकविनाशनाय नमः, दशमग्रन्थिं पूजयामि । लक्ष्मणप्राणदात्रे नमः, एकादशग्रन्थिं पूजयामि । दशग्रीवदर्पघ्नाय नमः, द्वादशग्रन्थिं पूजयामि । भविष्यद्ब्रह्मणे नमः, त्रयोदशग्रन्थिं पूजयामि ।

अङ्गपूजा

हनुमते नमः, पादौ पूजयामि । सुग्रीवसखाय नमः, गुल्फौ पूजयामि । अङ्गदमित्राय नमः, जङ्घे पूजयामि । रामदासाय नमः, ऊरू पूजयामि । अक्षघ्नाय नमः, कटिं पूजयामि । लङ्कादहनाय नमः, बालं पूजयामि । राममणिदाय नमः, नाभिं पूजयामि । सागरोल्लङ्घनाय नमः, मध्यं पूजयामि । लङ्कामर्दनाय नमः, केशावलिं पूजयामि । संजीवनीहर्त्रे नमः, स्तनौ पूजयामि । सौमित्रिप्राणदाय नमः, वक्षः पूजयामि । कुण्ठितदशकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि । रामाभिषेककारिणे नमः, हस्तौ पूजयामि । मन्त्ररचितरामायणाय नमः, वक्त्रं पूजयामि । प्रसन्नवदनाय नमः, वदनं पूजयामि । पिङ्गनेत्राय नमः, नेत्रे पूजयामि । श्रुतिपारगाय नमः, श्रुतिं पूजयामि । ऊर्ध्वपुण्ड्रधारिणे नमः, कपोलं पूजयामि । मणिकण्ठमालिने नमः, शिरः पूजयामि । सर्वाभीष्टप्रदाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि ।

धूप

दिव्यं सगुग्गुलं साज्यं सदशाङ्गं सवह्निकम् ।
गृहाण मारुते धूपं सुप्रियं घ्राणतर्पणम् ॥

वायुनन्दन ! घ्राणेन्द्रियको तृप्त करनेवाले इस अत्यन्त प्रिय धूपको आप ग्रहण करें । इसमें गुग्गुल, घी और दशाङ्गधूप मिलाया गया है । अग्निके साथ संयोग होनेसे यह दिव्य गन्ध प्रदान करता है ।

धूपं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

दीप

घृतपूरितमुज्ज्वालं सितसूर्यसमप्रभम् ।
अतुलं तव दास्यामि व्रतपूर्त्यै सुदीपकम् ॥

यह सुन्दर दीप है, जो घृतसे पूरित है । इसकी लौ ऊपरकी ओर उठ रही है । यह श्वेत सूर्यके समान प्रकाश फैला रहा है । इसकी कहीं तुलना नहीं है । इसे मैं व्रतकी पूर्तिके लिये आपको दे रहा हूँ ।

दीपं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

नैवेद्य

सशाकापूपसूपाद्यपायसानि च यत्नतः ।
सक्षीरदधि साज्यं च सपूपं घृतपाचितम् ॥

प्रभो ! यह नैवेद्य घीमें पकाकर तैयार किया गया है । इसके साथ खीर, दही, घी और अपूप भी है । इतना ही नहीं, मैंने यत्नपूर्वक साग, पूआ, दाल और पायस भी इनके साथ प्रस्तुत किये हैं । आप यह सब स्वीकार करें ।

नैवेद्यं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

पानीय

गोदावरीजलं शुद्धं स्वर्णपात्राहृतं प्रियम् ।
पानीयं पावनोद्भूतं स्वीकुरु त्वं दयानिधे ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दयानिधे ! यह गोदावरीका शुद्ध जल है, जिसे सोनेके पात्रमें लाया गया है। यह प्रिय पानीय पावन तीर्थमें प्रकट हुआ है। आप इसे स्वीकार करें।

पानीयं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

उत्तरापोशन

आपोशनं नमस्तेऽस्तु पापराशितृणानलम्।
कृष्णावेणीजलेनैव कुरुष्व पवनात्मज ॥

पवनपुत्र ! आपको नमस्कार है। यह उत्तरापोशन[1] जल आपको अर्पित है। यह पापराशिरूपी तृणको भस्म करनेके लिये अग्निके समान है। आप कृष्णावेणी नदीके जलसे उत्तरापोशन कीजिये।

उत्तरापोशनं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

हस्तप्रक्षालन

दिवाकरसुतानीतजलेन स्पृश गन्धिना।
हस्तप्रक्षालनार्थाय स्वीकुरुष्व दयानिधे ॥

दयानिधे ! यमुनाके द्वारा लाये हुए सुगन्धित जलका स्पर्श कीजिये। यह हाथ धोनेके लिये अर्पित किया गया है, कृपया इसे स्वीकार कीजिये।

हस्तौ प्रक्षालयितुं जलं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

शुद्धाचमनीय

रघुवीरपदन्यासस्थिरमानसमारुते।
कावेरीजलपूर्णेन स्वीकुर्वाचमनीयकम् ॥

रघुवीरके चरणन्यासमें मनको स्थिर रखनेवाले पवन-नन्दन ! आप कावेरीके जलसे भरे हुए इस पात्रके द्वारा आचमनीय स्वीकार कीजिये।

शुद्धाचमनीयं जलं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः।

सुवर्णपुष्प

वायुपुत्र नमस्तुभ्यं पुष्पं सौवर्णकं प्रियम्।
पूजयिष्यामि ते मूर्ध्नि नवरत्नसमुज्ज्वलम् ॥

वायुनन्दन ! आपको नमस्कार है। आपके मस्तकपर नौ प्रकारके रत्नोंसे जगमगाते हुए इस प्रिय सुवर्ण-पुष्प या चम्पाके फूलको चढ़ाकर मैं पूजा करूँगा।

सुवर्णपुष्पं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

ताम्बूल

ताम्बूलमनघ स्वामिन् प्रयत्नेन प्रकल्पितम्।
अवलोकय नित्यं ते पुरतो रचितं मया ॥

निष्पाप स्वामिन् ! मैंने यत्नपूर्वक यह ताम्बूल तैयार किया है। आपके सामने ही इसका बीड़ा बनाया है। आप सदा इसपर दृष्टिपात कीजिये।

ताम्बूलं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

नीराजन

शतकोटिमहारत्नदिव्यसद्रत्नपात्रके।
नीराजनमिदं दृष्टेरतिथीकुरु मारुते ॥

वायुनन्दन ! शतकोटि महारत्नोंसे युक्त इस दिव्यरत्न-पात्रमें आपके लिये नीराजन (आरती) अर्पित है। आप इसपर दृष्टिपात कीजिये।

नीराजनं सम्पादयामि श्रीहनुमते नमः ॥

पुष्पाञ्जलि

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥
(शुक्लयजुर्वेदसंहिता ७। २। ४)

पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

प्रदक्षिणा

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।
त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष सर्वपापहरो भव ॥

प्रदक्षिणां समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

नमस्कार

नमस्तेऽस्तु महावीर नमस्ते वायुनन्दन।
विलोक्य कृपया नित्यं त्राहि मां भक्तवत्सल ॥

महावीर ! आपको नमस्कार है। वायुनन्दन ! आपको प्रणाम है। भक्तवत्सल ! कृपापूर्वक मेरी ओर देखकर सदा मेरी रक्षा कीजिये।

नमस्कारं समर्पयामि श्रीहनुमते नमः ॥

दोरक-ग्रहण

ये पुत्रपौत्रादिसमस्तभाग्यं वाञ्छन्ति वायोस्तनयं प्रपूज्य।
त्रयोदशग्रन्थियुतं तदङ्कं बध्नन्ति हस्ते वरदोरसूत्रम् ॥

जो लोग पुत्र-पौत्र आदि समस्त सौभाग्यकी इच्छा करते हैं, वे वायुपुत्र हनुमानजीकी पूजा करके तेरह ग्रन्थियोंसे युक्त श्रेष्ठ डोरेको अपने हाथमें बाँध लेते हैं।

दोरग्रहणं करोमि श्रीहनुमते नमः ॥

१. भोजन करनेसे पूर्व तथा पश्चात् आचमन करनेको 'उत्तरापोशन' कहते हैं। ऐसा न करनेसे भोजन नंगा होता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वदोरकोत्तारण

अञ्जनीगर्भसम्भूत रामकार्यार्थसम्भव ।
वरदोरकृता भासा रक्ष मां प्रतिवत्सरम् ॥

अञ्जनीके गर्भसे उत्पन्न और श्रीरामके कार्यके लिये शरीर धारण करनेवाले हनुमानजी ! श्रेष्ठ दोरक-ग्रहणके तेजसे आप प्रतिवर्ष मेरी रक्षा कीजिये ।

पूर्वदोरकमुत्तारयामि श्रीहनुमते नमः ॥

प्रार्थना

अनेन भगवान् कार्यप्रतिपादकविग्रहः ।
हनुमान् प्रीणितो भूत्वा प्रार्थितो हृदि तिष्ठतु ॥

जिनका श्रीविग्रह सम्पूर्ण कार्योंका साधक है, वे भगवान् हनुमान इस पूजनसे प्रसन्न हो मेरी प्रार्थना सुनकर मेरे हृदयमें निवास करें ।

प्रार्थनां करोमि श्रीहनुमते नमः ॥

वायन-दान

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥

जिनके स्मरण और नाम-कीर्तनसे तप, यज्ञ और क्रिया आदिमें न्यूनताकी पूर्ति हो जाती है, उन अच्युतका मैं तत्काल वन्दन करता हूँ ।

वायनं ददामि श्रीहनुमते नमः ॥

वायन ग्रहण

ददाति प्रतिगृह्णाति हनूमानेव नः स्वयम् ।
व्रतस्यास्य च पूर्त्यर्थं प्रतिगृह्णातु वायनम् ॥

स्वयं हनुमानजी ही हम सबको देते और हमसे ग्रहण करते हैं । वे इस व्रत (हनुमद्व्रत) की पूर्तिके लिये वायन ग्रहण करें ।

वायनं प्रतिग्राहयामि श्रीहनुमते नमः ॥

वीरविंशतिकाख्यं श्रीहनुमत्स्तोत्रम्

लाङ्गूलमृष्टवियदम्बुधिमध्यमार्ग-
मुत्प्लुत्य यान्तममरेन्द्रमुदो निदानम् ।
आस्फालितस्वकभुजस्फुटिताद्रिकाण्डं
द्राङ्मैथिलीनयननन्दनमद्य वन्दे ॥ १ ॥

जो अपनी पूँछसे स्वच्छ किये हुए आकाश तथा समुद्रके मध्यवर्ती मार्गपर उछलकर चलते समय इन्द्रके आनन्दका कारण हो रहे थे और आगेकी ओर फैलायी हुई जिनकी भुजाओंसे पर्वतखण्ड फूटते जाते थे, जानकीजीके नेत्रोंको शीघ्र ही आनन्द देनेवाले उन हनुमानजीकी आज मैं वन्दना करता हूँ ॥ १ ॥

मध्येनिशाचरमहाभयदुर्विषहयं
घोराद्भुतव्रतमियं यददश्चचार ।
पत्ये तदस्य बहुधापरिणामदूतं
सीतापुरस्कृततनुं हनुमन्तमीडे ॥ २ ॥

जानकीजीने पतिके लिये जो निशाचरोंके बीच अत्यन्त भयके कारण दुःसह, घोर एवं अद्भुत व्रत किया था, उसीके विविध फलस्वरूप दूत-वेषमें सीताके सम्मुख अपने शरीरको प्रकट किये हुए हनुमानजीकी मैं स्तुति करता हूँ ॥ २ ॥

यः पादपङ्कजयुगं रघुनाथपत्न्या
नैराश्यरूषितविरक्तमपि स्वरागैः ।
प्रागेव रागि विदधे बहु वन्दमानो
वन्देऽञ्जनाजनुषमेष विशेषतुष्ट्यै ॥ ३ ॥

जिन्होंने श्रीरघुनाथ-पत्नी जानकीजीके दोनों चरणारविन्दोंको, जो निराशारूप धूलिसे धूसरित होनेके कारण रागशून्य हो गये थे, बारंबार प्रणाम करते हुए अपने अनुराग-द्वारा [पति-मिलनके] पहले ही राग-रञ्जित कर दिया, उन अञ्जनीनन्दन महावीरजीकी मैं विशेष संतोषके लिये वन्दना करता हूँ ॥ ३ ॥

ताञ्जानकीविरहवेदनहेतुभूतान्
द्रागाकलय्य सदशोकवनीयवृक्षान् ।
लङ्कालकानिव घनानुदपाटयद् य-
स्तं हेमसुन्दरकपिं प्रणमामि पुष्ट्यै ॥ ४ ॥

सुन्दर अशोकवनके घने वृक्षोंको जानकीजीकी विरह-वेदना [को बढ़ाने] का कारण समझकर जिन्होंने लंका-नगरीकी स्निग्ध अलकावलीके समान उन्हें शीघ्र ही उखाड़ डाला, उन सुवर्णके सदृश सुन्दर शरीरवाले कपिवर हनुमानजीको मैं अपने पालन-पोषणके लिये प्रणाम करता हूँ ॥ ४ ॥

घोषप्रतिध्वनितशैलगुहासहस्र-
सम्भ्रान्तनादितवलन्मृगनाथयूथम् ।
अक्षक्षयक्षणविलक्षितराक्षसेन्द्र-
मिन्द्रं कपीन्द्रपृतनावलयस्य वन्दे ॥ ५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने गम्भीर घोषसे प्रतिध्वनित पर्वतोंकी सहस्रों कन्दराओंमें रहनेवाले सिंहोंके समूहको जिन्होंने सम्भ्रमवश शब्दायमान एवं विचलित कर दिया और अक्षकुमारके विनाशकालमें राक्षसराज रावणको भी आश्चर्यमें डाल दिया, उन कपिराज सुग्रीवकी सेनाके नायक हनुमानजीकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ ५ ॥

हेलाविलङ्घितमहार्णवमप्यमन्दं
घूर्णद्गदाविहतिविक्षतराक्षसेषु ।
स्वम्मोदवारिधिमपारमिवेक्षमाणं
वन्देऽहमक्षयकुमारकमारकेशम् ॥ ६ ॥

लीलासे ही महासागरको लाँघ जानेपर भी जो तीव्र गतिसे घूमती हुई गदाद्वारा राक्षसोंके क्षत-विक्षत होनेपर अपने आनन्द-समुद्रको अपार-सा देख रहे थे, उन अक्षयकुमारके मारकेशरूप महावीरजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

जम्भारिजित्प्रसभलम्भितपाशबन्धं
ब्रह्मानुरोधमिव तत्क्षणमुद्वहन्तम् ।
रौद्रावतारमपि रावणदीर्घदृष्टि-
संकोचकारणमुदारहरिं भजामि ॥ ७ ॥

जिन्होंने इन्द्रजित् (मेघनाद)के हठात् फेंके हुए पाशबन्धनको ब्रह्माजीके अनुरोधकी भाँति तत्काल ग्रहण कर लिया और रुद्रका अवतार होनेपर भी जो रावणकी विशाल दृष्टिके संकोचका कारण बन गये, उन उदार वानर-वीरको मैं भजता हूँ ॥ ७ ॥

दर्पोन्नमन्निशिचरेश्वरमूर्धचक्र-
स्फोटीरचुम्बि निजबिम्बमुदीक्ष्य हृष्टम् ।
पश्यन्तमात्मभुजयन्त्रणपिष्यमाण-
तत्कायशोणितनिपातमपेक्षि वक्षः ॥ ८ ॥

जो अभिमानसे ऊपर उठे हुए रावणके मस्तकोंपर देदीप्यमान किरीटोंमें अपने प्रतिबिम्बको देखकर उसमें अपने भुजयन्त्रद्वारा पीसे जानेवाले रावणके शरीरके रक्तपातकी अपेक्षा रखनेवाली अपनी छातीकी ओर निहारते हुए प्रसन्न हो रहे थे (उन्हें मैं प्रणाम करता हूँ) ॥ ८)

अक्षप्रभृत्यमरविक्रमवीरनाश-
क्रोधादिव द्रुतमुदञ्चितचन्द्रहासाम् ॥
निद्रापिताभ्रघनगर्जनघोरघोषैः
संस्तम्भयन्तमभिनौमि दशास्यमूर्तिम् ॥ ९ ॥

देवताओंके समान पराक्रम रखनेवाले अक्षकुमार आदि वीरोंके नाशजनित क्रोधसे ही मानो जिसने शीघ्र ही बदला लेनेके लिये चन्द्रहास नामक तलवार उठा ली है, उस दशशीश (रावण)के शरीरका गम्भीर मेघ-गर्जनाको भी मूक बनानेवाले अपने भयंकर सिंहनादसे स्तम्भन करते हुए हनुमानजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

आशंस्यमानविजयं रघुनाथधाम
शंसन्तमात्मकृतभूरिपराक्रमेण ।
दौत्ये समागमसमन्वयमादिशन्तं
वन्दे हरेः क्षितिभृतः पृतनाप्रधानम् ॥ १० ॥

जो अपने किये हुए प्रचुर पराक्रमोंद्वारा विजयकी आशंसासे युक्त श्रीरामचन्द्रजीके तेजका वर्णन कर रहे हैं और दूतधर्ममें प्राप्त होनेके समन्वयका (अथवा समस्त शास्त्रोंके अन्वयका) उपदेश करते हैं, उन राजा सुग्रीवकी सेनाके प्रधान (सेनापति) वीरकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ १० ॥

यस्यौचितीं समुपदिष्टवतोऽधिपुच्छं
दम्भान्धितां धियमपेक्ष्य विवर्धमानः ।
नक्तंचराधिपतिरोषहिरण्यरेता
लङ्कां दिधक्षुरपतत्तमहं वृणोमि ॥ ११ ॥

उचित उपदेश दे चुकनेपर, जिनकी पूँछमें निशाचरराज रावणका कोपानल ही उसकी दम्भसे अंधी हुई बुद्धिके सहारे बढ़कर, लंकाको जलानेकी इच्छासे वहाँ कूद पड़ा था, उन्हीं हनुमानजीका मैं वरण करता हूँ ॥ ११ ॥

क्रन्दन्निशाचरकुलां ज्वलनावलीढैः
साक्षाद्गृहैरिव बहिः परिदेवमानाम् ।
स्तब्धस्वपुच्छतटलग्नकृपीटयोनि-
दन्दह्यमाननगरीं परिगाहमानाम् ॥ १२ ॥

उनकी तनी हुई पूँछके किनारे अग्नि लगी थी, उससे समस्त लंका नगरी अत्यन्त वेगसे जल रही थी, बाहर निशाचरकुलका करुणक्रन्दन मचा हुआ था, उस समय ऐसा जान पड़ता था, मानो अग्निज्वालासे झुलसे हुए घर ही बाहर निकल रहे हों, ऐसी लंकामें चारों ओर दौड़ते हुए हनुमानजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १२ ॥

मूर्तैर्गृहासुभिरिव द्युपुरं व्रजद्भि-
र्व्योम्नि क्षणं परिगतं पतगैर्ज्वलद्भिः ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीताम्बरं दधतमुच्छ्रितदीप्ति पुच्छं
सेनां वहद्विहगराजमिवाहमीडे ॥ १३ ॥

प्रासादशिखरपर रहनेवाले तोता और कबूतर आदि पक्षी जलते हुए जब आकाशमें उड़ते थे, तब ऐसा मालूम होता था मानो उन दग्ध होनेवाले गृहोंके प्राण ही मूर्तिमान् होकर स्वर्गमें जा रहे हैं, उन पक्षियोंसे क्षणभर घिरकर ऊपर उठी हुई ज्वालाओंवाली पूँछ धारण किये, जिनकी शोभा पीताम्बरधारी भगवान् विष्णुको पीठपर चढ़ाकर अपना समूह साथ लिये विचरनेवाले पक्षिराज गरुड़की-सी हो रही थी, उन हनुमानजीकी मैं स्तुति करता हूँ ॥ १३ ॥

स्तम्भीभवत्स्वगुरुवालधिलग्नवह्नि-
ज्वालोल्ललद्ध्वजपटामिव देवतुष्ट्यै ।
वन्दे ययोपरि पुरो दिवि दर्शयन्त-
मद्यैव रामविजयाजिकवैजयन्तीम् ॥ १४ ॥

लंका नगरके ऊपर अपनी विशाल पूँछरूपी खम्भेमें लगी हुई अग्निकी ज्वाला ही जिसमें पताकाके समान है, ऐसी श्रीरामचन्द्रजीकी रणविजय-वैजयन्तीको देवताओंकी प्रसन्नताके लिये मानो आज ही आकाशमें दिखलाते हुए महावीरजीकी मैं वन्दना करता हूँ ॥ १४ ॥

रक्षश्चयैकचितकक्षकपुङ्खितौ यः
सीताशुचो निजविलोकनतो मृतायाः ।
दाहं न्यधादिव तदन्त्यविधेयभूतं
लाङ्गूलदत्तदहनेन मुदे स नोऽस्तु ॥ १५ ॥

जिन्होंने सीताजीकी पीड़ाको, जो उनके दर्शनमात्रसे मर चुकी थी, एकमात्र राक्षससमूहरूप काठ-कबाड़ोंसे बनी हुई लंकारूपिणी चितापर सुलाकर अपनी पूँछकी लगायी हुई अग्निसे उसका मरणान्त-कालोचित दाह-संस्कार किया, वे हनुमानजी हमारी प्रसन्नताके कारण हों ॥ १५ ॥

आशुद्धये रघुपतिप्रणयैकसाक्ष्ये
वैदेहराजदुहितुः सरिदीश्वराय ।
न्यासं ददानमिव पावकमापतन्त-
मब्धौ प्रभञ्जनतनूजनुषं भजामि ॥ १६ ॥

विदेहनन्दिनी सीताकी शुद्धिके लिये श्रीरामचन्द्रजी-के प्रति प्रेमके एकमात्र साक्षीपदपर स्थित पावकको मानो समुद्रके यहाँ धरोहर रखनेके निमित्त उसमें कूद पड़ने-वाले वायुनन्दनको मैं भजता हूँ ॥ १६ ॥

रक्षस्स्वतृप्तिरुडशान्तिविशेषशोण-
मक्षक्षयक्षणविधानुमितात्मदाक्ष्यम् ।
भास्वत्प्रभातरविभानुभरावभासं
लङ्काभयंकरममुं भगवन्तमीडे ॥१७॥

राक्षसों [के साथ संग्राम]में तृप्त न होनेके कारण क्रोध एवं अशान्तिसे जो विशेष रक्तवर्ण हो गये हैं, अक्ष-कुमारके संहारकालके कार्योंसे जिनकी दक्षताका अनुमान किया जा चुका है तथा जो प्रभातसमयके प्रभामय सूर्यकी किरणोंके समान कान्तिमान् हैं, लंकाको भय देनेवाले उन भगवान् हनुमानकी मैं स्तुति करता हूँ ॥ १७ ॥

तीर्त्वोदधिं जनकजार्पितमाप्य चूडा-
रत्नं रिपोरपि पुरं परमस्य दग्ध्वा ।
श्रीरामहर्षगलदश्रुभिषिच्यमानं
तं ब्रह्मचारिवरवानरमाश्रयेऽहम् ॥१८॥

समुद्रको लाँघकर, सीताके दिये हुए चूडारत्नको पाकर और शत्रुके महान् नगरको भी जलाकर, श्रीरामचन्द्रजीके आनन्दाश्रुसे सींचे जानेवाले, ब्रह्मचारिश्रेष्ठ वानरवीरकी मैं शरण लेता हूँ ॥ १८ ॥

यः प्राणवायुजनितो गिरिशस्य शान्तः
शिष्योऽपि गौतमगुरुर्मुनिशंकरात्मा ।
हृद्यो हरस्य हरिवद्धरितां गतोऽपि
धीधैर्यशास्त्रविभवेऽतुलमाश्रये तम् ॥१९॥

जो पूर्वजन्ममें गौतम ऋषिके शंकरात्मा नामक शान्त शिष्य होनेपर भी उनके गुरुके समान श्रद्धापात्र थे, शंकर-जीके प्राणवायुसे जिनका प्रादुर्भाव हुआ है, जो हरि (वानर)भावको प्राप्त होकर भी हरि (विष्णु)की भाँति शंकरजीके हार्दिक प्रेमी हैं तथा बुद्धि, धैर्य और शास्त्रके वैभवमें जिनकी कहीं समता नहीं है, उन हनुमानजीकी मैं शरण लेता हूँ ॥ १९ ॥

स्कन्धेऽधिवाह्य जगदुत्तरगीतिरीत्या
यः पार्वतीश्वरमतोषयदाशुतोषम् ।
तस्मादवाप च वरानपरानवाप्यां-
स्तं वानरं परमवैष्णवमीशमीडे ॥२०॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिन्होंने आशुतोष उमानाथको कंधेपर चढ़ाकर अपनी लोकोत्तर गानशैलीसे उन्हें प्रसन्न किया और उनसे पाने योग्य उत्तम वरोंको भी प्राप्त कर लिया, मैं उन परम वैष्णव भगवान् वानरवीरकी स्तुति करता हूँ ॥ २० ॥

उमापतेः कविपतेः स्तुतिर्बाल्यविजृम्भिता ।
हनूमतस्तुष्टयेऽस्तु वीरविंशतिकाभिधा ॥

कविपति श्रीउमापतिजीकी बालकालमें रचित यह वीरविंशतिका नामकी स्तुति हनुमानजीकी प्रसन्नताके लिये हो ।

इति श्रीकविपत्युपनामकोमापतिशर्मद्विवेदिविरचितं वीरविंशतिकाख्यं श्रीहनुमत्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(नारदपुराणोक्त) श्रीमारुतिकवच*

सनत्कुमार उवाच

कार्तवीर्यस्य कवचं कथितं ते मुनीश्वर ।
मोहविध्वंसनं जैत्रं मारुतेः कवचं शृणु ॥ १ ॥

सनत्कुमारजीने कहा—मुनीश्वर ! मैंने तुमसे कार्तवीर्य-कवचका वर्णन किया । अब मोहनाशक और विजयप्रद मारुति-कवचका वर्णन सुनो ॥ १ ॥

यस्य संधारणात् सद्यः सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः ।
भूतप्रेतारिजं दुःखं नाशमेति न संशयः ॥ २ ॥

जिसके धारण करनेसे सभी उपद्रव तत्काल नष्ट हो जाते हैं तथा भूत, प्रेत एवं शत्रुसे उत्पन्न दुःखका भी नाश हो जाता है, इसमें संशय नहीं है ॥ २ ॥

एकदाहं गतो द्रष्टुं रामं रमयतां वरम् ।
आनन्दवनिकासंस्थं ध्यायन्तं स्वात्मनः पदम् ॥ ३ ॥

एक समयकी बात है, मैं मनको रमानेवालोंमें श्रेष्ठ भगवान् श्रीरामका दर्शन करनेके लिये अयोध्या गया हुआ था । वे आनन्दवनमें बैठकर अपने ही स्वरूपका ध्यान कर रहे थे ॥ ३ ॥

तत्र रामं रमानाथं पूजितं त्रिदशेश्वरैः ।
नमस्कृत्य तदादिष्टमासनं स्थितवान् पुरः ॥ ४ ॥

वहाँ पहुँचकर देवेश्वरोंसे पूजित रमानाथ श्रीरामको नमस्कार करके उन्हींके आदेशसे उनके सामने ही एक आसनपर बैठ गया ॥ ४ ॥

तत्र सर्वं मया वृत्तं रावणस्य वधान्तकम् ।
पृष्टं प्रोवाच राजेन्द्रः श्रीरामः स्वयमादरात् ॥ ५ ॥

उस जगह मैंने उनसे आरम्भसे लेकर रावण-वधतकका सारा वृत्तान्त पूछा । तब राजाधिराज श्रीरामने बड़े आदरके साथ स्वयं वह सारी कथा कह सुनायी ॥ ५ ॥

ततः कथान्ते भगवान् मारुतेः कवचं ददौ ।
मह्यं तत्ते प्रवक्ष्यामि न प्रकाश्यं हि कुत्रचित् ॥ ६ ॥

तत्पश्चात् कथाके अन्तमें भगवान्‌ने मुझे मारुति-कवच प्रदान किया, जिसका मैं तुम्हारे समक्ष वर्णन करूँगा । तुम इसे कहीं भी प्रकट न करना ॥ ६ ॥

भविष्यदेतन्निर्दिष्टं बालभावेन नारद ।
श्रीरामेणाञ्जनासूनोर्भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ ७ ॥

नारद ! श्रीरामने बालभावसे भविष्यमें होनेवाला यह सब वृत्तान्त बताया और अञ्जनीनन्दन हनुमानका कवच भी कह सुनाया, जो भोग और मोक्ष देनेवाला है ॥ ७ ॥

कवच

हनुमान् पूर्वतः पातु दक्षिणे पवनात्मजः ।
पातु प्रतीच्यामक्षघ्नः सौम्ये सागरतारकः ॥ ८ ॥

पूर्व दिशामें हनुमान रक्षा करें, दक्षिण दिशामें पवन-पुत्र रक्षा करें । पश्चिम दिशामें रावणपुत्र अक्षकुमारके विनाशक रक्षा करें तथा उत्तर दिशामें सागरतारक (समुद्रको तैर जानेवाले) रक्षा करें ॥ ८ ॥

ऊर्ध्वं पातु कपिश्रेष्ठः केसरिप्रियनन्दनः ।
अधस्ताद्विष्णुभक्तस्तु पातु मध्ये च पावनिः ॥ ९ ॥

ऊर्ध्व दिशामें केसरीके प्रिय पुत्र कपिश्रेष्ठ रक्षा करें । अधोभागमें विष्णुभक्त रक्षा करें तथा दिशाओंके मध्यभागमें पावनि (पवन-पुत्र) रक्षा करें ॥ ९ ॥

लङ्काविदाहकः पातु सर्वापद्भ्यो निरन्तरम् ।
सुग्रीवसचिवः पातु मस्तकं वायुनन्दनः ॥ १० ॥
भालं पातु महावीरो भ्रुवोर्मध्ये निरन्तरम् ।
नेत्रे छायापहारी च पातु नः प्लवगेश्वरः ॥ ११ ॥

लंका जलानेवाले हनुमानजी सम्पूर्ण विपत्तियोंसे निरन्तर हमारा संरक्षण करें । सुग्रीवके मन्त्री मस्तककी रक्षा करें । वायुनन्दन हनुमान भालदेशकी रक्षा करें । महावीर

* इस कवचके प्रारम्भिक कई श्लोक आनन्दरामायणोक्त हनुमत्कवचसे मिलते-जुलते हैं और शेष सर्वथा भिन्न हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों भौंहोंके मध्यभागमें निरन्तर रक्षा करें। छायाग्राहिणी राक्षसीका अपहरण करनेवाले तथा वानरोंके स्वामी हनुमानजी हमारे दोनों नेत्रोंकी रक्षा करें ॥ १०-११ ॥

कपोलौ कर्णमूले च पातु श्रीरामकिङ्करः।
नासाग्रमञ्जनासूनुः पातु वक्त्रं हरीश्वरः ॥ १२ ॥

श्रीरामके सेवक दोनों कपोलों तथा कानोंके मूलभागोंकी रक्षा करें, अञ्जनाके पुत्र नासिकाके अग्रभागकी तथा बंदरोंके स्वामी मुखकी रक्षा करें ॥ १२ ॥

पातु कण्ठं तु दैत्यारिः स्कन्धौ पातु सुरारिजित्।
भुजौ पातु महातेजाः करौ च चरणायुधः ॥ १३ ॥

दैत्योंके शत्रु कण्ठकी रक्षा करें, देवशत्रुओंको जीतनेवाले दोनों कंधोंकी रक्षा करें। महातेजस्वी दोनों भुजाओं और चरणरूपी शस्त्रवाले दोनों हाथोंकी रक्षा करें ॥ १३ ॥

नखान् नखायुधः पातु कुक्षौ पातु कपीश्वरः।
वक्षो मुद्रापहारी च पातु पार्श्वे भुजायुधः ॥ १४ ॥

नखरूपी शस्त्रवाले नखोंकी रक्षा करें, कपियोंके स्वामी कुक्षिभागकी रक्षा करें। अँगूठी ले जानेवाले वक्षःस्थलकी तथा भुजारूपी आयुधवाले दोनों पार्श्वभागोंकी रक्षा करें ॥ १४ ॥

लङ्कानिभर्जनः पातु पृष्ठदेशे निरन्तरम्।
नाभिं श्रीरामभक्तस्तु कटिं पात्वनिलात्मजः ॥ १५ ॥

लंकाको भून देनेवाले पृष्ठ (पीठ) भागकी निरन्तर रक्षा करें। श्रीरामभक्त नाभिकी और अनिल (पवन) पुत्र कमरकी रक्षा करें ॥ १५ ॥

गुह्यं पातु महाप्राज्ञः सक्थिनी अतिथिप्रियः।
ऊरू च जानुनी पातु लङ्काप्रासादभञ्जनः ॥ १६ ॥

महाप्राज्ञ गुह्यभागकी तथा अतिथिप्रिय जाँघोंकी रक्षा करें। लंकाके महलोंको नष्ट करनेवाले दोनों ऊरुओं तथा घुटनोंकी रक्षा करें ॥ १६ ॥

जङ्घे पातु कपिश्रेष्ठो गुल्फौ पातु महाबलः।
अचलोद्धारकः पातु पादौ भास्करसंनिभः ॥ १७ ॥

कपिश्रेष्ठ दोनों पिण्डलियोंकी रक्षा करें। महाबलवान् दोनों गुल्फों (टखनों) की रक्षा करें। पर्वतको उठानेवाले एवं सूर्यके समान तेजस्वी हनुमानजी दोनों चरणोंकी रक्षा करें ॥ १७ ॥

अङ्गानि पातु सत्त्वाढ्यः पातु पादाङ्गुलीः सदा।
मुखाङ्गानि महाशूरः पातु रोमाणि चात्मवान् ॥ १८ ॥

अत्यन्त बलशाली हनुमानजी अङ्गों तथा पैरकी अङ्गुलियोंकी सदा रक्षा करें। महाशूर मुख आदि अङ्गोंकी तथा मनको वशमें रखनेवाले रोमावलियोंकी रक्षा करें ॥ १८ ॥

दिवारात्रौ त्रिलोकेषु सदागतिसुतोऽवतु।
स्थितं व्रजन्तमासीनं पिबन्तं जक्षतं कपिः ॥ १९ ॥

वायु-पुत्र कपिश्रेष्ठ हनुमानजी दिन-रात तीनों लोकोंमें खड़े, चलते, बैठे, पीते और खाते समय मेरी रक्षा करें ॥ १९ ॥

लोकोत्तरगुणः श्रीमान् पातु त्र्यम्बकसम्भवः।
प्रमत्तमप्रमत्तं वा शयानं गहनेऽम्बुनि ॥ २० ॥

मैं सावधान होऊँ या असावधान, अथवा गहरे जलमें ही क्यों न सोया होऊँ, सब जगह लोकोत्तर गुणशाली शिव-पुत्र श्रीमान् हनुमान मेरी रक्षा करें ॥ २० ॥

स्थलेऽन्तरिक्षे ह्यग्नौ वा पर्वते सागरे द्रुमे।
संग्रामे संकटे घोरे विराड्रूपधरोऽवतु ॥ २१ ॥

स्थलमें, आकाशमें, अग्निमें, पर्वतपर, समुद्रमें, वृक्षपर, युद्धमें अथवा घोर संकटके समय विराट्‌रूपधारी हनुमानजी मेरी रक्षा करें ॥ २१ ॥

डाकिनीशाकिनीमारीकालरात्रिमरीचिकाः।
शयानं मां विभुः पातु पिशाचोरगराक्षसीः ॥ २२ ॥

सोते समय मेरे प्रभु हनुमानजी डाकिनी, शाकिनी, मारी, कालरात्रि, मरीचिका, पिशाच, नाग तथा राक्षसियोंको भगाकर मेरी रक्षा करें ॥ २२ ॥

दिव्यदेहधरो धीमान् सर्वसत्त्वभयंकरः।
साधकेन्द्रावनः शश्वत्पातु सर्वत एव माम् ॥ २३ ॥

सम्पूर्ण प्राणियोंके लिये भयंकर तथा श्रेष्ठ साधकोंके रक्षक दिव्यदेहधारी बुद्धिमान् हनुमानजी सदा सब ओरसे मेरी रक्षा करें ॥ २३ ॥

यद्रूपं भीषणं दृष्ट्वा पलायन्ते भयानकाः।
स सर्वरूपः सर्वज्ञः सृष्टिस्थितिकरोऽवतु ॥ २४ ॥

जिनके भीषण रूपको देखकर भयानक जन्तु भी भाग खड़े होते हैं, वे सृष्टि, पालन (और संहार) करनेवाले सर्व-स्वरूप एवं सर्वज्ञ हनुमान मेरी रक्षा करें ॥ २४ ॥

स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः साक्षाद्देवो महेश्वरः।
सूर्यमण्डलगः श्रीदः पातु कालत्रयेऽपि माम् ॥ २५ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो स्वयं ब्रह्मा, स्वयं विष्णु और स्वयं साक्षात् महेश्वर देव हैं, वे सूर्यमण्डलतक पहुँचनेवाले लक्ष्मीदाता हनुमान तीनों कालोंमें मेरी रक्षा करें ॥ २५ ॥

यस्य शब्दमुपाकर्ण्य दैत्यदानवराक्षसाः ।
देवा मनुष्यास्तिर्यञ्चः स्थावरा जङ्गमास्तथा ॥ २६ ॥
सभया भयनिर्मुक्ता भवन्ति स्वकृतानुगाः ।
यस्यानेककथाः पुण्याः श्रूयन्ते प्रतिकल्पके ॥ २७ ॥
सोऽवतात् साधकश्रेष्ठं सदा रामपरायणः ।

जिनके शब्दको सुनकर दैत्य, दानव तथा राक्षस भयभीत हो जाते हैं और देवता, मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि स्थावर-जङ्गम प्राणी भयसे छूटकर अपने-अपने कर्मोंमें लग जाते हैं तथा प्रत्येक कल्पमें जिनकी अनेक पुण्य-कथाएँ सुनी जाती हैं, वे श्रीरामभक्त हनुमान श्रेष्ठ साधककी सदा रक्षा करें ॥ २६-२७½ ॥

वैधात्रधातृप्रभृति यत्किंचिद्दृश्यतेऽत्यलम् ॥ २८ ॥
विद्धि व्याप्तं यथा कीशरूपेणानञ्जनेन तत् ।

नारद ! ब्रह्मा और ब्रह्माकी सृष्टि आदि जो कुछ भी सम्पूर्ण जगत् दृष्टिगोचर होता है, उस सबको निरञ्जन (निर्मल) वानर हनुमानरूपसे व्याप्त समझो ॥ २८½ ॥

यो विभुः सोऽहमेषोऽहं स्वीयः स्वयमणुर्बृहत् ॥ २९ ॥
ऋग्यजुःसामरूपश्च प्रणवस्त्रिवृदध्वरः ।
तस्मै स्वस्मै च सर्वस्मै नतोऽस्म्यात्मसमाधिना ॥ ३० ॥

जो सर्वव्यापी परमात्मा हैं, वह मैं हूँ । यह मैं, मेरा अपना, मैं स्वयं, अणु, महान्, ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद सब हनुमानजीके ही रूप हैं । प्रणव तथा त्रिवृत् यज्ञ भी वे ही हैं । वे 'स्व'रूप तथा 'सर्व'रूप हैं । मैं अपने चित्तको एकाग्र करके उनको नमस्कार करता हूँ ॥ २९-३० ॥

अनेकानन्तब्रह्माण्डधृते ब्रह्मस्वरूपिणे ।
समीरणात्मने तस्मै नतोऽस्म्यात्मस्वरूपिणे ॥ ३१ ॥

जो अनेकानेक अनन्त ब्रह्माण्डको धारण करते हैं तथा जो ब्रह्मस्वरूप, वायुरूप और आत्मस्वरूप हैं, उन हनुमानजीको मैं नमन करता हूँ ॥ ३१ ॥

नमो हनुमते तस्मै नमो मारुतसूनवे ।
नमः श्रीरामभक्ताय श्यामाय महते नमः ॥ ३२ ॥

उन हनुमानजीको नमस्कार है, वायुपुत्रको नमस्कार है, श्रीरामभक्तको नमस्कार है तथा महान् श्यामस्वरूपको नमस्कार है ॥ ३२ ॥

नमो वानरवीराय सुग्रीवसख्यकारिणे ।
लङ्काविदहनायाथ महासागरतारिणे ॥ ३३ ॥

जो सुग्रीवकी श्रीरामके साथ मैत्री करानेवाले, लंकापुरीको दग्ध करनेवाले तथा महासागरको लाँघ जानेवाले हैं, उन वानरवीरको नमस्कार है ॥ ३३ ॥

सीताशोकविनाशाय राममुद्राधराय च ।
रावणान्तनिदानाय नमः सर्वोत्तरात्मने ॥ ३४ ॥

जो सीताजीके शोकका विनाश करनेवाले, श्रीरामकी दी हुई मुद्रिकाको धारण करनेवाले तथा रावणके विनाशके आदि-कारण हैं, उन सर्वोत्तरात्मा (लोकोत्तर वीर) हनुमानजीको नमस्कार है ॥ ३४ ॥

मेघनादमखध्वंसकारणाय नमो नमः ।
अशोकवनविध्वंसकारिणे, जयदायिने ॥ ३५ ॥

मेघनादके यज्ञका विध्वंस करनेवाले, अशोकवाटिकाको नष्ट-भ्रष्ट कर देनेवाले तथा विजयप्रदाता हनुमानजीको बारंबार नमस्कार है ॥ ३५ ॥

वायुपुत्राय वीराय आकाशोदरगामिने ।
वनपालशिरश्छेत्रे लङ्काप्रासादभञ्जिने ॥ ३६ ॥
ज्वलत्काञ्चनवर्णाय दीर्घलाङ्गूलधारिणे ।
सौमित्रिजयदात्रे च रामदूताय ते नमः ॥ ३७ ॥

जो आकाशके भीतर चलनेवाले, (अशोक) वनरक्षकोंके मस्तकका छेदन और लंकाके महलोंका भञ्जन करनेवाले, तपाये हुए सुवर्णके समान कान्तिमान्, लंबी लाङ्गूल धारण करनेवाले तथा सुमित्राकुमारको विजय दिलानेवाले हैं, उन वीरवर वायुपुत्र श्रीरामदूतको नमस्कार है ॥ ३६-३७ ॥

अक्षस्य वधकर्त्रे च ब्रह्मशस्त्रनिवारिणे ।
लक्ष्मणाङ्गमहाशक्तिजातक्षतविनाशिने ॥ ३८ ॥
रक्षोघ्नाय रिपुघ्नाय भूतघ्नाय नमो नमः ।
ऋक्षवानरवीरौघप्रसादाय नमो नमः ॥ ३९ ॥

जो रावणकुमार अक्षका वध करनेवाले, मेघनादके ब्रह्मास्त्रका निवारण कर देनेवाले, लक्ष्मणके शरीरमें महाशक्तिजनित घावका विनाश करनेवाले, राक्षसों-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के हन्ता, शत्रुओंके नाशक और भूतोंके विघातक तथा रीछों और वानर वीरोंके समुदायको प्रसन्न करनेवाले हैं, उन पवननन्दनको बारंबार नमस्कार है ॥ ३८-३९ ॥

परसैन्यबलघ्नाय शस्त्रास्त्रघ्नाय ते नमः ।
विषघ्नाय द्विषघ्नाय भयघ्नाय नमो नमः ॥ ४० ॥

शत्रु-सैन्य-बलके नाशक और शस्त्र तथा अस्त्रोंके विनाशक आपको नमस्कार है। विष-नाशक, शत्रु-नाशक और भय-नाशक आपको बारंबार नमस्कार है ॥ ४० ॥

महारिपुभयघ्नाय भक्तत्राणैककारिणे ।
परप्रेरितमन्त्राणां यन्त्राणां स्तम्भकारिणे ॥ ४१ ॥
पयःपाषाणतरणकारणाय नमो नमः ।
बालार्कमण्डलग्रासकारिणे दुःखहारिणे ॥ ४२ ॥

आप बड़े-बड़े शत्रुओंके भयको मिटानेवाले तथा भक्तोंके एकमात्र रक्षक हैं। शत्रुओंद्वारा प्रयुक्त यन्त्र-मन्त्रोंका स्तम्भन (रुकावट) करनेवाले, पानीपर पत्थरको तैरानेवाले, प्रातःकालीन बाल-सूर्यके मण्डलको अपना ग्रास बनानेवाले तथा सबके दुःख हर लेनेवाले आप हनुमानको बारंबार नमस्कार है ॥ ४१-४२ ॥

नखायुधाय भीमाय दन्तायुधधराय च ।
विहङ्गमाय शर्वाय वज्रदेहाय ते नमः ॥ ४३ ॥

नख ही आपके आयुध हैं। आप देखनेमें भयंकर तथा दाँतोंको भी आयुधके रूपमें धारण करते हैं। आप आकाशचारी, शिवस्वरूप तथा वज्रदेहधारी हैं। आपको नमस्कार है ॥ ४३ ॥

प्रतिग्रामस्थितायाथ भूतप्रेतवधार्थिने ।
करस्थशैलशस्त्राय रामशस्त्राय ते नमः ॥ ४४ ॥

आप प्रत्येक ग्राममें स्थित हैं, भूतों और प्रेतोंका वध करनेके लिये उद्यत रहते हैं। आपके एक हाथमें शस्त्रके रूपमें पर्वत है तथा आप श्रीरामके बाण हैं। आपको नमस्कार है ॥ ४४ ॥

कौपीनवाससे तुभ्यं रामभक्तिरताय च ।
दक्षिणाशाभास्कराय सतां चन्द्रोदयात्मने ॥ ४५ ॥
कृत्याक्षतव्यथाघ्नाय सर्वक्लेशहराय च ।
स्वाम्याज्ञापार्थसंग्रामसख्यसंजयकारिणे ॥ ४६ ॥
भक्तानां दिव्यवादेषु संग्रामे जयकारिणे ।
किल्किलाबुबुकाराय घोरशब्दकराय च ॥ ४७ ॥
सर्वाग्निव्याधिसंस्तम्भकारिणे भयहारिणे ।
सदा वनफलाहारसंतृप्ताय विशेषतः ॥ ४८ ॥
महार्णवशिलाबद्धसेतुबन्धाय ते नमः ।

आप कौपीन वस्त्रधारी तथा श्रीरामभक्तिमें तत्पर रहनेवाले हैं। आप दक्षिण दिशाके सूर्य तथा सत्पुरुषोंके लिये चन्द्रोदयरूप हैं। आप कृत्याजनित क्षति एवं व्यथाके नाशक तथा सम्पूर्ण क्लेशोंका हरण करनेवाले हैं। स्वामीकी आज्ञासे पृथापुत्र अर्जुनको महाभारत युद्धमें सहायता देने एवं विजय दिलानेवाले हैं। आप दिव्य वादों तथा संग्राममें भक्तोंको विजय दिलानेवाले, किलकिला एवं बुबुकार करनेवाले तथा भयंकर सिंहनाद करनेवाले हैं। आप सम्पूर्ण अग्नि एवं व्याधियोंका स्तम्भन करनेवाले तथा भय हर लेनेवाले हैं। विशेषतः आप सदा वन्यफलोंके आहारसे ही पूर्णतः तृप्त रहते हैं। महासागरमें पत्थरोंका सेतु बाँधनेवाले आपको नमस्कार है ॥ ४५–४८½ ॥

इत्येतत्कथितं विप्र मारुतेः कवचं शिवम् ॥ ४९ ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं रक्षणीयं प्रयत्नतः ।

ब्रह्मन् ! यह मैंने कल्याणमय मारुति-कवचका वर्णन किया है। जिस किसीको भी इसका उपदेश नहीं देना चाहिये। प्रयत्नपूर्वक इसकी रक्षा करनी चाहिये ॥ ४९½ ॥

अष्टगन्धैर्विलिख्याथ कवचं धारयेत्तु यः ॥ ५० ॥
कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ जयस्तस्य पदे पदे ।

जो इस कवचको अष्टगन्धसे लिखकर कण्ठ अथवा दाहिनी बाँहमें धारण करता है, उसे पद-पदपर विजय प्राप्त होती है ॥ ५०½ ॥

किं पुनर्बहुनोक्तेन साधितलक्षमादरात् ॥ ५१ ॥
प्रजप्तमेतत्कवचमसाध्यं चापि साधयेत् ॥ ५२ ॥

बहुत कहनेसे क्या लाभ। यदि आदरपूर्वक लाख बार पाठ करके इसको सिद्ध कर लिया जाय तो इस कवचका जप असाध्य कार्यको भी सिद्ध कर सकता है ॥ ५१-५२ ॥

इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने तृतीयपादे मारुतिकवचनिरूपणं नामाष्टसप्ततितमोऽध्यायः ॥

इस प्रकार श्रीबृहन्नारदीयपुराणके पूर्वभागमें बृहदुपाख्यानके तृतीयपादमें मारुति-कवचनिरूपणका ७८वाँ अध्याय समाप्त हुआ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीहनुमदुपनिषद्

ॐ सनकाद्या योगिवर्या अन्ये च ऋषयस्तथा ।
प्रह्लादाद्या विष्णुभक्ता हनूमन्तमथाब्रुवन् ॥ १ ॥

सनक-सनन्दनादि योगीन्द्रों, अन्य ऋषियों एवं प्रह्लादादि विष्णु-भक्तोंने हनुमानजीसे (यह) कहा—।

वायुपुत्र महाबाहो किं तत्त्वं ब्रह्मवादिनाम् ।
पुराणेष्वष्टादशसु स्मृतिष्वष्टादशस्वपि ॥ २ ॥

महाबाहु पवननन्दन ! अठारह पुराणों तथा अठारह स्मृतियोंमें निरूपित ब्रह्मवादियोंका तत्त्व कौन-सा है ?

चतुर्वेदेषु शास्त्रेषु विद्यास्वाध्यात्मिकेषु च ।
सर्वेषु विबुधाद्येषु विघ्नसूर्येशशक्तिषु ॥ ३ ॥
एतेषु मध्ये किं तत्त्वं कथयस्व महाबल ।

चारों वेद, छहों शास्त्र, अठारहों विद्या, अध्यात्म-ज्ञान, गणेश, सूर्य, शिव, शक्ति एवं सभी देवता—इन सबमें भी सार-तत्त्व क्या है महाबल ! आप उसे बतलाइये ।

श्रीहनुमानुवाच

भो योगीन्द्राश्च ऋषयो विष्णुभक्तास्तथैव च ॥ ४ ॥
शृणुध्वं मामकीं वाचं भवबन्धविनाशिनीम् ।
एतेषु चैव सर्वेषु तत्त्वं च ब्रह्मतारकम् ॥ ५ ॥

श्रीहनुमानजीने कहा—हे योगीन्द्रों, ऋषियों तथा विष्णु-भक्त वैष्णवगण ! आपलोग संसार-बन्धनको नष्ट करनेवाली मेरी बात सुनें । वस्तुतः इन सभीमें तारक-ब्रह्म ही तत्त्व है ।

राम एव परं ब्रह्म राम एव परं तपः ।
राम एव परं तत्त्वं श्रीरामो ब्रह्मतारकम् ॥ ६ ॥

और श्रीराम ही परब्रह्म, श्रीराम ही सर्वोपरि तप, श्रीराम ही परम तत्त्व एवं श्रीराम ही तारक-ब्रह्म हैं ।

वायुपुत्रेणोक्तास्ते योगीन्द्रा ऋषयो विष्णुभक्ताः पुनः पप्रच्छुर्हनूमन्तं रामस्याङ्गानि यानि तानि नो ब्रूहीति ।

हनुमानजीके ऐसा कहनेपर उन ऋषि-मुनि-योगीन्द्रों एवं विष्णु-भक्तोंने उनसे पुनः पूछा कि श्रीरामके जितने अङ्ग हैं, आप उन्हें भी हमें बतलाइये ।

स होवाच वायुपुत्रः ॥ ७ ॥ विघ्नेशं शक्तिं दुर्गां क्षेत्रपालं सूर्यं चन्द्रं रुद्रं नारायणं नारसिंहं वासुदेवं वाराहं तत्सर्वान् समन्त्रान् सीतां लक्ष्मणं हनुमन्तं भरतं शत्रुघ्नं विभीषणं सुग्रीवम् अङ्गदं जाम्बवन्तं प्रणवमन्त्रं रामस्याङ्गानि जानीथाः ॥ ८ ॥ तान् विना रामो विघ्नकरो भवति ॥ ९ ॥

श्रीहनुमानजीने कहा—गणेश, शक्ति, दुर्गा, क्षेत्रपाल, सूर्य, चन्द्र, रुद्र, नारायण, नृसिंह, वासुदेव और वाराह—ये सभी अपने मन्त्रादि (पञ्चाङ्गों)सहित तथा सीता, लक्ष्मण, (स्वयं मैं) हनुमान, भरत, शत्रुघ्न, विभीषण, सुग्रीव, अङ्गद, जाम्बवान् एवं प्रणव-मन्त्र—इन सभीको आपलोग श्रीरामके अङ्ग समझें । इन अङ्गोंकी उपासनाके विना श्रीराम विघ्नकारी हो जाते हैं ।

पुनर्वायुपुत्रेणोक्तास्ते हनुमन्तं पप्रच्छुः । आञ्जनेय महाबल विप्राणां गृहस्थानां प्रणवाधिकारः कथं स्यादिति ॥१०॥ पुनरुवाच हनुमान् ॥११॥ अयोध्यानगरे रम्ये समासीनो रामो मया पृष्टः ॥ १२ ॥ सीतापते योगीन्द्र-मानसहंस विप्रगृहस्थानां प्रणवाधिकारः कथं स्यादिति ॥१३॥ स होवाच रामः ॥ १४ ॥ येषां मे षडक्षराधिकारो वर्तते तेषां प्रणवाधिकारः स्यान्नान्येषाम् ॥ १५ ॥ प्रणवस्य केवल-मकारोकारमकारार्द्धमात्रासहितस्य साङ्गेन यो राममन्त्रं जपति तस्याभयंकरोऽहं स्याम् । तस्मात् प्रणवस्याकारस्य चोकारस्य च मकारस्य चार्द्धमात्रासहितस्य ऋषिश्छन्दो देवता तत्तद् वर्णावस्थानं स्वरवेदाग्निगुणानुच्चार्य न्यासं कृत्वा प्रणवमन्त्राद् द्विगुणं जप्त्वा पश्चाद्राममन्त्रमाद्यतः प्रणवं यो जपेत् स रामो भवेदिति रामेणोक्तम् ॥ १६ ॥ तस्माद्रामाङ्गं प्रणवः कथित इति ॥ १७ ॥

हनुमानजीके इस प्रकार कहनेपर फिर उन ऋषियोंने उनसे पूछा—महाबली आञ्जनेय ! गृहस्थ ब्राह्मणोंका प्रणव-अधिकार कैसे हो ? इसपर हनुमानजीने कहा कि एक बार रमणीय अयोध्या-नगरमें भगवान् श्रीराम बैठे हुए थे । मैंने उनसे उस समय यही बात पूछी कि हे सीतापति, योगीन्द्रमानस-हंस, प्रभो ! गृहस्थ ब्राह्मणोंका प्रणवमें अधिकार कैसे हो ? इसपर उन भगवान् श्रीरामने कहा कि जिन्हें मेरे षडक्षरका अधिकार है, उन्हें ही प्रणवका भी अधिकार है, अन्योंका नहीं । प्रणवस्थ अ, उ, म् एवं अर्द्धमात्राके साथ जो श्रीराम-मन्त्रका जप करता है, मैं उसे (सर्वथा) निर्भय कर देता हूँ । इसलिये अकार, उकार, मकार एवं अर्द्धमात्रासहित प्रणवको ऋषि, छन्द, देवता एवं उन-उन वर्णावस्थाओंके ७४६ गुना (प्रायः ५४

१. पाठान्तर—'शुभकरो'—श्रीमहेशचन्द्रजी पालकर्तृक बंगला-संस्करण ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हजार) जपकर, न्यासकर, प्रणवमन्त्रसे दूना जपकर, बादमें जो आदिमें प्रणवयुक्त श्रीराममन्त्रका जप करता है, वह भी स्वयं श्रीराम हो जाता है। ऐसा उन्होंने कहा था। अतः प्रणवको श्रीरामजीका ही अङ्ग कहा गया है।

वायुपुत्रेणोक्तास्ते पुनर्हनुमन्तं पप्रच्छुः ॥ १८ ॥ रामभक्तविभीषणकृतस्य परिचयं श्रोतुमिच्छामः ॥ १९ ॥ स होवाच हनुमान् ॥ २० ॥ विभीषणोक्तं रामचर्यायां सप्त-सहस्राणि संस्कृतवाक्यानि सप्त-सहस्राणि गद्यानि ॥ २१ ॥ पञ्चशतान्यार्या अष्टौ सहस्राणि श्लोकाश्चतुर्विंशति-सहस्राणि पद्यानि दश-सहस्राणि दण्डकाः। इत्येवमनुक्रमं ज्ञात्वा कृतकृत्यो भवेदिति ॥ २२ ॥

हनुमानजीके ऐसा कहनेपर उन ऋषियोंने उनसे पुनः पूछा कि अब हमलोग श्रीरामभक्त विभीषणका परिचय सुनना चाहते हैं। हनुमानजीने कहा—विभीषणद्वारा कथित रामचर्यामें सात हजार संस्कृत-वाक्य एवं सात हजार गद्य हैं। उसमें पचास आर्या, आठ हजार श्लोक, चौबीस हजार पद्य और दस हजार दण्डक हैं। यह उनकी अनुक्रमिणका है। इसे जानकर मनुष्य कृतार्थ हो जाता है।*

—पं० श्रीजानकीनाथजी शर्मा

तन्त्रसारोक्त श्रीहनुमत्कल्प

(अनुवादक—पं० श्रीरामाधारजी शुक्ल, शास्त्री, साहित्यकेसरी)

देव्युवाच

शैवादिगाणपत्यादिशाक्तानि वैष्णवानि च।
साधनानि च सौराणि चान्यानि यानि कानि च ॥ १ ॥
एतानि देवदेवेश त्वदुक्तानि श्रुतानि च।
किंचिदन्यच्च देवानां साधनं यदि कथ्यताम् ॥ २ ॥

पार्वतीदेवीने पूछा—देवदेवेश्वर ! शैव, गाणपत्य, शाक्त, वैष्णव और सौर तथा अन्य जो कोई भी साधन है, उन सबका वर्णन तो मैंने आपके श्रीमुखसे श्रवण किया, अब यदि किन्हीं अन्य देवोंका भी कोई साधन हो तो उसे बतलाइये ॥ १-२ ॥

शंकर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सावधानावधारय।
हनुमत्साधनं पुण्यं महापातकनाशनम् ॥ ३ ॥
एतद् गुह्यतमं लोके शीघ्रसिद्धिकरं परम्।
जपो यस्य प्रसादेन लोकत्रयजितो भवेत् ॥ ४ ॥
तत्साधनविधिं वक्ष्ये नृणां सिद्धिकरं मतम्।

शंकरजीने कहा—देवि ! मैं हनुमत्साधनका वर्णन करता हूँ, तुम सावधानीपूर्वक उसे सुनो और धारण करो। यह साधन परम पवित्र, महापातकोंका विनाशक, अत्यन्त गोपनीय और संसारमें शीघ्र ही उत्तम सिद्धि प्रदान करनेवाला है। जिसकी कृपासे जप करनेवाला मनुष्य तीनों लोकोंमें विजयी होता है। यह मनुष्योंके लिये सिद्धिकारक माना गया है, इसलिये मैं इसकी साधनविधिका वर्णन करता हूँ ॥ ३-४½ ॥

हुंकारमादौ संप्रोक्तं हनुमते तदनन्तरम्।
रुद्रात्मकाय हुं चैव फडिति द्वादशाक्षरम् ॥ ५ ॥
(१ हुं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट् ॥ १)
एतन्मन्त्रं समाख्यातं गोपनीयं प्रयत्नतः।
तव स्नेहेन भक्त्या च ददामि तव सुन्दरि ॥ ६ ॥

आदिमें 'हुं'कारका उच्चारण करके तदनन्तर 'हनुमते रुद्रात्मकाय हुं' और 'फट्'का उच्चारण करनेसे 'हुं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्'—यह द्वादशाक्षर हनुमन्मन्त्र भली-भाँति कहा गया है। प्रयत्नपूर्वक इसे गुप्त रखना चाहिये।

* आगमोंमें उपासनाको जप (मौन)-पाठ-भजन-पूजन-ब्राह्मण-भोजनादि पञ्चाङ्गसे बद्ध बतलाया गया है। इस पञ्चाङ्गके भी अनेक भेद हैं। इसे तन्त्रोंमें ही देखना चाहिये। इनमें पुनः प्रत्येकके भी पाँच भेद हैं। यथा पाठमें उपनिषद्, कवच, पटल, स्तोत्र और सहस्रनाम-जप—ये पञ्चाङ्ग-भेद हैं। कहीं पटलकी जगह पद्धति या हृदय भी गृहीत है। अतः 'उपनिषद्'-पाठ उपासनाका मुख्य अङ्ग है। इस अङ्कमें हनुमत्कवच, सहस्रनाम आदि सभी अङ्ग दिये गये हैं। उपनिषद्की जगह प्राप्त यह 'हनुमदुपनिषद्' कहीं 'रामोपनिषद्' तथा 'रामरहस्योपनिषद्'के प्रथम अध्यायके रूपमें भी प्राप्त है, किंतु उपासना-मर्मज्ञोंने इसका रहस्य जानकर यहाँ इसे रत्नवत् ठीक ही पिरोया है; क्योंकि श्रीरामसेवाप्राण हनुमानजी श्रीरामसेवाका ही उपदेश दे सकते हैं, अपनी सेवा उन्हें अभीष्ट नहीं। अतः पाठकोंको कोई शङ्का न कर इसके पारायण एवं अनुष्ठानसे अवश्य लाभ उठाना चाहिये।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दरि ! तुम्हारे स्नेह और भक्तिके वशीभूत होकर मैं तुम्हें इसे बतला रहा हूँ ॥ ५-६ ॥

एतन्मन्त्रमर्जुनाय पुरा दत्तं तु शौरिणा।
जपेन साधनं कृत्वा जितं सर्वं चराचरम् ॥ ७ ॥

प्राचीनकालमें श्रीकृष्णने अर्जुनको यह मन्त्र प्रदान किया था। इसी मन्त्रका जप करके अर्जुनने सारे चराचर जगत्को जीत लिया था ॥ ७ ॥

नदीकूले विष्णुगेहे निर्जने पर्वते वने।
एकाग्रचित्तमाधाय साधयेत् साधनं महत् ॥ ८ ॥

नदी-तटपर, विष्णु-मन्दिरमें, जनशून्य-पर्वतपर अथवा वनमें चित्तको एकाग्र करके इस महान् मन्त्रको सिद्ध करना चाहिये ॥ ८ ॥

ध्यान

महाशैलं समुत्पाट्य धावन्तं रावणं प्रति।
तिष्ठ तिष्ठ रणे दुष्ट मम जीवन्न मोक्ष्यसे ॥ ९ ॥
इति ब्रुवन्तं कोपेन क्रोधरक्तमुखाम्बुजम्।
भोगीन्द्राभं स्वलाङ्गूलमुत्क्षिपन्तं मुहुर्मुहुः ॥१०॥
लाक्षारक्तारुणं रौद्रं कालान्तकयमोपमम्।
ज्वलदग्निसमं नेत्रं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥११॥
अङ्गदाद्यैर्महावीरैर्वेष्टितं रुद्ररूपिणम्।
एवं रूपं हनूमन्तं ध्यात्वा यः प्रजपेन्मनुम् ॥१२॥
लक्षजापात् प्रसन्नः स्यात् सत्यं ते कथितं मया।
ध्यानैकमाश्रितानां च सिद्धिरेव न संशयः ॥१३॥

उस समय हनुमानजीका इस प्रकार ध्यान करना चाहिये—“वे युद्धस्थलमें महान् पर्वत उखाड़कर रावणपर आक्रमण कर रहे हैं और कह रहे हैं—रे दुष्ट ! खड़ा रह, खड़ा रह ! तू मेरे (हाथसे) जीता हुआ नहीं छूट सकेगा।’ वे क्रुद्ध होकर इस प्रकार बोल रहे हैं, क्रोधके कारण उनका मुखकमल लाल हो गया है, वे शेषनागकी-सी कान्तिवाली अपनी पूँछको बारंबार फटकार रहे हैं, उनके शरीरका वर्ण लाक्षाके समान लाल है, वे अत्यन्त भयंकर और प्रलयकालीन यमराजके सदृश दीख रहे हैं। उनके नेत्र प्रज्वलित अग्निके समान हैं और शरीर-कान्ति करोड़ों सूर्योंकी आभा-सरीखी है तथा उन रुद्रावतारको अङ्गद आदि श्रेष्ठ योद्धा घेरे हुए हैं।” हनुमानजीका इस रूपमें ध्यान करके जो हनुमन्मन्त्रका जप करता है, उसका एक लाख जप पूर्ण होनेपर हनुमानजी उसपर प्रसन्न हो जाते हैं। यह मैंने तुम्हें सत्य बात बतलायी है। जो एकमात्र ध्यानका ही आश्रय लेनेवाले हैं, उन्हें भी निस्संदेह सिद्धि प्राप्त होती है ॥ ९–१३ ॥

प्रातः स्नात्वा नदीतीरे उपविश्य कुशासने।
प्राणायामं षडङ्गं च मूलेन सकलं चरेत् ॥१४॥

प्रातःकाल स्नान करके नदी-तटपर कुशासनपर बैठकर प्राणायाम करके मूलमन्त्रद्वारा षडङ्ग न्यास (करन्यास, अङ्गन्यास आदि) करे ॥ १४ ॥

पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा ध्यात्वा रामं ससीतकम्।
ताम्रपात्रे ततः पद्ममष्टपत्रं सकेसरम् ॥१५॥
रक्तचन्दनघृष्टेन लिखेत्तस्य शलाकया।
कर्णिकायां लिखेन्मन्त्रं तत्रावाह्य कपिं प्रभुम् ॥१६॥
कर्णिकायां यजेद्देवं दत्त्वा पाद्यादिकं ततः।
गन्धपुष्पादिकं चैव निवेद्य मूलमन्त्रतः ॥१७॥

तत्पश्चात् सीता-सहित श्रीरामका ध्यान कर उन्हें आठ बार पुष्पाञ्जलि प्रदान करे। तदनन्तर ताँबेके पात्रमें रक्त-चन्दनकी शलाका (लेखनी) से घिसे हुए रक्त-चन्दनसे केसरसहित अष्टदल-कमल बनावे, उसकी कर्णिकामें मन्त्राक्षरोंका विन्यास करे, फिर उसी कर्णिकामें सामर्थ्यशाली देवता कपिराज हनुमानजीका आवाहन करके उन्हें पाद्य-अर्घ्य आदि देनेके पश्चात् मूलमन्त्रसे गन्ध-पुष्प आदि निवेदित करके उनकी पूजा करे ॥ १५–१७ ॥

सुग्रीवं लक्ष्मणं चैव अङ्गदं नलनीलकम्।
जाम्बवन्तं च कुमुदं केसरिणं दले दले ॥१८॥
पूर्वादिक्रमतो देवि पूजयेद् गन्धचन्दनैः।
पवनं चाञ्जनीं चैव पूजयेद् दक्षवामतः ॥१९॥
दलाग्रेषु क्रमात्पूज्या लोकपालास्ततः परम्।
ध्यात्वा जपेन्मन्त्रराजं लक्षं यावच्च साधकः ॥२०॥
लक्षान्ते दिवसं प्राप्य कुर्याच्च पूजनं महत्।

देवि ! फिर उस अष्टदल-कमलके प्रत्येक दलपर पूर्वादि क्रमसे सुग्रीव, लक्ष्मण, अङ्गद, नल, नील, जाम्बवान्, कुमुद और केसरीका आवाहन करके सुगन्धित-चन्दनादिद्वारा उनकी पूजा करे। पुनः उस कमलके दायें-बायें क्रमशः पवन और अञ्जनीकी पूजा करनी चाहिये। तत्पश्चात् दलोंके अग्रभागमें क्रमशः लोकपालोंकी पूजा करनी चाहिये। इस प्रकार साधकको हनुमानजीका ध्यान करके इस मन्त्रराजका एक लाखकी संख्यातक जप करना चाहिये और जिस दिन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक लाखकी संख्या-पूर्ति हो, उस दिन हनुमानजीकी विशेषरूपसे पूजा करे ॥ १८–२०½॥

एकाग्रमनसा धीमांस्तस्मिन् पवननन्दने ॥२१॥
दिवारात्रौ जपं कुर्याद् यावत्संदर्शनं भवेत्।

बुद्धिमान् साधकको चाहिये कि उन पवननन्दन हनुमानमें मनको एकाग्र करके दिन-रात तबतक जप करता रहे, जबतक उनका दर्शन प्राप्त न हो जाय ॥ २१½ ॥

सुदृढं साधकं मत्वा निशीथे पवनात्मजः ॥२२॥
सुप्रसन्नस्ततो भूत्वा प्रयाति साधकाग्रतः।
यथेप्सितं वरं दत्त्वा साधकाय कपिप्रभुः ॥२३॥
सर्वसौख्यमवाप्नोति विहरेदात्मनः सुखैः।

साधकको सुदृढ़ जानकर पवनकुमार परम प्रसन्न होते हैं और फिर आधी-रातके समय वे कपिराज उस साधकके समक्ष प्रकट होकर उसे मनोवाञ्छित वर प्रदान करके अन्तर्हित हो जाते हैं। इससे साधकको सब प्रकारके सुखकी प्राप्ति हो जाती है और वह आत्म-सुखमें निमग्न होकर आनन्दका उपभोग करता है ॥ २२-२३½ ॥

एतच्च साधनं पुण्यं देवानामपि दुर्लभम्।
तव स्नेहात् समाख्यातं भक्तासि यदि पार्वति ॥२४॥

पार्वति! यह परम पवित्र साधन देवताओंके लिये भी दुर्लभ है, परंतु तुम्हारी मुझमें अटल भक्ति है, इस कारण तुम्हारे स्नेहके वशीभूत होकर मैंने तुमसे इसका वर्णन किया है ॥ २४ ॥

वीरसाधनम्—

हनुमतोऽतिगुह्यं च लिख्यते वीरसाधनम्।
ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय कृतनित्यक्रियो द्विजः ॥२५॥
गत्वा नदीं ततः स्नात्वा तीर्थमावाह्य त्वष्टधा।
मूलमन्त्रं ततो जप्त्वा संसिक्तो नित्यसंख्यया ॥२६॥
ततो वासः परीधाय गङ्गातीरेऽथवा शुचौ।

अब हनुमानजीका परम गोपनीय वीरसाधन लिखा जा रहा है—द्विजको चाहिये कि ब्राह्ममुहूर्तमें उठकर शौचादि नित्यकर्मोंसे निवृत्त होकर किसी नदीके तटपर जाय और तीर्थोंका आवाहन करके स्नान करे। तत्पश्चात् गीले वस्त्र पहने हुए ही नियमित संख्यापूर्वक आठ बार मूलमन्त्रका जप करे और फिर स्वच्छ वस्त्र धारण करके गङ्गा-तटपर अथवा किसी भी पवित्र स्थानपर बैठकर न्यासादि करे २५-२६½

उपविश्य—

आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
आं हृदयाय नम इत्यादिना च कराङ्गन्यासौ कुर्यात्।

करन्यासः—ॐ आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऊं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अः करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यासः—पूर्वोक्त प्रकारसे 'ॐ आं हृदयाय नमः। ॐ ईं शिरसे स्वाहा। ॐ ऊं शिखायै वषट्। ॐ ऐं कवचाय हुम्। ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अः अस्त्राय फट्।' आदिसे अङ्गन्यास भी करना चाहिये।

ततः प्राणायामः।
अकारादिवर्णानुच्चरन्वामनासापुटेन वायुं पूरयेत्।
पञ्चवर्गानुच्चरन्कुम्भयेत्। यकाराद्येन रेचयेत् ॥
एवं वारत्रयं कृत्वा मन्त्रवर्णैरङ्गन्यासं कुर्यात्।

प्राणायाम—बायीं नासिकासे अकारादि वर्णोंका उच्चारण करते हुए वायुको भीतर खींचकर पूरक और क, च, ट, त, प—इन पाँच वर्गोंका उच्चारण करते हुए कुम्भक तथा यकारसे हकारतकके वर्णोंका उच्चारण करते हुए रेचक करे। इस प्रकार तीन वार करके पुनः मन्त्रवर्णोंद्वारा अङ्गन्यास करना चाहिये।

ततो ध्यानम्—

ध्यायेद्रणे हनूमन्तं कपिकोटिसमन्वितम्।
धावन्तं रावणं जेतुं दृष्ट्वा सत्वरमागतम् ॥२७॥
लक्ष्मणं च महावीरं पतितं रणभूतले।
गुरुं च क्रोधमुत्पाद्य गृहीत्वा गुरुपर्वतम् ॥२८॥
हाहाकारैः सदर्पैश्च कम्पयन्तं जगत्त्रयम्।
आब्रह्माण्डसमप्रस्थं कृत्वा भीमं कलेवरम् ॥२९॥

जो रणभूमिमें करोड़ों वानर-सैनिकोंसे घिरे हुए हैं, महावीर-लक्ष्मणको युद्धस्थलमें धराशायी हुआ देखकर जो तुरंत वहाँ आ पहुँचे हैं और परम क्रुद्ध हो विशाल-पर्वत लेकर रावणको पराजित करनेके लिये उसपर आक्रमण कर रहे हैं, जो ब्रह्माण्डव्यापी विशाल-भयंकर-शरीर धारण करके अपने प्रहारों एवं हाहाकारोंसे त्रिलोकीको कम्पित कर रहे हैं, उन हनुमानजीका ध्यान करना चाहिये ॥ २७–२९ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इति ध्यात्वाष्टसहस्रं जपेदस्य मन्त्रः।

इस प्रकार ध्यान करके हनुमानजीके मन्त्रका आठ हजार जप करना चाहिये।

मन्त्रः

श्रीबीजं पूर्वमुच्चार्य पवनं च ततो वदेत्।
नन्दनं च ततो देयं ङेऽवसानेऽनलप्रिया॥
(श्रीपवननन्दनाय स्वाहा) ॥३०॥

पहले 'श्री' बीजका उच्चारण करके तत्पश्चात् चतुर्थ्यन्त 'पवननन्दनाय'का उच्चारण करे और अन्तमें अग्निकी प्रियतमा 'स्वाहा'का प्रयोग करे। इस प्रकार 'श्रीपवननन्दनाय स्वाहा' यह दशाक्षर मन्त्र निष्पन्न होता है॥३०॥

दशार्णोऽयं मनुः प्रोक्तो नराणां सुरपादपः॥

यह दशाक्षर मन्त्र मनुष्योंके लिये कल्पवृक्षके समान कहा गया है।

सप्तदिवसं महाभयं दत्त्वा त्रिभागशेषासु निशासु नियतमागच्छति। यदि साधको मायां तरति ईप्सितं वरं प्राप्नोति॥
विद्यां वापि धनं वापि राज्यं वा शत्रुनिग्रहम्।
तत्क्षणादेव प्राप्नोति सत्यं सत्यं सुनिश्चितम्॥३१॥

सात दिनोंतक रात्रिके तीन भाग शेष रहनेपर हनुमानजी साधकको महान् भयानक दृश्य दिखलाते हैं और अन्तमें निश्चय ही उसके सम्मुख प्रकट हो जाते हैं। फिर तो वह साधक मायासे पार हो जाता है और उसे मनोवाञ्छित-वरकी प्राप्ति होती है। यह सर्वथा सत्य एवं सुनिश्चित है कि उसे उसी क्षण विद्या, धन, राज्य, शत्रु-निग्रह—सभी प्राप्त हो जाते हैं॥३१॥

(हनुमदुपासना एकादशप्रकरण)

श्रीसौभाग्यहनुमन्महामन्त्रकी प्रयोग-विधि

विनियोग

ॐ अस्य श्रीसौभाग्यहनुमन्महामन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, अतिजगती छन्दः, श्रीहनुमान्परमात्मा रुद्रो देवता, हनुमानिति बीजम्, वायुर्देवता इति शक्तिः, अञ्जनीसुत इति कीलकम्, श्रीहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ इस श्रीसौभाग्यहनुमन्महामन्त्रके श्रीरामचन्द्र ऋषि, अतिजगती छन्द, श्रीहनुमान परमात्मा रुद्र देवता, 'हनुमान' बीज, वायुदेवता शक्ति और अञ्जनीसुत कीलक हैं। श्रीहनुमानकी कृपा-सिद्धिके लिये जपकालमें इसका विनियोग किया जाता है।

करन्यास

ॐ हं हनुमन् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वं वायुदेवतायै तर्जनीभ्यां नमः। ॐ अं अञ्जनीसुताय मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रं रामदूताय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ हं हनुमते कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ रुं रुद्रमूर्तये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

एवं हृदयादिन्यासः।

करन्यासके मन्त्रोंद्वारा हृदयादिन्यास भी कर लेना चाहिये।

ध्यान

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शृणु सर्वाङ्गसुन्दरि।
अथैवं देवदेवेशध्यानं श्रीहनुमत्परम्॥१॥
पञ्चवक्त्रं महाभीमं त्रिपञ्चनयनैर्युतम्।
बाहुभिर्दशभिः प्रोक्तं सर्वकामार्थसिद्धिदम्॥२॥
पूर्वं च वानरं प्रोक्तं कोटिसूर्यसमप्रभम्।
दंष्ट्राकरालवदनं भ्रुकुटीकुटिलेश्वरम्॥३॥
तथैव दक्षिणं वक्त्रं नारसिंहं महाद्भुतम्।
अत्युग्रतेजसं वर्यं भीषणं भयनाशनम्॥४॥
पश्चिमे गारुडं वक्त्रं वज्रतुण्डं महाबलम्।
पवनादिप्रशमनं सर्वभूतनिकृन्तनम्॥५॥
उत्तरे सूकरं वक्त्रं कृष्णदीप्ति नभोनिभम्।
पातालनिधिभेत्तारं ज्वररोगनिकृन्तनम्॥
कुर्वन् संतोषणं तेषां सर्वशत्रुहरं परम्॥६॥

सर्वाङ्गसुन्दरी देवि! अब देवदेवेश्वर श्रीहनुमानसम्बन्धी ध्यानका वर्णन करता हूँ, सुनो—

जिनका स्वरूप महान् भयंकर है, जो पाँच मुख, पंद्रह नेत्र और दस भुजाओंसे युक्त हैं तथा सम्पूर्ण कामनाओंके सिद्धिदाता कहे जाते हैं, जिनका पूर्व-दिशाका मुख वानरका है, वह करोड़ों सूर्योंके समान कान्तिमान् और विकराल दाढ़ोंसे सुशोभित है, उसकी भौंहें तिरछी चढ़ी हुई हैं। उसी प्रकार दक्षिण-दिशाका मुख नृसिंहका-सा है, वह महान् अद्भुत, प्रचण्ड तेजस्वी, सर्वश्रेष्ठ, भीषण और भयनाशक है। पश्चिमवाला मुख गरुडके सदृश है, उसकी चोंच वज्र-सरीखी है तथा वह महाबली, पवन एवं पन्नगोंको प्रशान्त करनेवाला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और सम्पूर्ण प्राणियोंको छिन्न-भिन्न कर देनेवाला है। उत्तर-दिशामें सूकर-सरीखा मुख है, उसकी कान्ति आकाश-सदृश कृष्ण-वर्णकी है तथा वह पाताल-निधिका भेदन करनेवाला, ज्वर-रोगका समूलोच्छेदक, परमोत्कृष्ट, सम्पूर्ण-शत्रुओंका संहारक और अपने भक्तोंको संतुष्ट करनेवाला है, (उन हनुमान-जीका ध्यान करना चाहिये) ॥ १–६ ॥

इति ध्यात्वा पञ्चोपचारैः पूजां कुर्यात्। अथ सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

इस प्रकार हनुमानजीका ध्यान करके पञ्चोपचारद्वारा उनकी पूजा करनी चाहिये। तदनन्तर उन्हें सात मुद्राएँ प्रदर्शित करनी चाहिये।

सप्तमुद्रा

खड्गं त्रिशूलं खट्वाङ्गं पाशं चाङ्कुशमेव च।
चक्रमुद्गरमुद्रे च सप्तमुद्राः प्रकीर्तिताः ॥ ७ ॥

खड्ग, त्रिशूल, खट्वाङ्ग, पाश, अङ्कुश, चक्र और मुद्गर—ये सात मुद्राएँ कही गयी हैं ॥ ७ ॥

माला-मन्त्र

ॐ रामदूताय अञ्जनीवायुसुताय महाबलाय सीताशोक-दुःखनिवारणाय लङ्कोपदहनाय बाहुबलप्रचण्डाय फाल्गुन-सखाय कोलाहलब्रह्माण्डविश्वरूपाय सप्तसमुद्रनीरलङ्घनाय पिङ्गनयनायामितविक्रमाय सूर्यबिम्बफलसेविताय दृष्टिनिरालंकृताय संजीवसंजीवितलक्ष्मणाङ्गदसुग्रीवमहाकपिसैन्यप्राण-निर्वाहकाय दशकण्ठविध्वंसनकारणसेविताय श्रीसीतासमेत-श्रीरामचन्द्रमूर्त्तये स्वाहा ॥

मूल-मन्त्र

ॐ हनुमन् वायुदैवताय अञ्जनासुत रामदूत हनुमन् रुद्र-मूर्त्तये स्वाहा ॥ इति यथाशक्ति यथाज्ञानं यथासंख्यं मूल-मन्त्रजपं कुर्यात् ॥ मूलमन्त्रजपकाले मालामन्त्रजपस्त्वाद्यन्तयो-स्त्रिरावृत्तिः। एतन्नामसम्पुटीकरणसूचनम् ॥ अथ पूर्वोक्तमुद्राः प्रदर्शयेत्। तथा पूर्वोक्तं ध्यानं कराङ्गन्यासांश्च कुर्यात्। गन्धादिनमस्कारान्तं पूजनं चेति ॥

(श्रीहनुमदुपासनाध्याये श्रीसौभाग्यहनुमन्महामन्त्र-निरूपणं नाम प्रकरणमष्टमम् ॥ ८ ॥)

'ॐ हनुमन् वायुदैवताय अञ्जनासुत रामदूत हनुमन् रुद्रमूर्त्तये स्वाहा।'—इस मूल-मन्त्रका अपनी शक्ति और ज्ञानके अनुसार नियमित संख्यातक जप करना चाहिये। मूल-मन्त्रका जप करते समय आदि-अन्तमें मालामन्त्रका तीन बार पाठ करना चाहिये। इसीको सम्पुटीकरण कहते हैं। तदनन्तर पूर्वोक्त मुद्राओंको प्रदर्शित करे तथा पूर्वोक्त ध्यान और करन्यास एवं अङ्गन्यास भी करे। फिर गन्धादिसमर्पणसे लेकर नमस्कारपर्यन्त पूजन भी करे। —'शुक्ल'

धर्मारण्यके ब्राह्मणोंद्वारा श्रीहनुमानजीकी स्तुति

नमः श्रीरामभक्ताय अक्षविध्वंसनाय च। नमो रक्षःपुरीदाहकारिणे वज्रधारिणे ॥
नमो ब्राह्मणदेवाय वायुपुत्राय ते नमः। नमोऽस्तु रामभक्ताय गोब्राह्मणहिताय च ॥
नमोऽस्तु रुद्ररूपाय कृष्णवक्त्राय ते नमः। अञ्जनीसूनवे नित्यं सर्वव्याधिहराय च ॥
नागयज्ञोपवीताय प्रबलाय नमोऽस्तु ते। स्वयं समुद्रतीर्णाय सेतुबन्धनकारिणे ॥

(स्कन्दपुराण, ब्रह्मखण्ड, धर्मारण्यमा० ३७ । ३–८)

आप श्रीरामके भक्त और अक्षकुमारके प्राणोंको हरनेवाले हैं। आपको नमस्कार है। राक्षसराज-रावणकी लंकापुरीको जलानेवाले तथा वज्रधारी आपको प्रणाम है। ब्राह्मणोंके लिये देवरूप आपको नमस्कार है। वायुनन्दनको प्रणाम है। श्रीरामजीके भक्त तथा गौओं और ब्राह्मणोंके हितकारी आपको नमस्कार है। आपने रुद्ररूपसे अवतार लिया है, आपका मुख कृष्णवर्णका है, आप सम्पूर्ण व्याधियोंका नित्य विनाश करते रहते हैं, अञ्जनानन्दन! आपको अभिवादन है। जिन्होंने नागको यज्ञोपवीतके रूपमें धारण कर रखा है, जो स्वयं ही समुद्रको लाँघ जानेवाले और सेतुबन्धके कार्यके सहयोगी हैं, उन महाबली हनुमानजीको नमस्कार है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हनुमद्द्वादशाक्षर-मन्त्रके प्रयोगकी विधि

'मन्त्र-महोदधि' में हनुमद्द्वादशाक्षर-मन्त्रका स्वरूप इस प्रकार है—'ह्रौं ह्स्फ्रें ख्फ्रें ह्स्रौं ह्स्ख्फ्रें ह्सौं हनुमते नमः ।'

पहले हाथमें जल लेकर निम्नाङ्कित वाक्य बोलकर जलको पृथ्वीपर गिरा दे—इसे विनियोग कहते हैं ।

विनियोग

ॐ अस्य द्वादशाक्षरहनुमन्मन्त्रस्य रामचन्द्र ऋषिः । जगती छन्दः । हनुमान् देवता । ह्सौं बीजम् । ह्स्फ्रें शक्तिः । सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

तत्पश्चात् ऋष्यादि न्यास करे—

ऋष्यादिन्यास

ॐ रामचन्द्र-ऋषये नमः, शिरसि ॥ १ ॥ जगती-छन्दसे नमः, मुखे ॥ २ ॥ हनुमद्देवतायै नमः, हृदि ॥ ३ ॥ ह्सौं बीजाय नमः, गुह्ये ॥ ४ ॥ ह्स्फ्रें शक्तये नमः, पादयोः ॥ ५ ॥ विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे ॥ ६ ॥

इसके बाद हृदयादि-अङ्गन्यास करना चाहिये—

हृदयाद्यङ्गन्यास

ॐ ह्रौं हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्स्फ्रें शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ख्फ्रें शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ ह्स्रौं कवचाय हुम् ॥ ४ ॥ ॐ ह्स्ख्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ ह्सौं अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

इन्हीं मन्त्रोंसे करन्यास भी करना चाहिये—

करन्यास

ॐ ह्रौं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्स्फ्रें तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ख्फ्रें मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्स्रौं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ ह्स्ख्फ्रें कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्सौं करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।

इसके बाद मन्त्रके बारह अक्षरोंका बारह अङ्गोंमें न्यास करे—

ॐ ह्रौं नमः, मूर्ध्नि ॥ १ ॥ ॐ ह्स्फ्रें नमः, भाले ॥ २ ॥ ॐ ख्फ्रें नमः, नेत्रयोः ॥ ३ ॥ ॐ ह्स्रौं नमः, मुखे ॥ ४ ॥ ॐ ह्स्ख्फ्रें नमः, कण्ठे ॥ ५ ॥ ॐ ह्सौं नमः, बाह्वोः ॥ ६ ॥ ॐ हं नमः, हृदि ॥ ७ ॥ ॐ नुं नमः, कुक्षौ ॥ ८ ॥ ॐ मं नमः, नाभौ ॥ ९ ॥ ॐ तें नमः, लिङ्गे ॥ १० ॥ ॐ नं नमः, जानुद्वये ॥ ११ ॥ ॐ मः नमः, पादयोः ॥ १२ ॥

इस प्रकार न्यास करके ध्यान करे—

ध्यान

बालार्कायुततेजसं त्रिभुवनप्रक्षोभकं सुन्दरं
सुग्रीवादिसमस्तवानरगणैः संसेव्यपादाम्बुजम् ।
नादेनैव समस्तराक्षसगणान् संत्रासयन्तं प्रभुं
श्रीमद्रामपदाम्बुजस्मृतिरतं ध्यायामि वातात्मजम् ॥

जिनका तेज प्रातःकालके दससहस्र सूर्योंके समान है, जो तीनों लोकोंको क्षुब्ध करनेमें समर्थ एवं सुन्दर हैं, सुग्रीव आदि समस्त वानरगण जिनके चरण-कमलोंकी सेवामें लगे रहते हैं, जो अपनी गम्भीर गर्जना मात्रसे ही समस्त राक्षससमूहोंको संत्रस्त कर देते हैं तथा श्रीमान् रामके चरणारविन्दोंकी स्मृतिमें सदा संलग्न रहते हैं, उन सर्वसमर्थ पवनपुत्र हनुमानजीका मैं ध्यान करता हूँ ।

इस प्रकार ध्यान करके सर्वतोभद्रमण्डलमें मण्डूकसे लेकर परतत्त्वपर्यन्त पीठदेवताओंकी निम्न प्रकारसे स्थापना करे । पहले फूल और अक्षत लेकर पीठके वाम (उत्तर) भागमें चतुर्विध-गुरुओंका स्मरण और पूजन करे । यथा—

ॐ गुरुभ्यो नमः, ॐ परमगुरुभ्यो नमः, ॐ परात्पर-गुरुभ्यो नमः, ॐ परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः । फिर पीठके दक्षिण भागमें गणेशका आवाहन-पूजन करे । यथा—'गणपतये नमः ।' गणपतिमावाहयामि, फिर पीठके मध्यभाग-में इष्ट देवताको नमस्कार करे । यथा—हनुमद्देवतायै नमः । इस प्रकार नमस्कार करके पीठके मध्यभागमें ही "ॐ मं मण्डूकाय नमः, ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः, ॐ आं आधारशक्तये नमः, ॐ कूं कूर्माय नमः, ॐ अं अनन्ताय नमः, ॐ पृं पृथिव्यै नमः, ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः, ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः, ॐ रं रत्नमण्डलाय नमः, ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः, ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः, ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः, (पीठके अग्निकोणगत पायेमें) ॐ धं धर्माय नमः, (नैर्ऋत्यकोणमें) ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः, (वायव्यकोणमें) ॐ वैं वैराग्याय नमः, (ईशान-कोणमें) ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः, (पीठके पूर्व भागमें) ॐ अं अधर्माय नमः, (दक्षिण भागमें) ॐ अं अज्ञानाय नमः, (पश्चिम भागमें) ॐ अं अवैराग्याय नमः,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(उत्तर भागमें) ॐ अं अनैश्वर्याय नमः, (पुनः पीठके मध्यभागमें) ॐ आं आनन्दकन्दाय नमः, ॐ सं संविन्नालाय नमः, ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः, ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः, ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः, ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः, ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः, ॐ सों सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः, ॐ वं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः, ॐ सं सत्त्वाय नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ तं तमसे नमः, ॐ आं आत्मने नमः, ॐ पं परमात्मने नमः, ॐ अं अन्तरात्मने नमः, ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः, ॐ मां मायातत्त्वाय नमः, ॐ कं कलातत्त्वाय नमः, ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः, ॐ पं परतत्त्वाय नमः— इन मन्त्रोंद्वारा उन-उन देवताओंकी स्थापना और पूजा करके नौ पीठशक्तियोंका पूजन करे । यथा— (पूर्व दिशामें) ॐ विमलायै नमः, (अग्निकोणमें) ॐ उत्कर्षिण्यै नमः, (दक्षिण दिशामें) ॐ ज्ञानायै नमः, (नैर्ऋत्यकोणमें) ॐ क्रियायै नमः, (पश्चिममें) ॐ योगायै नमः, (वायव्यकोणमें) ॐ प्रह्व्यै नमः, (उत्तर दिशामें) ॐ सत्यायै नमः, (ईशानकोणमें) ॐ ईशानायै नमः, (मध्यभागमें) ॐ अनुग्रहायै नमः ।

तदनन्तर स्वर्णादिनिर्मित यन्त्र अथवा मूर्तिको ताम्रपात्रमें रखकर उसमें घी लगाकर उसके ऊपर दूध या जलकी धारा गिराये । फिर स्वच्छ वस्त्रसे पोंछकर 'ॐ नमो भगवते हनुमते सर्वभूतात्मने हनुमते सर्वात्मसंयोगपद्मपीठात्मने नमः'—इस मन्त्रके द्वारा पुष्प आदिका आसन देकर पीठके मध्यभागमें उसकी स्थापना और प्रतिष्ठा करे । फिर ध्यान करके पूर्वोक्त मूलमन्त्रसे मूर्तिकी कल्पना कर पाद्यसे लेकर पुष्पाञ्जलिपर्यन्त विविध उपचारोंसे पूजा करके इष्टदेवकी आज्ञासे आवरण-पूजा करे । यथा—

संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ।
अनुज्ञां हनुमन् देहि परिवारार्चनाय मे ॥

इस मन्त्रद्वारा पुष्पाञ्जलि देकर आज्ञा प्राप्त करके आवरण-पूजा करे । क्रम इस प्रकार है—पहले षट्कोणात्मक केसरोंमें, फिर कमलके आठ दलोंमें, फिर दलोंके अग्रभागोंमें आवरण-पूजा की जाती है । तदनन्तर भूपुर-चक्रमें दिक्पालों और आयुधोंकी पूजा होती है।

षट्कोणात्मक केसरोंमें आग्नेयादि क्रमसे हृदयादि छः अङ्गोंकी पूजा की जाती है—

ॐ ह्रौं हृदयाय नमः । हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ ह्स्फ्रें शिरसे स्वाहा । शिरःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ ख्फ्रें शिखायै वषट् । शिखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः॥३॥ ॐ ह्स्रौं कवचाय हुम् । कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ ॐ ह्स्ख्फ्रें नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रत्रयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥ ॐ ह्सौं अस्त्राय फट् । अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥

तत्पश्चात् पुष्पाञ्जलि लेकर मूलमन्त्रका उच्चारण करके कहे—

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

—ऐसा कहकर पुष्पाञ्जलि दे और 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' (पूजित देवता तृप्त हों) यह उच्चारण करे । यह प्रथम आवरणकी पूजा हुई ।

तदनन्तर कमलके आठ दलोंमें पूर्वादि दिशाओंमें दक्षिणावर्तक्रमसे श्रीरामभक्त आदिकी पूजा करे । यथा——

ॐ रामभक्ताय नमः । रामभक्तश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ महातेजसे नमः । महातेजःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ कपिराजाय नमः । कपिराजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥३॥ ॐ महाबलाय नमः । महाबलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥४॥ ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः । द्रोणाद्रिहारकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥ ॐ मेरुपीठार्चनकारकाय नमः । मेरुपीठार्चनकारकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥ ॐ दक्षिणाशाभास्कराय नमः । दक्षिणाशाभास्करश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥७॥ ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः । सर्वविघ्ननिवारकश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥८॥

इस प्रकार नाम-मन्त्रोंसे पूजन करके पुष्पाञ्जलि दे । यह द्वितीय आवरणकी पूजा हुई ।

तत्पश्चात् आठ दलोंके अग्रभागोंमें पूर्वादिक्रमसे सुग्रीव आदिकी पूजा करे । यथा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ॐ सुग्रीवाय नमः । सुग्रीवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥१॥ ॐ अङ्गदाय नमः । अङ्गदश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥२॥ ॐ नीलाय नमः । नीलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ३ ॥ ॐ जाम्बवते नमः । जाम्बवच्छ्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ ४ ॥ ॐ नलाय नमः । नलश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥५॥ ॐ सुषेणाय नमः । सुषेणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥६॥ ॐ द्विविदाय नमः । द्विविद-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥७॥ ॐ मयन्दाय नमः । मयन्दश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥८॥

इस प्रकार आठ वानरोंकी पूजा करके पुष्पाञ्जलि दे। यह तीसरे आवरणकी पूजा हुई ।

तदनन्तर भूपुरचक्रकी दस दिशाओंमें इन्द्रादि दस दिक्पालोंकी पूर्ववत् पूजा करे । यथा—

(पूर्व दिशामें) ॐ इन्द्राय नमः । इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इसी प्रकार अन्य दिक्पालोंके लिये भी वाक्य-योजना कर लेनी चाहिये । इस प्रकार पूजा करके पुष्पाञ्जलि अर्पित करे । यह चतुर्थ आवरणकी पूजा हुई ।

तदनन्तर भूपुरचक्रके बाह्य भागमें पूर्वादि दिशाओंमें वज्र आदि आयुधोंकी पूजा करे । यथा—

ॐ वं वज्राय नमः । वज्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इत्यादि । इस तरह पूजा समाप्त करके पुष्पाञ्जलि दे । यह पञ्चम आवरणकी पूजा हुई ।

इस प्रकार आवरण-पूजा करनेके बाद धूप, दीप, नैवेद्य, मुख-शुद्धि और नमस्कार—इन पूजनोपचारोंद्वारा पूजन करके मन्त्रका जप करे । बारह हजार जप करनेसे इस मन्त्रका एक पुरश्चरण होता है । जपके पश्चात् उसका दशांश होम, होमका दशांश तर्पण और उसका दशांश अथवा बाईस ब्राह्मणोंको भोजन करानेका विधान है ।

श्रीहनुमदष्टादशाक्षरमन्त्र-प्रयोग

'मन्त्र-महोदधि'में यह मन्त्र इस प्रकार उल्लिखित है—'ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा ।' इस अष्टादशाक्षर-मन्त्रका प्रयोग स्नान एवं संध्यादि नित्यक्रियासे निवृत्त होकर करना चाहिये ।

विनियोग

ॐअस्य मन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, हनुमान् देवता, हुं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

इसके अनन्तर ऋष्यादिन्यास करे—

ऋष्यादिन्यास

ॐ ईश्वर-ऋषये नमः, शिरसि । ॐ अनुष्टुप्-छन्दसे नमः, मुखे । ॐ हनुमद्देवतायै नमः, हृदि । ॐ हुं बीजाय नमः, गुह्ये । ॐ स्वाहा-शक्तये नमः, पादयोः । ॐ विनियोगाय नमः, सर्वाङ्गे ।

इसके अनन्तर हृदयादिन्यास करे—

हृदयादिन्यास

ॐ आञ्जनेयाय नमः, हृदयाय नमः । ॐ रुद्रमूर्तये नमः, शिरसे स्वाहा । ॐ वायुपुत्राय नमः, शिखायै वषट् । ॐ अग्निगर्भाय नमः, कवचाय हुम् । ॐ रामदूताय नमः, नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ ब्रह्मास्त्र-निवारकाय नमः, अस्त्राय फट् ।

इस प्रकार अङ्गन्यास करनेके अनन्तर उपर्युक्त मन्त्रोंसे करन्यास भी कर लेना चाहिये ।

तत्पश्चात् हनुमानजीका ध्यान करे—

ध्यान

ॐ दहनतप्तसुवर्णसमप्रभं
भयहरं हृदये विहिताञ्जलिम् ।
श्रवणकुण्डलशोभिमुखाम्बुजं
नमत वानरराजमहाद्भुतम् ॥

अग्निमें तपाये हुए सुवर्णकी चटकीली आभा-सरीखी जिनकी शरीर-कान्ति है, जो भयको दूर करनेवाले हैं, जिनकी बद्धाञ्जलि हृदयपर विराजमान है, जिनका मुख-कमल कानोंमें झलमलाते हुए कुण्डलोंकी छटासे सुशोभित है, उन महान् अद्भुत रूपधारी वानरराज हनुमानजीको नमस्कार करना चाहिये ।

इसके अनन्तर सर्वतोभद्रमण्डलपर मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ-देवताओंकी स्थापना कर नौ पीठ-शक्तियोंकी पूजा करनी चाहिये । क्रमशः पूर्वकी ओरसे मन्त्रोंको पढ़ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाय और उनपर गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि एक ही साथ चढ़ाता जाय।

ॐ विमलायै नमः (पूर्वमें), ॐ उत्कर्षिण्यै नमः (अग्निकोणमें), ॐ ज्ञानायै नमः (दक्षिणमें), ॐ क्रियायै नमः (ईशानकोणमें), ॐ योगायै नमः (पश्चिममें), ॐ प्रह्व्यै नमः (वायुकोणमें), ॐ सत्यायै नमः (उत्तरमें), ॐ ईशानायै नमः (नैर्ऋत्यकोणमें), ॐ अनुग्रहायै नमः (मध्यमें)।

इसके पश्चात् सुवर्ण या अन्य किसी धातुसे निर्मित मूर्तिको ताम्रपात्रमें रखकर घृतसे लेप करके उसपर दूध या जलकी धारासे स्नान करावे, फिर पीठके मध्यमें उसकी स्थापना एवं प्राणप्रतिष्ठा करके मूलमन्त्रसे मूर्तिकी कल्पना कर पाद्य, अर्घ्य, नैवेद्य, पुष्प, गन्ध आदिसे पूजन करना चाहिये।

आवरण-पूजनके लिये सर्वप्रथम हाथमें फूल लेकर मूलमन्त्रका उच्चारण करके हनुमानजीकी आज्ञाके लिये निम्नलिखित मन्त्र पढ़े—

ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः।
अनुज्ञां हनुमन् देहि परिवारार्चनाय मे॥

इस प्रकार फूल चढ़ाकर 'पूजितास्तर्पिताः सन्तु' ऐसा कहे। तदनन्तर सबसे पहले षट्कोण-केसरमें अग्निकोणसे आरम्भकर क्रमशः छः अङ्गोंका पूजन मन्त्र पढ़कर इस प्रकार करे—

ॐ आञ्जनेयाय हृदयाय नमः, हृदयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (अग्निकोणमें), ॐ रुद्रमूर्तये शिरसे स्वाहा, शिरःश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (दक्षिणमें), ॐ वायुपुत्राय शिखायै वषट्, शिखाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (ईशानकोणमें), ॐ अग्निगर्भाय कवचाय हुम्, कवचश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (पश्चिममें), ॐ रामदूताय नेत्रत्रयाय वौषट्, नेत्रत्रयश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (वायुकोणमें), ॐ ब्रह्मास्त्रनिवारकाय अस्त्राय फट्, अस्त्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (उत्तरमें)।

इसके पश्चात् हाथमें पुष्प लेकर मूलमन्त्रका उच्चारण कर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए पुष्पाञ्जलि समर्पित करना चाहिये—

ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥

इसके अनन्तर अष्टदल कमलपर पूज्य और पूजक अर्थात् अपने इष्ट और स्वयंके मध्य पूर्व दिशाकी कल्पना करके पूर्वसे आरम्भ कर अन्य दिशाओंमें क्रमशः द्वितीयावरणका पूजन करे—

ॐ रामभक्ताय नमः (पूर्वमें), ॐ महातेजसे नमः (अग्निकोणमें), ॐ कपिराजाय नमः (दक्षिणमें), ॐ महाबलाय नमः (ईशानकोणमें), ॐ द्रोणाद्रिहारकाय नमः (पश्चिममें), ॐ मेरुपीठार्चनकारकाय नमः (वायुकोणमें), ॐ दक्षिणाशाभास्कराय नमः (उत्तरमें), ॐ सर्वविघ्ननिवारकाय नमः (नैर्ऋत्यमें)। इस प्रकार द्वितीयावरणका पूजन करके पुष्पाञ्जलि समर्पित करे।

तृतीयावरणका पूजन अष्टकोणके अग्रभागपर पहलेकी ही भाँति पूर्वसे आरम्भकर अन्य दिशाओंमें पूजन करते हुए निम्नोक्त प्रकारसे करना चाहिये—

ॐ सुग्रीवाय नमः (पूर्वसे अष्टकोणके अग्रभागपर), ॐ अङ्गदाय नमः (अग्निकोणमें), ॐ नीलाय नमः (दक्षिणमें), ॐ जाम्बवते नमः (ईशानकोणमें), ॐ नलाय नमः (पश्चिममें), ॐ सुषेणाय नमः (वायुकोणमें), ॐ द्विविदाय नमः (उत्तरमें), ॐ मयन्दाय नमः (नैर्ऋत्यमें)। इस प्रकार तृतीयावरणका पूजन समाप्त कर पुष्पाञ्जलि समर्पित करनी चाहिये।

सबके अन्तमें चतुर्थ आवरणके पूजनमें भूपुरपर अर्थात् सर्वतोभद्रके बाह्य भागपर दसों दिक्पालोंकी और उनके वज्रादि आयुधोंकी पूजा करके पुष्पाञ्जलि समर्पित करे। इस प्रकार आवरण-पूजनके समाप्त होनेपर धूप, दीप, नैवेद्यादिसे पूजन कर नमस्कार करे।

इसके अनन्तर मूलमन्त्रका पुरश्चरण-विधिसे लक्ष बार जप करना चाहिये। उसका दशांश अर्थात् दस हजार होम करना चाहिये। ऐसा करनेसे मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जानेपर मन्त्र-प्रयोगका साधन करना चाहिये।

अनुवादक—श्रीवैदेहीशरणजी शास्त्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीरामकृतं
श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीहनुमानजी जिनके इष्ट देवता हैं, उनको तो श्रीहनुमत्-सहस्रनामका पाठ प्रतिदिन करना ही चाहिये, परंतु साधारणतः कोई भी साधक इस सहस्रनामका पाठ करके लाभ उठा सकता है। यह हनुमत्सहस्रनाम 'बृहज्ज्योतिषार्णव'से लिया गया है।

देवाराधनामें सहस्रनामका पाठ एक विशेष स्थान रखता है। इस कारण प्रायः सभी देवताओंके पृथक्-पृथक् सहस्रनाम उपलब्ध हैं। प्रत्येक देवताके दो स्वरूप होते हैं—सगुण और निर्गुण। सगुण स्वरूपमें उनकी लीला, रूप, गुण, प्रभावका समावेश होता है और निर्गुण स्वरूपमें वे परब्रह्म हैं। अतः सहस्रनाममें इन दोनों रूपोंका दर्शन होता है। ब्रह्मस्वरूपमें प्रकृति-पुरुष, देवी-देवता, ऋषि-मुनि आदि सबका समावेश होता है। अतएव सहस्रनाममें उन सबका इष्ट देवताके नामके रूपमें उल्लेख किया जाता है। इष्ट देवता सर्वमय हैं, सर्वस्वरूप हैं; क्योंकि वे परब्रह्म हैं। श्रीहनुमत्सहस्रनाममें श्रीविष्णु भगवान्के प्रायः सभी अवतारोंको श्रीहनुमानजीके नामके रूपमें वर्णन किया गया है। ऋषियों, देवताओं तथा सृष्टिकी महान् ऐश्वर्यशाली विभूतियोंको श्रीहनुमानजीके नामके रूपमें वर्णन किया है। इस प्रकार सहस्रनामके माध्यमसे अनायास ही 'वासुदेवः सर्वम्' का पाठ साधकको पढ़ा दिया जाता है। दूसरे शब्दोंमें सहस्रनाममें जो नानात्व है, वह एकत्वमें अन्तर्हित है। एक सच्चिदानन्दघन परमात्मा ही राम, कृष्ण, विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य, गणेश, हनुमान आदि भिन्न-भिन्न रूपोंमें प्रकट होकर विभिन्न लीलाएँ करते हैं। साधक अपनी-अपनी रुचि, योग्यता, विश्वास एवं श्रद्धाके अनुसार उनमेंसे किसी एक रूपकी उपासना कर अन्तमें उसी एक परब्रह्म परमात्माको प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक नामके उच्चारणके साथ साधकको अपने आराध्यके एक विशेष स्वरूप, गुण, प्रभाव एवं लीलाका स्मरण होता है। इष्टदेवके विभिन्न नामोंके साथ विभिन्न लीलाओंका स्मरण, चिन्तन एवं कीर्तन कर साधक भाव-विभोर होता रहे, सहस्रनामोंके उल्लेखका यही रहस्य प्रतीत होता है। सहस्रनाम-का पाठ नैष्ठिक ब्राह्मणसे या किसी साधकसे करवाकर उसका श्रवण करनेसे भी मनोवाञ्छित फल प्राप्त होता है। मुख्यरूपसे मंगलवार और शनिवार—ये दोनों दिन श्रीहनुमानजीके पूजा-अनुष्ठानके लिये विशेष मान्य हैं। श्रीहनुमानजीके या श्रीरामजीके विग्रहके सामने इस सहस्रनामका पाठ श्रद्धा-प्रेमपूर्वक नियमितरूपसे करना चाहिये।

इस स्तोत्रका सर्वाधिक वैशिष्ट्य यह है कि स्वयं श्रीरामचन्द्रजीने इस हनुमत्सहस्रनामका पाठ करके लाभ उठाया है, यह इसकी भूमिकासे ही ज्ञात होता है तथा इसकी फलश्रुतिसे इसकी विशेष महिमा जानी जा सकती है। सहस्रनामके प्रत्येक नामका अर्थ समझते हुए निष्कामभावसे श्रद्धा-प्रेमपूर्वक पाठ करनेपर मनुष्यको परम शान्ति और परमानन्दस्वरूप परमपदकी प्राप्ति तथा परम दुर्लभ भगवत्प्रेम-की प्राप्ति भी हो सकती है। इसीलिये यहाँ इस स्तोत्रको अर्थसहित प्रकाशित किया जा रहा है। एक-एक नामको चतुर्थी विभक्तिके साथ जोड़कर 'नमः' पदके साथ पढ़कर पुष्प अर्पण करनेका विधान भी पाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाता है। जैसे 'श्रीहनुमते नमः', 'श्रीश्रीप्रदाय नमः', 'श्रीवायुपुत्राय नमः'—इत्यादि। अस्तु, जिस विधिसे हो सके, वैसे ही साधकको अपने इष्ट देवताकी कृपा-प्राप्तिके लिये समाहित चित्तसे श्रद्धा-प्रेमपूर्वक सहस्रनामका पाठ करना चाहिये।—सम्पादक

ऋषय ऊचुः

ऋष्ये लोहगिरिं प्राप्तः सीताविरहकातरः।
भगवान् किं व्यधाद् रामस्तत्सर्वं ब्रूहि सत्वरम् ॥ १ ॥

ऋषिगण बोले—महर्षि वाल्मीकिजी ! सीताजीके विरहमें कातर भगवान् श्रीरामचन्द्रजीने लोहगिरि (ऋष्यमूक पर्वत) पर जाकर क्या किया ? वह सब वृत्तान्त अविलम्ब बतलानेकी कृपा करें ॥ १ ॥

वाल्मीकिरुवाच

मायामानुषदेहोऽयं ददर्शाग्रे कपीश्वरम्।
हनुमन्तं जगत्स्वामी बालार्कसमतेजसम् ॥ २ ॥
स सत्वरं समागम्य साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च।
कृताञ्जलिपुटो भूत्वा हनुमान् राममब्रवीत् ॥ ३ ॥

वाल्मीकिजीने कहा—अपनी मायाशक्तिके द्वारा मानव-विग्रह धारण करनेवाले, जगदीश्वर भगवान् श्रीरामने उदयकालीन सूर्यके समान तेजस्वी महाकपीश्वर श्रीहनुमानजीको अपने सामने देखा। तब श्रीहनुमानजीने शीघ्र भगवान् श्रीरामके पास जाकर, साष्टाङ्ग प्रणाम किया और हाथ जोड़कर इस प्रकार कहने लगे ॥ २-३ ॥

श्रीहनुमानुवाच

धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि दृष्ट्वा त्वत्पादपङ्कजम्।
योगिनामप्यगम्यं च संसारभयनाशनम् ॥ ४ ॥
पुरुषोत्तम देवेश किं कर्तव्यं निवेद्यताम्।

श्रीहनुमानजी बोले—पुरुषोत्तम ! आप योगियोंके लिये भी अगम्य हैं तथा संसारके भयका नाश करनेवाले हैं। आज मैं आपके चरणकमलका दर्शन कर धन्य और कृतकृत्य हो रहा हूँ। देवेश ! अब मेरे लिये जो कार्य हो, उसे बतलाइये ॥ ४½ ॥

श्रीराम उवाच

जनस्थानं कपिश्रेष्ठ कोऽप्यागत्य विदेहजाम् ॥ ५ ॥
हृतवान् विप्रसंवेशो मारीचानुगते मयि।
गवेष्यः साम्प्रतं वीर जानकीहरणे परः ॥ ६ ॥
त्वया गम्यो न को देशस्त्वं च ज्ञानवतां वरः।
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितावयवः प्रभुः ॥ ७ ॥

श्रीरामजी बोले—कपिश्रेष्ठ हनुमान ! जब मैं मारीचको मारनेके लिये उसके पीछे गया तो ब्राह्मण-वेषधारी कोई दुष्ट जनस्थानमें आकर सीताको चुरा ले गया। वीर ! अब जानकीको चुरानेवाले उस शत्रुकी खोज होनी चाहिये। कौन-सा ऐसा देश है, जहाँ तुम नहीं जा सकते। तुम ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ हो तथा सात करोड़ महामन्त्रोंसे अभिमन्त्रित शरीरके कारण तुम सर्वथा समर्थ हो ॥ ५–७ ॥

ऋषय ऊचुः

को मन्त्रः किं च तद्ध्यानं तन्नो ब्रूहि यथार्थतः।
कथासुधारसं पीत्वा न तृप्यामः परंतप ॥ ८ ॥

ऋषिगण बोले—श्रीहनुमानजीका मन्त्र क्या है, उनके ध्यानका स्वरूप क्या है, वह सब हमको ठीक-ठीक बतलाइये। परम तपस्वी वाल्मीकिजी ! आपके द्वारा वर्णित कथारूपी अमृत-रसका पान कर हमलोगोंको तृप्ति नहीं हो रही है ॥ ८ ॥

वाल्मीकिरुवाच

मन्त्रं हनुमतो विद्धि भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।
महारिष्टमहापापमहादुःखनिवारणम् ॥ ९ ॥

वाल्मीकिजीने कहा—सप्तकोटि महामन्त्रोंमें श्रीहनुमानजीका यह मन्त्र भोग और मोक्ष प्रदान करनेवाला है, यह सब प्रकारके महान्-से-महान् क्लेश, पाप, ग्रह-पीड़ा तथा महान् दुःखोंका निवारण करनेवाला है ॥ ९ ॥

यह मन्त्र इस प्रकार है—

अथ मन्त्रः

'ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय लङ्काविध्वंसनायाञ्जनीगर्भसम्भूताय शाकिनीडाकिनीध्वंसनाय किलिकिलिबुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा ॥ १० ॥

अन्यं हनुमतो मन्त्रं सहस्रनामसंज्ञितम्।
जानन्तु ऋषयः सर्वे महादुरितनाशनम् ॥ ११ ॥

ऋषिगण ! इसके अतिरिक्त एक दूसरा श्रीहनुमानजीका सहस्रनाम-संज्ञक मन्त्र है, जिसे आपलोग महापापोंका नाश करनेवाला समझें ॥ ११ ॥

यस्य संस्मरणात् सीता लब्धा राज्यमकण्टकम्।
विभीषणाय च ददावात्मानं लब्धवान् मया ॥ १२ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसके जपसे श्रीरामने सीताको प्राप्त किया तथा लंकाका निष्कण्टक राज्य विभीषणको प्रदान किया और मेरेद्वारा आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किया; अर्थात् उन्होंने यह समझा कि वे पूर्णब्रह्म हैं, मनुष्य नहीं ॥ १२ ॥

ऋषय ऊचुः

सहस्रनामसन्मन्त्रं दुःखाघौघनिवारणम्।
वाल्मीके ब्रूहि नस्तूर्णं शुश्रूषामः कथां पराम् ॥१३॥

ऋषिगण बोले—वाल्मीकिजी ! हमलोग आपकी श्रेष्ठ कथाको बड़े ध्यानसे सुन रहे हैं। आप कृपया समस्त दुःख एवं पापपुञ्जको दूर करनेवाले हनुमत्सहस्रनामरूपी मन्त्रका शीघ्र ही वर्णन करें ॥ १३ ॥

वाल्मीकिरुवाच

शृण्वन्तु ऋषयः सर्वे सहस्रनामकं स्तवम्।
स्तवानामुत्तमं दिव्यं सदर्थस्य प्रदायकम् ॥१४॥

वाल्मीकिजी बोले—ऋषियो ! आपलोग ध्यानसे हनुमत्सहस्रनाम-स्तोत्रको सुनिये। यह स्तवोंमें उत्तम तथा सत्प्रयोजनको सिद्ध करनेवाला दिव्य स्तोत्र है ॥ १४ ॥

इसका विनियोग इस प्रकार है—

अथ विनियोगः

'ॐ अस्य श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीरामचन्द्र ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीहनुमान् महारुद्रो देवता, ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां बीजम्, श्रीम्-इति शक्तिः, किलिकिलिबुबुकारेणेति कीलकम्, लङ्काविध्वंसनायेति कवचम्, मम सर्वोपद्रवशान्त्यर्थे सर्वकामसिद्ध्यर्थे च जपे विनियोगः।'

इस हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र-मन्त्रके ऋषि भगवान् श्रीरामचन्द्रजी हैं, इसका छन्द अनुष्टुप् है, महारुद्र श्रीहनुमानजी इसके देवता हैं, ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां बीज हैं, श्रीं शक्ति है, किलिकिलिबुबुकारेण कीलक है, लङ्काविध्वंसनाय कवच है। मेरे सारे उपद्रवोंकी शान्तिके लिये तथा सारी कामनाओंकी सिद्धिके लिये जपमें इसका विनियोग है।

(विनियोग-विधि—दाहिने हाथमें जल लेकर '**ॐ अस्य श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य**'से प्रारम्भ करके '**जपे विनियोगः**'तक सारा विनियोग-मन्त्र पढ़कर भूमिपर जल छोड़ दे।)

अथ न्यासः

ऋष्यादिन्यासः—'**ॐ श्रीरामचन्द्रऋषये नमः, शिरसि**' (पढ़कर सिरका स्पर्श करे)। '**अनुष्टुप्-छन्दसे नमः, मुखे**' (पढ़कर मुखका स्पर्श करे)। '**ह्रीं बीजाय नमः, गुह्ये**' (पढ़कर गुप्त अङ्गका स्पर्श करे)। **श्रीहनुमते कीलकाय नमः, नाभौ**' (पढ़कर नाभिका स्पर्श करे)। '**इष्टार्थे विनियोगाय नमः, अञ्जलौ**' (पढ़कर अञ्जलिका स्पर्श करे)। इति ऋष्यादिन्यासः।

करादिन्यासः—**ॐ ऐं ह्रीं हनुमते रामदूताय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः** (कहकर दोनों अङ्गुष्ठोंके बीचमें तर्जनीको लगावे)। **ॐ लङ्काविध्वंसनाय तर्जनीभ्यां नमः** (दोनों तर्जनीसे अङ्गुष्ठोंको लगावे)। **ॐ अञ्जनीगर्भसम्भूताय मध्यमाभ्यां नमः** (दोनों मध्यमा अङ्गुलियोंको अङ्गुष्ठसे लगावे), **ॐ शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय अनामिकाभ्यां नमः** (पढ़कर दोनों अनामिका अङ्गुलियोंको अङ्गुष्ठसे स्पर्श करे)। **ॐ किलिकिलिबुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः** (पढ़कर दोनों कनिष्ठिका अङ्गुलियोंको अङ्गुष्ठसे स्पर्श करे)। **ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः** (पढ़कर दोनों हथेलियों और हाथोंके पृष्ठभागोंको परस्पर स्पर्श करे)।

हृदयादिन्यासः—**ॐ ऐं ह्रीं श्रीहनुमते रामदूताय हृदयाय नमः** (कहकर पाँचों अङ्गुलियोंसे हृदयका स्पर्श करे), **ॐ लङ्काविध्वंसनाय शिरसे स्वाहा** (कहकर शिरका स्पर्श करे), **ॐ अञ्जनीगर्भसम्भूताय शिखायै वषट्** (कहकर शिखाका स्पर्श करे), **ॐ शाकिनीडाकिनीविध्वंसनाय कवचाय हुम्** (कहकर दाहिने हाथकी पाँचों अङ्गुलियोंसे बायें कंधेका और बायें हाथकी अङ्गुलियोंसे दायें कंधेका स्पर्श करे), **ॐ किलिकिलिबुबुकारेण विभीषणाय हनुमद्देवाय नेत्रत्रयाय वौषट्** (कहकर दोनों नेत्र तथा ललाटका स्पर्श करे), **ॐ ह्रीं श्रीं ह्रौं ह्रां अस्त्राय फट् स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः** (कहकर दाहिने हाथको आगेसे लेकर बायें कंधेसे पीठपर घुमाकर ताली बजाये)।

अथ ध्यानम्

प्रतप्तस्वर्णवर्णाभं संरक्तारुणलोचनम्।
सुग्रीवादियुतं ध्यायेत् पीताम्बरसमावृतम् ॥
गोष्पदीकृतवारीशं पुच्छमस्तकमीश्वरम्।
ज्ञानमुद्रां च बिभ्राणं सर्वालंकारभूषितम् ॥

जो तपे हुए सुवर्णके समान कान्तियुक्त हैं, जिनके नेत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अत्यन्त लाल हैं, जो पीताम्बर धारण किये हैं, समुद्रको गौके खुरके समान सहज ही लाँघ जाते हैं, अपनी पूँछको मस्तकके ऊपर उठाये रहते हैं, सुग्रीव आदि वानर-वृन्दसे युक्त, सब प्रकारके अलंकारोंसे भूषित, ज्ञान-मुद्राधारी, परमात्मस्वरूप श्रीहनुमानजीका ध्यान करे ।

अथ सहस्रनाम

श्रीरामचन्द्र उवाच—

हनुमाञ्छ्रीप्रदो वायुपुत्रो रुद्रोऽनघोऽजरः ।
अमृत्युर्वीरवीरश्च ग्रामवासो जनाश्रयः ॥ १ ॥

श्रीरामचन्द्रजी बोले—१. हनुमान्—जिनकी ठुड्डी विशाल और टेढ़ी है, २. श्रीप्रदः—शोभा प्रदान करनेवाले, ३. वायुपुत्रः—पवनदेवके पुत्र, ४. रुद्रः—जो रुद्रके अवतार हैं, ५. अनघः—निष्पाप हैं, ६. अजरः—जरा (बुढ़ापा) से रहित हैं, ७ अमृत्युः—जिनकी मृत्यु नहीं हो, ८. वीरवीरः—वीरोंमें परम वीर, ९. ग्रामवासः—जो गाँवोंमें वास करते हैं, १०. जनाश्रयः—जो लोगोंको आश्रय देते हैं ॥ १ ॥

धनदो निर्गुणोऽकायो वीरो निधिपतिर्मुनिः ।
पिङ्गाक्षो वरदो वाग्मी सीताशोकविनाशनः ॥ २ ॥

११. धनदः—धन देनेवाले, १२. निर्गुणः—सत्त्वादि गुणोंसे रहित, १३. अकायः—प्राकृत देहसे रहित, १४. वीरः—रणभूमिमें शत्रुओंको पछाड़नेवाले, १५. निधिपतिः—नवनिधियोंके स्वामी, १६. मुनिः—वेद-शास्त्रोंके तत्त्वको जाननेवाले, १७. पिङ्गाक्षः—पीली-पीली आँखोंवाले, १८. वरदः—अभीष्ट वर प्रदान करनेवाले, १९. वाग्मी—प्रशस्त वक्ता, २०. सीताशोकविनाशनः—सीताके शोकको मिटानेवाले ॥ २ ॥

शिवः सर्वः परोऽव्यक्तो व्यक्ताव्यक्तो रसाधरः ।
पिङ्गकेशः पिङ्गरोमा श्रुतिगम्यः सनातनः ॥ ३ ॥

२१. शिवः—मङ्गलमय, २२. सर्वः—सर्वस्वरूप, २३. परः—प्रकृतिसे अतीत, २४. अव्यक्तः—जिनका स्वरूप अव्यक्त है, २५. व्यक्ताव्यक्तः—जो प्रेमी भक्तोंके सामने व्यक्त हैं और भक्तिशून्य जनके लिये अव्यक्त हैं, २६. रसाधरः—पृथ्वीको धारण करते हैं, २७. पिङ्गकेशः—पीले बालवाले, २८. पिङ्गरोमा—पीले रोमवाले, २९. श्रुतिगम्यः—श्रुतियोंके द्वारा जो गम्य हैं, प्राप्य हैं, ३०. सनातनः—सदा रहनेवाले ॥ ३ ॥

अनादिर्भगवान् देवो विश्वहेतुर्निरामयः ।
आरोग्यकर्ता विश्वेशो विश्वनाथो हरीश्वरः ॥ ४ ॥

३१. अनादिः—उनका कोई आदि नहीं, अतः वे अनादि हैं, ३२. भगवान्—ऐश्वर्यवान्, ३३. देवः—अतिदीप्तरूप, ३४. विश्वहेतुः—विश्वके कारण, ३५. निरामयः—रोगरहित, ३६. आरोग्यकर्ता—नीरोग करनेवाले, ३७. विश्वेशः—विश्वके ईश, ३८. विश्वनाथः—विश्वके स्वामी, ३९. हरीश्वरः—वानरोंके स्वामी ॥ ४ ॥

भर्गो रामो रामभक्तः कल्याणप्रकृतिः स्थिरः ।
विश्वम्भरो विश्वमूर्तिर्विश्वाकारोऽथ विश्वपः ॥ ५ ॥

४०. भर्गः—तेजःस्वरूप, ४१. रामः—जिनमें भक्तलोग रमण करते हैं, ४२. रामभक्तः—रामके भक्त, ४३. कल्याणप्रकृतिः—कल्याण करना जिनका स्वभाव है, ४४. स्थिरः—पर्वतके समान अचल, ४५. विश्वम्भरः—विश्वका भरण-पोषण करनेवाले, ४६. विश्वमूर्तिः—विश्व जिनकी मूर्ति है, ४७. विश्वाकारः—जो सर्वस्वरूप हैं, ४८. विश्वपः—जो विश्वका पालन करते हैं ॥ ५ ॥

विश्वात्मा विश्वसेव्योऽथ विश्वो विश्वहरो रविः ।
विश्वचेष्टो विश्वगम्यो विश्वध्येयः कलाधरः ॥ ६ ॥

४९. विश्वात्मा—जो विश्वकी आत्मा हैं, ५०. विश्वसेव्यः—सारे विश्वके सेवनीय, ५१. विश्वः—जो विश्व हैं, ५२. विश्वहरः—विश्वके हर्त्ता, ५३. रविः—सूर्यस्वरूप, ५४. विश्वचेष्टः—विश्वके हितमें चेष्टा करनेवाले, ५५. विश्वगम्यः—विश्वके प्राणिमात्रके प्राप्त करने योग्य, ५६. विश्वध्येयः—सबके ध्यान करने योग्य, ५७. कलाधरः—कलाओंको धारण करनेवाले ॥ ६ ॥

प्लवंगमः कपिश्रेष्ठो ज्येष्ठो वैद्यो वनेचरः ।
बालो वृद्धो युवा तत्त्वं तत्त्वगम्यः सखा ह्यजः ॥ ७ ॥

५८. प्लवंगमः—उछलते-कूदते चलनेवाले, ५९. कपिश्रेष्ठः—वानरोंमें श्रेष्ठ, ६०. ज्येष्ठः—महान्, ६१. वैद्यः—भवरोगके चिकित्सक, ६२. वनेचरः—सीताजीकी खोजमें वन-वन भटकनेवाले, ६३. बालः—बालकके समान निश्चल अथवा बालरूप हो सुरसाके मुँहमें प्रवेश करनेवाले, ६४. वृद्धः—बढ़कर पर्वताकार होनेवाले, ६५. युवा—सदा तरुण-स्वरूप, ६६. तत्त्वम्—संसारके कारणस्वरूप, ६७. तत्त्वगम्यः—तत्त्वरूपमें जाननेयोग्य, ६८. सखा—सबके सखा, ६९. अजः—अजन्मा ॥ ७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अञ्जनासूनुरव्यग्रो ग्रामख्यातो धराधरः ।
भूर्भुवः स्वर्महर्लोको जनलोकस्तपोऽव्ययः ॥ ८ ॥

७०. अञ्जनासूनुः—माता अञ्जनाके पुत्र, ७१. अव्यग्रः—कभी व्यग्र न होनेवाले, ७२. ग्रामख्यातः—गाँव-गाँवमें प्रसिद्ध, ७३. धराधरः—पृथ्वीको धारण करनेवाले—पर्वताकार, ७४. भूः—पृथ्वीलोकस्वरूप, ७५. भुवः—भुवर्लोकस्वरूप, ७६. स्वः—स्वर्गलोकस्वरूप, ७७. महर्लोकः—महर्लोकस्वरूप, ७८. जनलोकः—जनलोकस्वरूप, ७९. तपः—तपोलोकस्वरूप, ८०. अव्ययः—अविनाशीस्वरूप ॥ ८ ॥

सत्यमोङ्कारगम्यश्च प्रणवो व्यापकोऽमलः ।
शिवधर्मप्रतिष्ठाता रामेष्टः फाल्गुनप्रियः ॥ ९ ॥

८१. सत्यम्—संतोंके लिये हितकर, ८२. ॐकारगम्यः—ॐकारके द्वारा प्राप्त होनेवाले, ८३. प्रणवः—ॐकारस्वरूप, ८४. व्यापकः—सर्वव्यापी, ८५. अमलः—दोषरहित, ८६. शिवधर्मप्रतिष्ठाता—पाशुपत अथवा कल्याण-धर्मको प्रतिष्ठित करनेवाले, ८७. रामेष्टः—जिनके श्रीराम इष्टदेव हैं, ८८. फाल्गुनप्रियः—जो अर्जुनके प्रिय हैं ॥ ९ ॥

गोष्पदीकृतवारीशः पूर्णकामो धरापतिः ।
रक्षोघ्नः पुण्डरीकाक्षः शरणागतवत्सलः ॥१०॥

८९. गोष्पदीकृतवारीशः—समुद्रको जलपूरित गोपदके समान लाँघनेवाले, ९०. पूर्णकामः—जिनकी सारी कामनाएँ पूर्ण हैं, ९१. धरापतिः—पृथ्वीके स्वामी, ९२. रक्षोघ्नः—राक्षसोंको मारनेवाले, ९३. पुण्डरीकाक्षः—श्वेत कमलके समान नेत्रवाले, ९४. शरणागतवत्सलः—शरणमें आये हुएपर कृपा करनेवाले ॥ १० ॥

जानकीप्राणदाता च रक्षःप्राणापहारकः ।
पूर्णः सत्यः पीतवासा दिवाकरसमप्रभः ॥११॥

९५. जानकीप्राणदाता—जानकीको जीवन प्रदान करनेवाले, ९६. रक्षःप्राणापहारकः—राक्षसोंका प्राण-नाश करनेवाले, ९७. पूर्णः—पूर्णकाम, ९८. सत्यः—सत्यस्वरूप, ९९. पीतवासाः—पीला वस्त्र धारण करनेवाले, १००. दिवाकरसमप्रभः—सूर्यके समान तेजस्वी ॥ ११ ॥

देवोद्यानविहारी च देवताभयभञ्जनः ।
भक्तोदयो भक्तलब्धो भक्तपालनतत्परः ॥१२॥

१०१. देवोद्यानविहारी—देवताओंके नन्दन-वनमें विहार करनेवाले, १०२. देवताभयभञ्जनः—देवताओंके भयको नष्ट करनेवाले, १०३. भक्तोदयः—भक्तोंकी उन्नति करनेवाले, १०४. भक्तलब्धः—भक्तोंके द्वारा प्राप्त, १०५. भक्तपालनतत्परः—भक्तोंकी रक्षामें तत्पर ॥ १२ ॥

द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्तिराक्षसमारकः ।
अक्षघ्नो रामदूतश्च शाकिनीजीवहारकः ॥१३॥

१०६. द्रोणहर्ता—द्रोणाचलको उखाड़कर लानेवाले, १०७. शक्तिनेता—शक्तियोंके संचालक, १०८. शक्तिराक्षसमारकः—शक्तिशाली राक्षसोंको मारनेवाले, १०९. अक्षघ्नः—अक्षकुमारको मारनेवाले, ११०. रामदूतः—भगवान् श्रीरामचन्द्रके दूत, १११. शाकिनीजीवहारकः—शाकिनीका प्राण हरण करनेवाले ॥ १३ ॥

बुबुकारहतारातिर्गर्वपर्वतमर्दनः ।
हेतुस्त्वहेतुः प्रांशुश्च विश्वभर्त्ता जगद्गुरुः ॥१४॥

११२. बुबुकारहताराति:—बुबुकार-ध्वनिसे शत्रुका नाश करनेवाले, ११३. गर्वपर्वतमर्दनः—गर्वरूपी पर्वतको चूर-चूर करनेवाले, ११४. हेतुः—कारणरूप, ११५. अहेतुः—कारणरहित, ११६. प्रांशुः—बहुत उन्नत, ११७. विश्वभर्त्ता—विश्वका भरण-पोषण करनेवाले, ११८. जगद्गुरुः—सारे संसारके गुरु ॥ १४ ॥

जगन्नेता जगन्नाथो जगदीशो जनेश्वरः ।
जगद्धितो हरिः श्रीशो गरुडस्मयभञ्जनः ॥१५॥

११९. जगन्नेता—संसारके नेता, १२०. जगन्नाथः—संसारके स्वामी, १२१. जगदीशः—जगत्‌के ईश, १२२. जनेश्वरः—भक्तोंके ईश्वर, १२३. जगद्धितः—संसारका हित करनेवाले, १२४. हरिः—पापोंको हर लेनेवाले, १२५. श्रीशः—शोभाके स्वामी, १२६. गरुडस्मयभञ्जनः—गरुड़के गर्वको नष्ट करनेवाले ॥ १५ ॥

पार्थध्वजो वायुपुत्रोऽमितपुच्छोऽमितविक्रमः ।
ब्रह्मपुच्छः परब्रह्मपुच्छो रामेष्टकारकः ॥१६॥

१२७. पार्थध्वजः—अर्जुनके ध्वज-चिह्न, १२८. वायुपुत्रः—वायुके पुत्र, १२९. अमितपुच्छः—अपरिमित पूँछवाले, १३०. अमितविक्रमः—असीम पराक्रमवाले, १३१. ब्रह्मपुच्छः—जिनकी पूँछ वर्द्धनशील है, १३२. परब्रह्मपुच्छः—जिनका परब्रह्म आधार है, १३३. रामेष्टकारकः—जो श्रीरामके अभीष्ट कार्यको सिद्ध करते हैं ॥ १६ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुग्रीवादियुतो ज्ञानी वानरो वानरेश्वरः ।
कल्पस्थायी चिरंजीवी तपनश्च सदाशिवः ॥१७॥

१३४. सुग्रीवादियुतः—सुग्रीवादि वानरोंसे युक्त, १३५. ज्ञानी—ज्ञानसम्पन्न, १३६. वानरः—वनमें रहनेवालोंकी रक्षा करनेवाले, १३७. वानरेश्वरः—वानरोंके स्वामी, १३८. कल्पस्थायी—कल्पपर्यन्त रहनेवाले, १३९. चिरंजीवी—चिरकालतक जीवित रहनेवाले, १४०. तपनः—सूर्य-सदृश तेजस्वी, १४१. सदाशिवः—सदा कल्याण-स्वरूप ॥ १७ ॥

संनतः सद्गतिर्भुक्तिमुक्तिदः कीर्तिदायकः ।
कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैव समुद्रः श्रीप्रदः शिवः ॥१८॥

१४२. संनतः—विद्याके द्वारा जो सम्यक् रूपसे विनयावनत हैं, १४३. सद्गतिः—संतोंकी गति हैं, १४४. भुक्तिमुक्तिदः—भुक्ति और मुक्तिको देनेवाले, १४५. कीर्तिदायकः—कीर्ति प्रदान करनेवाले, १४६. कीर्तिः—कीर्तिस्वरूप, १४७. कीर्तिप्रदः—यशस्वी बनानेवाले, १४८. समुद्रः—जो श्रीरामकी मुद्रा या मुद्रिका साथ लिये हुए हैं, १४९. श्रीप्रदः—बुद्धि या ऐश्वर्य प्रदान करनेवाले, १५०. शिवः—संसारका उच्छेद करनेवाले ॥१८॥

भक्तोदयो भक्तगम्यो भक्तभाग्यप्रदायकः ।
उदधिक्रमणो देवः संसारभयनाशनः ॥१९॥

१५१. भक्तोदयः—भक्तके लिये प्रकट होनेवाले, १५२. भक्तगम्यः—भक्तद्वारा प्राप्य होनेवाले, १५३. भक्त-भाग्यप्रदायकः—भक्तके लिये भाग्यप्रदायक, १५४. उदधि-क्रमणः—समुद्र लाँघनेवाले, १५५. देवः—देवस्वरूप, १५६. संसारभयनाशनः—संसारके भयका नाश करने-वाले ॥ १९ ॥

वार्धिबन्धनकृद् विश्वजेता विश्वप्रतिष्ठितः ।
लङ्कारिः कालपुरुषो लङ्केशगृहभञ्जनः ॥२०॥

१५७. वार्धिबन्धनकृत्—समुद्रपर सेतु बँधानेवाले, १५८. विश्वजेता—विश्वको जीतनेवाले, १५९. विश्वप्रतिष्ठितः—विश्वमें प्रतिष्ठित, १६०. लङ्कारिः—लंकाके शत्रु, १६१. काल-पुरुषः—कालरूपी पुरुष, १६२. लङ्केशगृहभञ्जनः—रावणके महलोंको नष्ट करनेवाले ॥ २० ॥

भूतावासो वासुदेवो वसुस्त्रिभुवनेश्वरः ।
श्रीरामरूपः कृष्णस्तु लङ्काप्रासादभञ्जकः ॥ २१ ॥

१६३. भूतावासः—भूतोंके आवास-स्थल हैं, १६४. वासुदेवः—विश्वमें व्यापक, १६५. वसुः—वसुस्वरूप, १६६. त्रिभुवनेश्वरः—त्रिभुवनके स्वामी, १६७. श्रीरामरूपः—जो श्रीराम-तुल्य हैं, १६८. कृष्णः—चित्तको आकर्षित करनेवाले, १६९. लङ्काप्रासादभञ्जकः—लंकाके राक्षसोंके महलोंका विध्वंस करनेवाले ॥ २१ ॥

कृष्णः कृष्णस्तुतः शान्तः शान्तिदो विश्वपावनः ।
विश्वभोक्ताथ मारघ्नो ब्रह्मचारी जितेन्द्रियः ॥ २२ ॥

१७०. कृष्णः—कृष्णस्वरूप, १७१. कृष्णस्तुतः—कृष्णके द्वारा स्तुति किये गये, १७२. शान्तः—शान्तस्वरूप, १७३. शान्तिदः—शान्ति प्रदान करनेवाले, १७४. विश्वपावनः—विश्वको पवित्र करनेवाले, १७५. विश्वभोक्ता—सारे भोग्य पदार्थोंके भोक्ता, १७६. मारघ्नः—कामदेवका हनन करनेवाले, १७७. ब्रह्मचारी—आजन्म ब्रह्मचारी, १७८. जितेन्द्रियः—जिन्होंने इन्द्रियोंको जीत लिया है ॥ २२ ॥

ऊर्ध्वगो लाङ्गुली माली लाङ्गूलाहतराक्षसः ।
समीरतनुजो वीरो वीरतारो जयप्रदः ॥ २३ ॥

१७९. ऊर्ध्वगः—आकाश-मार्गसे गमन करनेवाले, १८०. लाङ्गुली—बड़ी पूँछवाले, १८१. माली—मालावाले, १८२. लाङ्गूलाहतराक्षसः—पूँछसे राक्षसोंको मार डालनेवाले, १८३. समीरतनुजः—वायुदेवताके पुत्र, १८४. वीरः—शौर्यशाली, १८५. वीरतारः—वीर शत्रुओंको मारकर तारनेवाले, १८६. जयप्रदः—जय प्रदान करनेवाले ॥ २३ ॥

जगन्मङ्गलदः पुण्यः पुण्यश्रवणकीर्तनः ।
पुण्यकीर्तिः पुण्यगतिर्जगत्पावनपावनः ॥ २४ ॥

१८७. जगन्मङ्गलदः—जगत्को मङ्गल प्रदान करनेवाले, १८८. पुण्यः—भगवन्नाम-संकीर्तनसे विश्वको पवित्र करनेवाले, १८९. पुण्यश्रवणकीर्तनः—जिनकी कथाओंका श्रवण-कीर्तन पुण्यप्रद है, १९०. पुण्यकीर्तिः—जिनका यशोगान पुण्यप्रद है, १९१. पुण्यगतिः—जिनकी उपासना पुण्यका फल है, १९२. जगत्पावनपावनः—जो जगत्को पवित्र करनेवालोंको पावन बनाते हैं ॥ २४ ॥

देवेशो जितमारोऽथ रामभक्तिविधायकः ।
ध्याता ध्येयो लयः साक्षी चेता चैतन्यविग्रहः ॥२५॥

१९३. देवेशः—देवताओंके स्वामी, १९४. जितमारः—कामदेवको जीतनेवाले, १९५. रामभक्तिविधायकः—श्रीराम-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भक्तिका विधान करनेवाले, १९६. ध्याता—रात-दिन श्रीरामका ध्यान करनेवाले, १९७. ध्येयः—मुनियोंके द्वारा ध्येय, १९८. लयः—अपनेमें अखिल चराचरको विलीन करनेवाले, १९९. साक्षी—सर्वद्रष्टा, २००. चेता—सर्वज्ञ, २०१. चैतन्यविग्रहः—चिन्मय शरीरवाले ॥ २५ ॥

ज्ञानदः प्राणदः प्राणो जगत्प्राणः समीरणः ।
विभीषणप्रियः शूरः पिप्पलाश्रयसिद्धिदः ॥२६॥

२०२. ज्ञानदः—ब्रह्मज्ञानके दाता, २०३. प्राणदः—प्राण (बल) प्रदान करनेवाले, २०४. प्राणः—जिससे प्राणी प्राणवाले हैं, अर्थात् प्राणस्वरूप, २०५. जगत्प्राणः—जगत्के प्राण, २०६. समीरणः—वायुरूप, २०७. विभीषणप्रियः—विभीषणके प्यारे, २०८. शूरः—शत्रुओंको रणमें सुलानेवाले, २०९. पिप्पलाश्रयसिद्धिदः—(आनन्दरामायणके मनोहरकाण्डके अनुसार) अश्वत्थको गृह मानकर साधना करनेवाले साधकको सारी सिद्धियाँ प्रदान करनेवाले ॥ २६ ॥

सिद्धः सिद्धाश्रयः कालो महोक्षः कालजान्तकः ।
लङ्केशनिधनस्थायी लङ्कादाहक ईश्वरः ॥२७॥

२१०. सिद्धः—सिद्धस्वरूप, २११. सिद्धाश्रयः—सिद्धोंके आश्रय, २१२. कालः—यमरूप, २१३. महोक्षः—महान् धर्मरूपी बैलवाले भगवान् शिवके स्वरूप, २१४. कालजान्तकः—कालसे उत्पन्न जरा-व्याधि आदि दोषोंका अन्त करनेवाले, २१५. लङ्केशनिधनस्थायी—रावणके विनाशके लिये स्थिरचित्त, २१६. लङ्कादाहकः—लंकाको जलानेवाले, २१७. ईश्वरः—त्रिलोकीमें परम ऐश्वर्यशाली ॥ २७ ॥

चन्द्रसूर्याग्निनेत्रश्च कालाग्निः प्रलयान्तकः ।
कपिलः कपिशः पुण्यराशिर्द्वादशराशिगः ॥२८॥

२१८. चन्द्रसूर्याग्निनेत्रः—चन्द्र, सूर्य और अग्निरूप तीन नेत्रोंवाले शिवस्वरूप, २१९. कालाग्निः—मृत्युकारी अग्निरूप, २२०. प्रलयान्तकः—प्रलयका अन्त करनेवाले अर्थात् भक्तोंको जन्म-मृत्युसे रहित करनेवाले, २२१. कपिलः—काले-पीले वर्णके रोमसे युक्त, २२२. कपिशः—श्याम-पीतवर्णमिश्रित कपिशवर्ण, २२३. पुण्यराशिः—पुण्यकी राशि, २२४. द्वादशराशिगः—द्वादश राशियोंके ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषशास्त्रके जाननेवाले* ॥ २८ ॥

सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मा रेवत्यादिनिवारकः ।
लक्ष्मणप्राणदाता च सीताजीवनहेतुकः ॥२९॥

२२५. सर्वाश्रयः—सबके आश्रयस्थान, २२६. अप्रमेयात्मा—अनुपम शरीरवाले, २२७. रेवत्यादिनिवारकः—रेवती-पूतना आदि ग्रह-दोषोंका निवारण करनेवाले, २२८. लक्ष्मणप्राणदाता—संजीवनीद्वारा लक्ष्मणजीको प्राण देनेवाले, २२९. सीताजीवनहेतुकः—श्रीजानकीजीको श्रीरामका संदेश देकर जीवन प्रदान करनेवाले ॥ २९ ॥

रामध्येयो हृषीकेशो विष्णुभक्तो जटी बली ।
देवारिदर्पहा होता धाता कर्ता जगत्प्रभुः ॥३०॥

२३०. रामध्येयः—श्रीराम जिनका ध्यान-स्मरण करते हैं, २३१. हृषीकेशः—इन्द्रियोंके स्वामी, २३२. विष्णुभक्तः—विष्णुके भक्त, २३३. जटी—जटावाले, २३४. बली—बलशाली, २३५. देवारिदर्पहा—देवशत्रुओंके दर्पको नष्ट करनेवाले, २३६. होता—भगवद्भक्तिका अनुष्ठान करनेवाले, २३७. धाता—जगत्को धारण करनेवाले, २३८. कर्ता—जगत्को बनानेवाले, २३९. जगत्प्रभुः—जगत्के स्वामी ॥ ३० ॥

नगरग्रामपालश्च शुद्धो बुद्धो निरत्रपः ।
निरञ्जनो निर्विकल्पो गुणातीतो भयंकरः ॥३१॥

२४०. नगरग्रामपालः—नगर और ग्रामवासियोंकी रक्षा करनेवाले, २४१. शुद्धः—शुद्धस्वरूप, २४२. बुद्धः—ज्ञानस्वरूप, २४३. निरत्रपः—सलज्ज, २४४. निरञ्जनः—अज्ञान या मायासे रहित, २४५. निर्विकल्पः—विकल्परहित, २४६. गुणातीतः—सत्त्वादि गुणोंसे रहित, २४७. भयंकरः—दुष्टोंके लिये विकराल स्वरूपवाले ॥ ३१ ॥

हनुमांश्च दुराराध्यस्तपःसाध्यो महेश्वरः ।
जानकीधनशोकोत्थतापहर्ता परात्परः ॥३२॥

२४८. हनुमान्—श्रीरामके अनुचर, २४९. दुराराध्यः—अभक्तोंके लिये कष्टसे आराधनीय, २५०. तपःसाध्यः—तपके द्वारा साध्य, २५१. महेश्वरः—महान् ईश्वर, २५२. जानकीधनशोकोत्थतापहर्ता—जानकीधन अर्थात् श्रीरामके शोकसे उत्पन्न संतापको हरनेवाले, २५३. परात्परः—जो अव्यक्तसे भी परे हैं ॥ ३२ ॥

* मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन—ये द्वादश राशियाँ हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाङ्मयः सदसद्रूपः कारणं प्रकृतेः परः ।
भाग्यदो निर्मलो नेता पुच्छलङ्काविदाहकः ॥३३॥

२५४. वाङ्मयः–वेदशास्त्र-सरस्वतीस्वरूप, २५५. सदसद्रूपः–सत् और असत्-स्वरूप, २५६.कारणम्–संसारके अभिन्न-निमित्तोपादान कारण, २५७.प्रकृतेः परः–जो त्रिगुणात्मिका प्रकृतिसे परे हैं, २५८.भाग्यदः–कर्मजन्य शुभाशुभ फलोंको देनेवाले, २५९. निर्मलः–मल अर्थात् दोषसे रहित, २६०. नेता–मार्गदर्शक, २६१. पुच्छलङ्काविदाहकः–पुच्छसे लंकाको जलानेवाले ॥ ३३ ॥

पुच्छबद्धयातुधानो यातुधानरिपुप्रियः ।
छायापहारी भूतेशो लोकेशः सद्गतिप्रदः ॥३४॥

२६२.पुच्छबद्धयातुधानः–पुच्छसे राक्षसोंको बाँधनेवाले, २६३.यातुधानरिपुप्रियः–राक्षसोंके शत्रु श्रीरामके प्रिय, २६४.छायापहारी–छायानामकी राक्षसीको मारनेवाले, २६५.भूतेशः–भूतोंके स्वामी, २६६.लोकेशः–लोकोंके स्वामी, २६७.सद्गतिप्रदः–संतोंको सद्गति प्रदान करनेवाले ॥ ३४ ॥

प्लवंगमेश्वरः क्रोधः क्रोधसंरक्तलोचनः ।
सौम्यो गुरुः काव्यकर्ता भक्तानां च वरप्रदः ॥३५॥

२६८.प्लवंगमेश्वरः–वानरोंके स्वामी, २६९.क्रोधः–शत्रुओंके लिये क्रोधस्वरूप, २७०.क्रोधसंरक्तलोचनः–युद्धकालमें क्रोधसे लाल नेत्रवाले, २७१.सौम्यः–सौम्यस्वरूप, २७२. गुरुः–अज्ञान दूर करके परमात्मदर्शन करानेवाले, २७३. काव्यकर्ता–काव्य-रचना करनेवाले, २७४.भक्तानां वरप्रदः–भक्तोंको अभीष्ट वर प्रदान करनेवाले ॥ ३५ ॥

भक्तानुकम्पी विश्वेशः पुरुहूतः पुरंदरः ।
क्रोधहर्ता तमोहर्ता भक्ताभयवरप्रदः ॥३६॥

२७५.भक्तानुकम्पी–भक्तोंपर अनुकम्पा करनेवाले, २७६.विश्वेशः–विश्वके संचालक, २७७.पुरुहूतः–बहुत बार लोग जिनको पुकारते हैं, २७८. पुरंदरः–शत्रुके नगरोंको ध्वस्त करनेवाले, २७९.क्रोधहर्ता–क्रोधको हरनेवाले, २८०.तमोहर्ता–अज्ञानान्धकारको दूर करनेवाले, २८१. भक्ताभयवरप्रदः–भक्तोंको अभय वर प्रदान करनेवाले ॥३६॥

अग्निर्विभावसुर्भास्वान् यमो निर्ऋतिरेव च ।
वरुणो वायुगतिमान् वायुः कौबेर ईश्वरः ॥३७॥

२८२.अग्निः–अग्निस्वरूप, २८३.विभावसुः–दिव्य तेजःस्वरूप, २८४.भास्वान्–प्रकाशयुक्त, २८५.यमः–संयमस्वरूप, २८६.निर्ऋतिः–नैर्ऋतगणके स्वामी, २८७. वरुणः–जलके देवता वरुणस्वरूप, २८८.वायुगतिमान्–वायुके समान गतिशील, २८९.वायुः–वायुपुत्र होनेके कारण वायुस्वरूप, २९०.कौबेर ईश्वरः–कुबेर-सम्बन्धी धनके मालिक ॥ ३७ ॥

रविश्चन्द्रः कुजः सौम्यो गुरुः काव्यः शनैश्चरः ।
राहुः केतुर्मरुद्धोता दाता हर्ता समीरजः ॥३८॥

२९१.रविः–सूर्यस्वरूप, २९२.चन्द्रः–जगत्को आह्लादित करनेवाले चन्द्रस्वरूप २९३.कुजः–मंगलग्रहस्वरूप, २९४.सौम्यः–बुधग्रहस्वरूप, २९५.गुरुः–बृहस्पतिग्रहस्वरूप, २९६.काव्यः–शुक्रग्रहस्वरूप, २९७.शनैश्चरः–शनिग्रहस्वरूप, २९८.राहुः–राहुग्रहस्वरूप, २९९.केतुः–केतुग्रहस्वरूप, ३००. मरुत्–वायुस्वरूप, ३०१.होता–हवन करनेवाले, ३०२.दाता–भक्तोंके भव-बन्धनको काटनेवाले, ३०३.हर्ता–भक्तोंकी ममताको हरनेवाले, ३०४.समीरजः–पवन देवताके पुत्र ॥३८॥

मशकीकृतदेवारिर्दैत्यारिर्मधुसूदनः ।
कामः कपिः कामपालः कपिलो विश्वजीवनः ॥३९॥

३०५.मशकीकृतदेवारिः–देवताओंके शत्रुओंको मच्छरके समान समझनेवाले, ३०६.दैत्यारिः–दैत्योंके शत्रु, ३०७. मधुसूदनः–भक्तोंके शुभाशुभ कर्मोंका विनाश करनेवाले, ३०८.कामः–श्रीराम-भक्तिकी कामना करनेवाले, ३०९. कपिः–जलसे पृथिवीकी रक्षा करनेवाले, ३१०. कामपालः–वीर्यरक्षक अर्थात् ब्रह्मचर्यका पालन करनेवाले, ३११. कपिलः–कपिल मुनिस्वरूप, ३१२.विश्वजीवनः–विश्वके जीवन ॥ ३९ ॥

भागीरथीपदाम्भोजः सेतुबन्धविशारदः ।
स्वाहा स्वधा हविः कव्यं हव्यवाहप्रकाशकः ॥४०॥

३१३.भागीरथीपदाम्भोजः–जिनके चरण-कमल भागीरथीके समान पवित्र करनेवाले हैं, ३१४.सेतुबन्धविशारदः–सेतु बाँधनेमें चतुर, ३१५.स्वाहा–स्वाहास्वरूप, ३१६.स्वधा–स्वधास्वरूप, ३१७.हविः–हविःस्वरूप, ३१८. कव्यम्–पितरोंको दिये जानेवाले अन्नादिरूप, ३१९.हव्यवाहप्रकाशकः–देवताओंके लिये हव्य वहन करनेवाले अग्निके समान प्रकाशक ॥ ४० ॥

स्वप्रकाशो महावीरो लघुरूर्जितविक्रमः ।
उड्डीनोड्डीनगतिमान् सद्गतिः पुरुषोत्तमः ॥४१॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३२०.स्वप्रकाशः—स्वयं प्रकाशस्वरूप, ३२१.महावीरः—बड़े बलवान्, ३२२. लघुः—लघुरूप धारण करनेवाले, ३२३.ऊर्जितविक्रमः—सुदृढ़ पराक्रमवाले, ३२४.उड्डीनोड्डीनगतिमान्—आकाशमें उड़नेवालोंमें तीव्रगतिशाली, ३२५.सद्गतिः—सम्यक् रीतिसे चलनेवाले, ३२६. पुरुषोत्तमः—पुरुषोंमें श्रेष्ठ ॥ ४१ ॥

जगदात्मा जगद्योनिर्जगदन्तो ह्यनन्तकः ।
विपाप्मा निष्कलङ्कोऽथ महान् महदहंकृतिः ॥४२॥

३२७.जगदात्मा—जगत्-स्वरूप, ३२८. जगद्योनिः—जगत्के कारण, ३२९.जगदन्तः—जगत्का अन्त करनेवाले, ३३०.अनन्तकः—जिनके अनन्त गुण हैं, ३३१.विपाप्मा—पापरहित, ३३२.निष्कलङ्कः—कलङ्करहित, ३३३.महान्—महत्तत्त्वस्वरूप, ३३४.महदहंकृतिः—महान् अहंकारतत्त्व-स्वरूप ॥ ४२ ॥

खं वायुः पृथिवी चापो वह्निर्दिक्पाल एव च ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्रहर्ता च पल्वलीकृतसागरः ॥४३॥

३३५.खं—आकाशतत्त्वस्वरूप, ३३६.वायुः—वायुतत्त्व-स्वरूप, ३३७.पृथिवी—पृथिवीतत्त्वस्वरूप, ३३८.आपः— जल-तत्त्वस्वरूप, ३३९.वह्निः—अग्नितत्त्वस्वरूप, ३४०.दिक्पालः—दिशाओंका पालन करनेवाले, ३४१.क्षेत्रज्ञः—क्षेत्रके ज्ञाता, ३४२.क्षेत्रहर्ता—क्षेत्रका हरण करनेवाले, ३४३.पल्वलीकृत-सागरः—सागरको लघु जलाशयरूप मानकर सरलतासे पार करनेवाले ॥ ४३ ॥

हिरण्मयः पुराणश्च खेचरो भूचरोऽमरः ।
हिरण्यगर्भः सूत्रात्मा राजराजो विशाम्पतिः ॥४४॥

३४४. हिरण्मयः—स्वर्णके समान कान्तिवाले, ३४५. पुराणः—पुराणपुरुष, ३४६. खेचरः—आकाशमें विचरण करनेवाले, ३४७. भूचरः—पृथिवीपर घूमनेवाले, ३४८. अमरः—न मरनेवाले, ३४९. हिरण्यगर्भः—विश्वको उत्पन्न करनेवाले ब्रह्मास्वरूप, ३५०. सूत्रात्मा—सर्वव्यापक, ३५१. विशाम्पतिः राजराजः—मनुष्योंका पालन करनेवाले राजाधिराज ॥ ४४ ॥

वेदान्तवेद्य उद्गीथो वेदवेदाङ्गपारगः ।
प्रतिग्रामस्थितिः सद्यःस्फूर्तिदाता गुणाकरः ॥४५॥

३५२. वेदान्तवेद्यः—वेदान्त शास्त्रद्वारा जानने योग्य, ३५३. उद्गीथः—ॐकारस्वरूप, ३५४. वेदवेदाङ्गपारगः—चारों वेदों और छहों वेदाङ्गोंमें पारंगत, ३५५. प्रति-ग्रामस्थितिः—प्रत्येक गाँवमें स्थित रहनेवाले, ३५६. सद्यः-स्फूर्तिदाता—तत्काल स्फूर्ति प्रदान करनेवाले, ३५७. गुणाकरः—गुणोंकी खानि ॥ ४५ ॥

नक्षत्रमाली भूतात्मा सुरभिः कल्पपादपः ।
चिन्तामणिर्गुणनिधिः प्रजाधारो ह्यनुत्तमः ॥४६॥

३५८. नक्षत्रमाली—सत्ताईस नक्षत्रोंकी मालावाले,* ३५९. भूतात्मा—प्राणियोंकी आत्मा, ३६०. सुरभिः—कामधेनुस्वरूप, ३६१. कल्पपादपः—भक्तोंका मनोरथ पूर्ण करनेवाले कल्पवृक्षस्वरूप, ३६२. चिन्तामणिः—चिन्ता-मणिस्वरूप, ३६३. गुणनिधिः—गुणोंकी खानि, ३६४. प्रजाधारः—प्रजाके आधारभूत, ३६५. अनुत्तमः—जिनसे उत्तम कोई नहीं है अर्थात् सर्वश्रेष्ठ ॥ ४६ ॥

पुण्यश्लोकः पुरारातिर्ज्योतिष्मान् शर्वरीपतिः ।
किल्किलारावसंत्रस्तभूतप्रेतपिशाचकः ॥४७॥

३६६. पुण्यश्लोकः—पुण्यकीर्तिवाले, ३६७. पुरारातिः—पुरनामक राक्षसके शत्रु शिवस्वरूप, ३६८. ज्योतिष्मान्—ज्योतिःस्वरूप, ३६९. शर्वरीपतिः—चन्द्रस्वरूप, ३७०. किल्किलारावसंत्रस्तभूतप्रेतपिशाचकः—किल-किल शब्दसे भूत-प्रेत-पिशाचादिको संत्रस्त करनेवाले ॥ ४७ ॥

ऋणत्रयहरः सूक्ष्मः स्थूलः सर्वगतिः पुमान् ।
अपस्मारहरः स्मर्ता श्रुतिर्गाथा स्मृतिर्मनुः ॥४८॥

३७१. ऋणत्रयहरः—भक्तोंके तीनों ऋणोंको हरनेवाले,† ३७२. सूक्ष्मः—सूक्ष्मस्वरूप, ३७३. स्थूलः—स्थूलस्वरूप, ३७४. सर्वगतिः—सर्वत्र गतिवाले, ३७५. पुमान्—पुरुषार्थी, ३७६. अपस्मारहरः—अपस्मार (मिरगीरोग) को हरनेवाले, ३७७. स्मर्ता—भगवान्का स्मरण करनेवाले, ३७८. श्रुतिः—

* अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्र हैं। एक-एक नक्षत्रके चार-चार चरण होते हैं और चरणोंकी संख्या एक सौ आठ होती है। मालाओंकी मणियाँ भी एक सौ आठ होती हैं। अतः विराट्-रूप हनुमानजीकी सत्ताईस नक्षत्र-रूप माला है।

† देव-ऋण, पितृ-ऋण और ऋषि-ऋण—ये मुख्य तीन ऋण होते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदस्वरूप, ३७९. गाथा—स्तोत्रस्वरूप, ३८०. स्मृतिः—स्मृतिस्वरूप, ३८१. मनुः—मन्त्रस्वरूप ॥ ४८ ॥

स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं यतीश्वरः ।
नादरूपः परं ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्मपुरातनः ॥४९॥

३८२. स्वर्गद्वारम्—स्वर्गके द्वारस्वरूप, ३८३. प्रजाद्वारम्—प्रजा अर्थात् संतति प्रदान करनेवाले, ३८४. मोक्षद्वारम्—मोक्ष प्रदान करनेवाले, ३८५. यतीश्वरः—संयम करनेवालोंमें सर्वश्रेष्ठ, ३८६. नादरूपः—नाद-ब्रह्मस्वरूप, ३८७. परम्—मोक्षरूप, ३८८. ब्रह्म—परब्रह्मस्वरूप, ३८९. ब्रह्म—सर्वव्यापक, ३९०. ब्रह्मपुरातनः—आदिकारणरूप पुरातन ब्रह्म ॥ ४९ ॥

एकोऽनेको जनः शुक्लः स्वयंज्योतिरनाकुलः ।
ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्त्विको राजसस्तमः ॥५०॥

३९१. एकः—अद्वितीय, ३९२. अनेकः—अनेकरूप, ३९३. जनः—भक्तस्वरूप, ३९४. शुक्लः—शुक्लस्वरूप, ३९५. स्वयंज्योतिः—स्वयं प्रकाशस्वरूप, ३९६. अनाकुलः—व्याकुल न होनेवाले, ३९७. ज्योतिः—प्रकाशस्वरूप, ३९८. अनादिर्ज्योतिः—सब प्रकारकी ज्योतिके मूलभूत अनादि ज्योति, ३९९. सात्त्विकः—सात्त्विक रूपमें पालनकर्ता, ४००. राजसः—राजसरूपमें उत्पन्न करनेवाले, ४०१. तमः—तमोरूपमें संहारकर्ता ॥ ५० ॥

तमोहर्ता निरालम्बो निराहारो गुणाकरः ।
गुणाश्रयो गुणमयो बृहत्कर्मा बृहद्यशाः ॥५१॥

४०२. तमोहर्ता—तमोगुणका नाश करनेवाले, ४०३. निरालम्बः—आश्रयरहित, ४०४. निराकारः—आकाररहित, ४०५. गुणाकरः—गुणोंकी खानि, ४०६. गुणाश्रयः—तीनों गुणोंके आश्रय, ४०७. गुणमयः—सद्गुणोंसे सम्पन्न, ४०८. बृहत्कर्मा—महान् कार्य करनेवाले, ४०९. बृहद्यशाः—विस्तीर्ण कीर्तिवाले ॥ ५१ ॥

बृहद्धनुर्बृहत्पादो बृहन्मूर्धा बृहत्स्वनः ।
बृहत्कर्णो बृहन्नासो बृहद्बाहुर्बृहत्तनुः ॥५२॥

४१०. बृहद्धनुः—बड़ी ठुड्डीवाले, ४११. बृहत्पादः—लंबी टाँगवाले, ४१२. बृहन्मूर्धा—बड़े मस्तकवाले, ४१३. बृहत्स्वनः—बड़ा शब्द करनेवाले, ४१४. बृहत्कर्णः—बड़े कानवाले, ४१५. बृहन्नासः—लंबी नासिकावाले, ४१६. बृहद्बाहुः—लंबी भुजावाले, ४१७. बृहत्तनुः—विशाल देहधारी ॥ ५२ ॥

बृहज्जानुर्बृहत्कार्यो बृहत्पुच्छो बृहत्करः ।
बृहद्गतिर्बृहत्सेव्यो बृहल्लोकफलप्रदः ॥५३॥

४१८. बृहज्जानुः—बड़े घुटनोंवाले, ४१९. बृहत्कार्यः—महान् कार्य करनेवाले, ४२०. बृहत्पुच्छः—लंबी पूँछ-वाले, ४२१. बृहत्करः—लंबे हाथोंवाले, ४२२. बृहद्गतिः—तीव्र गतिवाले, ४२३. बृहत्सेव्यः—महापुरुषोंके द्वारा सेव्य, ४२४. बृहल्लोकफलप्रदः—सम्पूर्ण लोकरूप फल देनेवाले ॥ ५३ ॥

बृहच्छक्तिर्बृहद्वाञ्छाफलदो बृहदीश्वरः ।
बृहल्लोकनुतो द्रष्टा विद्यादाता जगद्गुरुः ॥५४॥

४२५. बृहच्छक्तिः—महान् शक्तिशाली, ४२६. बृहद्वाञ्छाफलदः—बड़ी-बड़ी इच्छाओंको पूर्ण करनेवाले, ४२७. बृहदीश्वरः—महान् सामर्थ्यवान्, ४२८. बृहल्लोकनुतः—असंख्य लोगोंके द्वारा नमस्कृत, ४२९. द्रष्टा—शुभाशुभ कर्मोंको देखनेवाले, ४३०. विद्यादाता—विद्या प्रदान करनेवाले, ४३१. जगद्गुरुः—जगत्‌को सन्मार्गमें लगानेवाले गुरु ॥ ५४ ॥

देवाचार्यः सत्यवादी ब्रह्मवादी कलाधरः ।
सप्तपातालगामी च मलयाचलसंश्रयः ॥५५॥

४३२. देवाचार्यः—देवताओंके आचार्य, ४३३. सत्यवादी—सत्य बोलनेवाले, ४३४. ब्रह्मवादी—ब्रह्म-(परमात्म) विषयक विवेचन करनेवाले, ४३५. कलाधरः—कलाओंके ज्ञाता, ४३६. सप्तपातालगामी—सातों पातालोंमें विचरण करनेवाले,* ४३७. मलयाचलसंश्रयः—मलयगिरिपर निवास करनेवाले ॥ ५५ ॥

उत्तराशास्थितः श्रीदो दिव्यौषधिवशः खगः ।
शाखामृगः कपीन्द्रोऽथ पुराणश्रुतिचञ्चुरः ॥५६॥

४३८. उत्तराशास्थितः—उत्तर दिशामें स्थित, ४३९. श्रीदः—शोभा (ऐश्वर्य) प्रदान करनेवाले, ४४०. दिव्यौषधिवशः—दिव्य ओषधियोंको वशीभूत करनेवाले, ४४१. खगः—नभोमण्डलमें विचरण करनेवाले, ४४२. शाखामृगः—शाखाओंपर कूदनेवाले, ४४३. कपीन्द्रः—वानरोंके अधिपति,

* अतलं वितलं चैव सुतलं च तलातलम् । महातलं च विख्यातं ततो ज्ञेयं रसातलम् ॥
ततः पातालमित्येव सप्त पातालसंज्ञकाः ॥ (पद्मपु० पा० खण्ड)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४४४. पुराणश्रुतिचञ्चुरः—श्रुति और पुराणकी विशेष जानकारी रखनेवाले ॥ ५६ ॥

चतुरब्राह्मणो योगी योगगम्यः परावरः ।
अनादिनिधनो व्यासो वैकुण्ठः पृथिवीपतिः ॥५७॥

४४५. चतुरब्राह्मणः—निपुण ब्राह्मणस्वरूप, ४४६. योगी—योगसिद्ध, ४४७. योगगम्यः—योगाभ्यासके द्वारा प्राप्त होनेवाले, ४४८. परावरः—विश्वके आदि और अन्तस्वरूप, ४४९. अनादिनिधनः—आदि-अन्तसे रहित, ४५०. व्यासः—वेदोंका विस्तार करनेवाले, ४५१. वैकुण्ठः—मायाके प्रभावसे रहित, ४५२. पृथिवीपतिः—भूलोकके रक्षक ॥ ५७ ॥

अपराजितो जितारातिः सदानन्दो दयायुतः ।
गोपालो गोपतिर्गोप्ता कलिकालपराशरः ॥ ५८ ॥

४५३. अपराजितः—शत्रुओंके द्वारा अजेय, ४५४. जितारातिः—शत्रुओंको जीतनेवाले, ४५५. सदानन्दः—सदा आनन्दित रहनेवाले, ४५६. दयायुतः—दयालु, ४५७. गोपालः—पृथ्वीका पालन करनेवाले, ४५८. गोपतिः—इन्द्रियोंके स्वामी, ४५९. गोप्ता—भक्तोंके रक्षक, ४६०. कलिकाल-पराशरः—कलिकालके पराशर अर्थात् कथावाचकोंके उत्पादक ॥ ५८ ॥

मनोवेगी सदायोगी संसारभयनाशनः ।
तत्त्वदाताथ तत्त्वज्ञस्तत्त्वं तत्त्वप्रकाशकः ॥ ५९ ॥

४६१. मनोवेगी—मनके समान वेगवाले, ४६२. सदा-योगी—सदा योगयुक्त रहनेवाले, ४६३. संसारभयनाशनः—भवभयका नाश करनेवाले, ४६४. तत्त्वदाता—तत्त्वज्ञानके दाता, ४६५. तत्त्वज्ञः—तत्त्वज्ञानी, ४६६. तत्त्वम्—ब्रह्मस्वरूप, ४६७. तत्त्वप्रकाशकः—तत्त्वका प्रकाश करनेवाले ॥ ५९ ॥

शुद्धो बुद्धो नित्यमुक्तो भक्तराजो जयद्रथः ।
प्रलयोऽमितमायश्च मायातीतो विमत्सरः ॥ ६० ॥

४६८. शुद्धः—सबको पवित्र करनेवाले, ४६९. बुद्धः—ज्ञानवान्, ४७०. नित्यमुक्तः—सदा मुक्तस्वरूप, ४७१. भक्त-राजः—भगवद्भक्तोंमें देदीप्यमान, ४७२. जयद्रथः—आक्रमणमें जय प्राप्त करनेवाले, ४७३. प्रलयः—शत्रुओंके लिये प्रलयंकर, ४७४. अमितमायः—अनन्त माया जाननेवाले, ४७५. मायातीतः—सर्वथा मायाजालसे रहित, ४७६. विमत्सरः—ईर्ष्यासे रहित ॥ ६० ॥

मायाभर्जितरक्षाश्च मायानिर्मितविष्टपः ।
मायाश्रयश्च निर्लेपो मायानिर्वर्तकः सुखम् ॥ ६१ ॥

४७७. मायाभर्जितरक्षाः—अपनी मायासे राक्षसोंको भून डालनेवाले, ४७८. मायानिर्मितविष्टपः—मायासे भुवनोंकी सृष्टि करनेवाले, ४७९. मायाश्रयः—मायाका आश्रय लेनेवाले, ४८०. निर्लेपः—निरासक्त रहनेवाले, ४८१. मायानिर्वर्तकः—मायाशक्तिद्वारा कार्य सम्पन्न करनेवाले, ४८२. सुखम्—सुखस्वरूप ॥ ६१ ॥

सुखी सुखप्रदो नागो महेशकृतसंस्तवः ।
महेश्वरः सत्यसंधः शरभः कलिपावनः ॥ ६२ ॥

४८३. सुखी—सदा सुखसे रहनेवाले, ४८४. सुखप्रदः—सुख प्रदान करनेवाले, ४८५. नागः—नागस्वरूप, ४८६. महेशकृतसंस्तवः—शंकरजीके द्वारा स्तुत, ४८७. महेश्वरः—महान् ऐश्वर्यशाली, ४८८. सत्यसंधः—सत्यवादी, ४८९. शरभः—शरभ नामक पशुके समान महान् बलशाली, ४९०. कलिपावनः—कलियुगको पवित्र करनेवाले ॥ ६२ ॥

सहस्रकन्धरबलविध्वंसनविचक्षणः ।
सहस्रबाहुः सहजो द्विबाहुर्द्विभुजोऽमरः ॥ ६३ ॥

४९१. सहस्रकन्धरबलविध्वंसनविचक्षणः—हजारों सिर-वाले रावणके बलको विध्वंस करनेमें चतुर, ४९२. सहस्र-बाहुः—हजारों भुजावाले, ४९३. सहजः—सहज स्थितिस्वरूप, ४९४. द्विबाहुः—दो बाहुवाले, ४९५. द्विभुजः—दो भुजाओं-वाले, ४९६. अमरः—अविनाशी ॥ ६३ ॥

चतुर्भुजो दशभुजो हयग्रीवः खगाननः ।
कपिवक्त्रः कपिपतिर्नरसिंहो महाद्युतिः ॥ ६४ ॥

४९७. चतुर्भुजः—चार भुजावाले, ४९८. दशभुजः—दस भुजावाले, ४९९. हयग्रीवः—अश्वके समान गर्दनवाले, ५००. खगाननः—गरुडके समान मुखवाले, ५०१. कपिवक्त्रः—कपि-सदृश मुखवाले, ५०२. कपिपतिः—वानरोंकी रक्षा करने-वाले, ५०३. नरसिंहः—नरसिंहके समान विकराल रूप धारण करनेवाले, ५०४. महाद्युतिः—अत्यन्त तेजस्वी ॥ ६४ ॥

भीषणो भावगो वन्द्यो वराहो वायुरूपधृक् ।
लक्ष्मणप्राणदाता च पराजितदशाननः ॥ ६५ ॥

५०५. भीषणः—युद्धमें भयंकररूप, ५०६. भावगः—भगवद्भावको प्राप्त, ५०७. वन्द्यः—वन्दना करनेयोग्य, ५०८. वराहः—वराह-मुखवाले, ५०९. वायुरूपधृक्—वायुका रूप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धारण करनेवाले, ५१०. लक्ष्मणप्राणदाता—लक्ष्मणको (संजीवनी लाकर) जिलानेवाले, ५११. पराजितदशाननः—दशानन (रावण) को पराजित करनेवाले ॥ ६५ ॥

पारिजातनिवासी च वटुर्वचनकोविदः ।
सुरसास्यविनिर्मुक्तः सिंहिकाप्राणहारकः ॥६६॥

५१२. पारिजातनिवासी—पारिजात वृक्षके नीचे निवास करनेवाले, ५१३. वटुः—ब्रह्मचारीस्वरूप, ५१४. वचनकोविदः—बोलनेमें अति चतुर, ५१५. सुरसास्यविनिर्मुक्तः—सुरसाके मुखसे सुखपूर्वक निकल आनेवाले, ५१६. सिंहिकाप्राणहारकः—सिंहिका राक्षसीका प्राण हरनेवाले ॥६६॥

लङ्कालंकारविध्वंसी वृषदंशकरूपधृक् ।
रात्रिसंचारकुशलो रात्रिंचरगृहाग्निदः ॥६७॥

५१७. लङ्कालंकारविध्वंसी—लंकाकी शोभाको नष्ट करनेवाले, ५१८. वृषदंशकरूपधृक्—वृषदंशक अर्थात् बिडालका रूप धारण करनेवाले, ५१९. रात्रिसंचारकुशलः—रातमें घूमनेमें चतुर, ५२०. रात्रिंचरगृहाग्निदः—राक्षसोंके घरोंमें आग लगानेवाले ॥ ६७ ॥

किंकरान्तकरो जम्बुमालिहन्तोग्ररूपधृक् ।
आकाशचारी हरिगो मेघनादरणोत्सुकः ॥६८॥

५२१. किंकरान्तकरः—रावणके, सेवकोंको मार डालनेवाले, ५२२. जम्बुमालिहन्ता—जम्बुमाली राक्षसको मारनेवाले, ५२३. उग्ररूपधृक्—उग्ररूप धारण करनेवाले, ५२४. आकाशचारी—आकाशमें विचरण करनेवाले, ५२५. हरिगः—प्रभुको प्राप्त करनेवाले, ५२६. मेघनादरणोत्सुकः—मेघनादके साथ युद्ध करनेके लिये उत्कण्ठित ॥ ६८ ॥

मेघगम्भीरनिनदो महारावणकुलान्तकः ।
कालनेमिप्राणहारी मकरीशापमोक्षदः ॥६९॥

५२७. मेघगम्भीरनिनदः—बादलके समान गम्भीर शब्द करनेवाले, ५२८. महारावणकुलान्तकः—महारावणके कुलको नष्ट करनेवाले, ५२९. कालनेमिप्राणहारी—कालनेमि राक्षसका प्राण हरनेवाले, ५३०. मकरीशापमोक्षदः—मकरीको शापसे मुक्त करनेवाले ॥ ६९ ॥

रसो रसज्ञः सम्मानो रूपं चक्षुः श्रुतिर्वचः ।
घ्राणो गन्धः स्पर्शनं च स्पर्शोऽहंकारमानगः ॥७०॥

५३१. रसः—रसस्वरूप, ५३२. रसज्ञः—रसको जाननेवाले, ५३३. सम्मानः—प्रभुका सम्यक् सम्मान करनेवाले, ५३४. रूपम्—रूपस्वरूप, ५३५. चक्षुः—चक्षुस्वरूप, ५३६. श्रुतिः—श्रवणस्वरूप, ५३७. वचः—वाणीस्वरूप, ५३८. घ्राणः—नासिकास्वरूप, ५३९. गन्धः—गन्धरूप, ५४०. स्पर्शनम्—स्पर्शरूप, ५४१. स्पर्शः—सम्पर्क-ज्ञानस्वरूप, ५४२. अहंकारमानगः—अहंकारके स्वरूपको प्राप्त होनेवाले ॥ ७० ॥

नेतिनेतीतिगम्यश्च वैकुण्ठभजनप्रियः ।
गिरीशो गिरिजाकान्तो दुर्वासाः कविरङ्गिराः ॥७१॥

५४३. नेतिनेतीतिगम्यः—नेति-नेति शब्दोंद्वारा गम्य, ५४४. वैकुण्ठभजनप्रियः—भगवान्‌के भजनमें प्रीति रखनेवाले, ५४५. गिरीशः—पर्वतोंके ईश, ५४६. गिरिजाकान्तः—माता पार्वतीके प्रिय शंकरस्वरूप, ५४७. दुर्वासाः—दुर्वासा मुनिस्वरूप, ५४८. कविः—कविस्वरूप, ५४९. अङ्गिराः—अङ्गिरा-मुनिरूप ॥ ७१ ॥

भृगुर्वसिष्ठश्च्यवनो नारदस्तुम्बरोऽमलः ।
विश्वक्षेत्रो विश्वबीजो विश्वनेत्रश्च विश्वपः ॥७२॥

५५०. भृगुः—भृगुमुनिस्वरूप, ५५१. वसिष्ठः—वसिष्ठमुनिस्वरूप, ५५२. च्यवनः—च्यवन ऋषिस्वरूप, ५५३. नारदः—नारदमुनिस्वरूप, ५५४. तुम्बरः—तुम्बुरु गन्धर्वस्वरूप, ५५५. अमलः—दोषरहित, ५५६. विश्वक्षेत्रः—विश्वक्षेत्रस्वरूप, ५५७. विश्वबीजः—विश्वबीज अर्थात् कारणस्वरूप, ५५८. विश्वनेत्रः—सर्वद्रष्टा, ५५९. विश्वपः—विश्वके पालक ॥ ७२ ॥

याजको यजमानश्च पावकः पितरस्तथा ।
श्रद्धा बुद्धिः क्षमा तन्द्रा मन्त्रो मन्त्रयिता सुरः ॥७३॥

५६०. याजकः—यज्ञकर्मा, ५६१. यजमानः—प्रधान होतारूप, ५६२. पावकः—अग्निरूप, ५६३. पितरः—जगत्‌के माता-पिता, ५६४. श्रद्धा—श्रद्धास्वरूप, ५६५. बुद्धिः—बुद्धिस्वरूप, ५६६. क्षमा—क्षमास्वरूप, ५६७. तन्द्रा—तन्द्रारूप, ५६८. मन्त्रः—मन्त्रस्वरूप, ५६९. मन्त्रयिता—शुभ मन्त्र देनेवाले, ५७०. सुरः—देवस्वरूप ॥ ७३ ॥

राजेन्द्रो भूपती रुण्डमाली संसारसारथिः ।
नित्यसम्पूर्णकामश्च भक्तकामधुगुत्तमः ॥७४॥

५७१. राजेन्द्रः—राजाओंमें श्रेष्ठ, ५७२. भूपतिः—पृथ्वीके पालक, ५७३. रुण्डमाली—रुण्डोंकी मालावाले, ५७४. संसारसारथिः—भक्तोंको भवसिन्धु पार करनेमें सहायक,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५७५. नित्यसम्पूर्णकामः—सदा सभी कामनाओंसे तृप्त, ५७६. भक्तकामधुक्—भक्तोंकी कामनाओंके दोग्धा, ५७७. उत्तमः—श्रेष्ठ ॥ ७४ ॥

गणपः केशवो भ्राता पिता माता च मारुतिः ।
सहस्रमूर्द्धानेकास्यः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥७५॥

५७८. गणपः—वानरगणोंके पालक, ५७९. केशवः—घुँघराले केशवाले, ५८०. भ्राता—भ्रातृस्वरूप, ५८१. पिता—पितारूप, ५८२. माता—वात्सल्यमयी मातारूप, ५८३. मारुतिः—पवनदेवताके पुत्र, ५८४. सहस्रमूर्द्धा—हजारों सिरवाले, ५८५. अनेकास्यः—अनेक मुखवाले, ५८६. सहस्राक्षः—सहस्रों नेत्रवाले, ५८७. सहस्रपात्—सहस्रों पैरवाले ॥ ७५ ॥

कामजित् कामदहनः कामः कामफलप्रदः ।
मुद्रापहारी रक्षोघ्नः क्षितिभारहरो बलः ॥७६॥

५८८. कामजित्—कामदेवको जीतनेवाले, ५८९. कामदहनः—कामको जलानेवाले, ५९०. कामः—सौन्दर्यशाली, ५९१. कामफलप्रदः—कामनाओंको पूर्ण करनेवाले, ५९२. मुद्रापहारी—श्रीराम-मुद्रिकाको ले जानेवाले, ५९३. रक्षोघ्नः—राक्षसोंका नाश करनेवाले, ५९४. क्षितिभारहरः—पृथ्वीका भार उतारनेवाले, ५९५. बलः—शत्रु-संहारक ॥ ७६ ॥

नखदंष्ट्रायुधो विष्णुर्भक्ताभयवरप्रदः ।
दर्पहा दर्पदो दंष्ट्राशतमूर्तिरमूर्तिमान् ॥७७॥

५९६. नखदंष्ट्रायुधः—नख और दंष्ट्रारूप शस्त्र धारण करनेवाले, ५९७. विष्णुः—व्यापकस्वरूप, ५९८. भक्ताभयवरप्रदः—भक्तोंको अभयवर प्रदान करनेवाले, ५९९. दर्पहा—दर्पका नाश करनेवाले, ६००. दर्पदः—उत्साह प्रदान करनेवाले, ६०१. दंष्ट्राशतमूर्तिः—सौ दंष्ट्राओंसे युक्त मूर्तिवाले, ६०२. अमूर्तिमान्—मूर्तिरहित अर्थात् निराकारस्वरूप ॥७७॥

महानिधिर्महाभागो महाभर्गो महर्द्धिदः ।
महाकारो महायोगी महातेजा महाद्युतिः ॥७८॥

६०३. महानिधिः—सद्गुणोंके महान् भण्डार, ६०४. महाभागः—बड़े भाग्यशाली, ६०५. महाभर्गः—महातेजस्वी, ६०६. महर्द्धिदः—महान् ऋद्धि प्रदान करनेवाले, ६०७. महाकारः—बड़े आकारवाले, ६०८. महायोगी—महान् योगी, ६०९. महातेजाः—बड़े तेजस्वी, ६१०. महाद्युतिः—अत्यन्त शोभावाले ॥ ७८ ॥

महासनो महानादो महामन्त्रो महामतिः ।
महागमो महोदारो महादेवात्मको विभुः ॥७९॥

६११. महासनः—अत्यन्त स्थिर-आसनवाले, ६१२. महानादः—बड़ी गर्जना करनेवाले, ६१३. महामन्त्रः—उच्चकोटिके मन्त्रवाले, ६१४. महामतिः—महान् बुद्धिमान्, ६१५. महागमः—महान् गतिवाले, ६१६. महोदारः—बड़े उदार, ६१७. महादेवात्मकः—महादेवस्वरूप, ६१८. विभुः—सर्वव्यापक ॥ ७९ ॥

रौद्रकर्मा क्रूरकर्मा रत्ननाभः कृतागमः ।
अम्भोधिलङ्घनः सिंहः सत्यधर्मप्रमोदनः ॥८०॥

६१९. रौद्रकर्मा—भयानक कर्म करनेवाले, ६२०. क्रूरकर्मा—कठोर कर्म करनेवाले, ६२१. रत्ननाभः—रत्नके समान नाभिवाले, ६२२. कृतागमः—शास्त्रकी रचना करनेवाले, ६२३. अम्भोधिलङ्घनः—समुद्र लाँघनेवाले, ६२४. सिंहः—सिंहस्वरूप, ६२५. सत्यधर्मप्रमोदनः—सत्यधर्मका पालन करनेमें प्रसन्न ॥ ८० ॥

जितामित्रो जयः सोमो विजयो वायुनन्दनः ।
जीवदाता सहस्रांशुर्मुकुन्दो भूरिदक्षिणः ॥८१॥

६२६. जितामित्रः—शत्रुओंको जीतनेवाले, ६२७. जयः—जयस्वरूप, ६२८. सोमः—सोमस्वरूप, ६२९. विजयः—पराक्रमी, ६३०. वायुनन्दनः—पवनदेवताको आनन्दित करनेवाले, ६३१. जीवदाता—प्राणदान करनेवाले, ६३२. सहस्रांशुः—सूर्यस्वरूप, ६३३. मुकुन्दः—मुक्ति प्रदान करनेवाले, ६३४. भूरिदक्षिणः—विपुल दक्षिणा प्रदान करनेवाले ॥ ८१ ॥

सिद्धार्थः सिद्धिदः सिद्धसंकल्पः सिद्धिहेतुकः ।
सप्तपातालचरणः सप्तर्षिगणवन्दितः ॥८२॥

६३५. सिद्धार्थः—सदासिद्ध प्रयोगवाले, ६३६. सिद्धिदः—सिद्धि देनेवाले, ६३७. सिद्धसंकल्पः—सिद्ध संकल्पवाले, ६३८. सिद्धिहेतुकः—सिद्धियोंके कारण, ६३९. सप्तपातालचरणः—सप्तपातालमें संचरण करनेवाले, ६४०. सप्तर्षिगणवन्दितः—सप्तर्षियोंद्वारा वन्दित[1] ॥ ८२ ॥

सप्ताब्धिलङ्घनो वीरः सप्तद्वीपोरुमण्डलः ।
सप्ताङ्गराज्यसुखदः सप्तमातृनिषेवितः ॥८३॥

१. मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अङ्गिरा और वसिष्ठ—ये सात ऋषि हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६४१. सप्ताब्धिलङ्घनः—सातों समुद्रोंको लाँघनेवाले,[1] ६४२. वीरः—संदेश पहुँचानेवालोंमें वीर, ६४३. सप्तद्वीपोरुमण्डलः—सप्तद्वीपके विशाल मण्डलमें विचरण करनेवाले,[2] ६४४. सप्ताङ्गराज्यसुखदः—सप्ताङ्गयुक्त राज्यके लिये सुखद,[3] ६४५. सप्तमातृनिषेवितः—सात माताओंद्वारा सेवित[4] ॥ ८३ ॥

सप्तस्वर्लोकमुकुटः सप्तहोता स्वराश्रयः ।
सप्तच्छन्दोनिधिः सप्तच्छन्दः सप्तजनाश्रयः ॥८४॥

६४६. सप्तस्वर्लोकमुकुटः—सात स्वर्गलोकोंके मुकुटमणि,[5] ६४७. सप्तहोता—सामवेदके सात मन्त्रोंसे हवन करनेवाले, ६४८. स्वराश्रयः—स्वरोंका आश्रय लेनेवाले अर्थात् संगीत-शास्त्रमें प्रवीण, ६४९. सप्तच्छन्दोनिधिः—सात वैदिक छन्दोंके आश्रय, ६५०. सप्तच्छन्दः—सात छन्दस्वरूप,[6] ६५१. सप्तजनाश्रयः—सप्तजनोंके आश्रयस्वरूप ॥ ८४ ॥

सप्तसामोपगीतश्च सप्तपातालसंश्रयः ।
मेधादः कीर्तिदः शोकहारी दौर्भाग्यनाशनः ॥८५॥

६५२. सप्तसामोपगीतः—जिनका सामवेदकी सात स्वरोंद्वारा गान किया जाता है,[7] ६५३. सप्तपातालसंश्रयः—सप्तपातालके आश्रय, ६५४. मेधादः—मेधाको प्रदान करनेवाले, ६५५. कीर्तिदः—यश देनेवाले, ६५६. शोकहारी—शोक हरण करनेवाले, ६५७. दौर्भाग्यनाशनः—दुर्भाग्यका नाश करनेवाले ॥ ८५ ॥

सर्वरक्षाकरो गर्भदोषहा पुत्रपौत्रदः ।
प्रतिवादिमुखस्तम्भो रुष्टचित्तप्रसादनः ॥८६॥

६५८. सर्वरक्षाकरः—चारों ओरसे रक्षा करनेवाले, ६५९. गर्भदोषहा—गर्भ-दोषको दूर करनेवाले, ६६०. पुत्रपौत्रदः—पुत्र और पौत्र प्रदान करनेवाले, ६६१. प्रतिवादिमुखस्तम्भः—प्रतिवादीके मुखको बंद करनेवाले अर्थात् श्रेष्ठ वक्ता, ६६२. रुष्टचित्तप्रसादनः—रुष्टचित्तवालोंको प्रसन्न करनेवाले ॥ ८६ ॥

पराभिचारशमनो दुःखहा बन्धमोक्षदः ।
नवद्वारपुराधारो नवद्वारनिकेतनः ॥८७॥

६६३. पराभिचारशमनः—शत्रुके मारण-मोहन आदि अभिचारोंको शमन करनेवाले, ६६४. दुःखहा—दुःखोंका नाश करनेवाले, ६६५. बन्धमोक्षदः—बन्धनसे मुक्त करनेवाले, ६६६. नवद्वारपुराधारः—नवद्वार-पुर (शरीर) के आधार,* ६६७. नवद्वारनिकेतनः—नवद्वारवाले शरीररूपी घरमें रहनेवाले आत्म-स्वरूप ॥ ८७ ॥

नरनारायणस्तुत्यो नवनाथमहेश्वरः ।
मेखली कवची खड्गी भ्राजिष्णुर्जिष्णुसारथिः ॥८८॥

६६८. नरनारायणस्तुत्यः—नर और नारायणके द्वारा स्तुत्य, ६६९. नवनाथमहेश्वरः—नवनाथोंके महेश्वर, ६७०. मेखली—मेखला धारण करनेवाले, ६७१. कवची—कवच धारण करनेवाले, ६७२. खड्गी—खड्ग धारण करनेवाले, ६७३. भ्राजिष्णुः—देदीप्यमान, ६७४. जिष्णुसारथिः—अर्जुनके सारथि अर्थात् ध्वजामें निवास करनेवाले ॥ ८८ ॥

बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छः पुच्छहतासुरः ।
दुष्टग्रहनिहन्ता च पिशाचग्रहघातकः ॥८९॥

६७५. बहुयोजनविस्तीर्णपुच्छः—अनेक योजन लंबी पूँछवाले, ६७६. पुच्छहतासुरः—पूँछसे राक्षसोंको मारनेवाले, ६७७. दुष्टग्रहनिहन्ता—दुष्टग्रहोंके नाशक, ६७८. पिशाचग्रहघातकः—पिशाचग्रहके हन्ता ॥ ८९ ॥

बालग्रहविनाशी च धर्मनेता कृपाकरः ।
उग्रकृत्यश्चोग्रवेग उग्रनेत्रः शतक्रतुः ॥९०॥

६७९. बालग्रहविनाशी—बालग्रहोंका विनाश करनेवाले, ६८०. धर्मनेता—धर्मके नेता, ६८१. कृपाकरः—कृपा करनेवाले, ६८२. उग्रकृत्यः—उग्रकृत्यकर्ता, ६८३. उग्रवेगः—

१. क्षारोद, इक्षुरसोद, सुरोद, घृतोद, क्षीरोद, दधिमण्डोद और शुद्धोद—ये सात समुद्र हैं।
२. जम्बू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौञ्च, शाक और पुष्कर—ये सात द्वीप हैं।
३. राजा, मन्त्री, सामन्त, देश, कोष, गढ़ और सेना—ये राज्यके सात अङ्ग हैं।
४. ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुण्डा—ये सात माताएँ हैं।
५. भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक—ये सात स्वर्लोक होते हैं।
६. गायत्री, त्रिष्टुप्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति आदि सात छन्द हैं।
७. निषाद, आर्षभ, गान्धार, षड्ज, मध्यम, धैवत और पञ्चम—ये सात स्वर हैं।
* दो नेत्र, दो कर्ण, दो नासिका-छिद्र, मुख, उपस्थ और गुदा—ये नौ द्वार हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयंकर वेगवान्, ६८४. उग्रनेत्रः—उग्र नेत्रवाले, ६८५. शतक्रतुः—सौ यज्ञ करनेवाले इन्द्रस्वरूप ॥ ९० ॥

शतमन्युनुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोता महाबलः ।
समग्रगुणशाली च व्यग्रो रक्षोविनाशकः ॥९१॥

६८६. शतमन्युनुतः—इन्द्रद्वारा स्तुत, ६८७. स्तुत्यः—स्तुति करनेयोग्य, ६८८. स्तुतिः—स्तुतिस्वरूप, ६८९. स्तोता—स्तुति करनेवाले, ६९०. महाबलः—अत्यन्त बलशाली, ६९१. समग्रगुणशाली—सारे गुणोंसे युक्त, ६९२. व्यग्रः—सदा उद्यत, ६९३. रक्षोविनाशकः—असुरोंका विनाश करनेवाले ॥ ९१ ॥

रक्षोऽग्निदाहो ब्रह्मेशः श्रीधरो भक्तवत्सलः ।
मेघनादो मेघरूपो मेघवृष्टिनिवारकः ॥९२॥

६९४. रक्षोऽग्निदाहः—राक्षसोंको अग्निमें जला देनेवाले, ६९५. ब्रह्मेशः—ब्रह्माके ऊपर शासन करनेवाले, ६९६. श्रीधरः—ऐश्वर्य धारण करनेवाले, ६९७. भक्तवत्सलः—भक्तोंपर कृपा करनेवाले, ६९८. मेघनादः—मेघके समान गर्जनेवाले, ६९९. मेघरूपः—मेघके समान रूपवाले, ७००. मेघवृष्टिनिवारकः—मेघकी वृष्टिको रोकनेवाले ॥ ९२ ॥

मेघजीवनहेतुश्च मेघश्यामः परात्मकः ।
समीरतनयो योद्धा नृत्यविद्याविशारदः ॥९३॥

७०१. मेघजीवनहेतुः—मेघोंके जीवनके हेतु समुद्रस्वरूप, ७०२. मेघश्यामः—मेघके समान श्याम वर्णवाले, ७०३. परात्मकः—परमात्मस्वरूप, ७०४. समीरतनयः—वायुदेवताके पुत्र, ७०५. योद्धा—शत्रुओंके साथ लड़नेवाले, ७०६. नृत्यविद्याविशारदः—नृत्यकलामें निपुण ॥ ९३ ॥

अमोघोऽमोघदृष्टिश्च इष्टदोऽरिष्टनाशनः ।
अर्थोऽनर्थापहारी च समर्थो रामसेवकः ॥९४॥

७०७. अमोघः—कभी व्यर्थ न होनेवाले, ७०८. अमोघदृष्टिः—जिनकी कृपादृष्टि कभी व्यर्थ नहीं जाती, ७०९. इष्टदः—मनोवाञ्छित वस्तु देनेवाले, ७१०. अरिष्टनाशनः—विघ्ननाशक, ७११. अर्थः—अर्थस्वरूप ७१२. अनर्थापहारी—अनर्थको दूर करनेवाले, ७१३. समर्थः—सर्वथा सामर्थ्यवान्, ७१४. रामसेवकः—श्रीरामके सेवक ॥ ९४ ॥

अर्थिवन्द्योऽसुराराति: पुण्डरीकाक्ष आत्मभूः ।
संकर्षणो विशुद्धात्मा विद्याराशिः सुरेश्वरः ॥९५॥

७१५. अर्थिवन्द्यः—अर्थियोंके द्वारा वन्दनीय, ७१६. असुराराति:—असुरोंके शत्रु, ७१७. पुण्डरीकाक्षः—श्वेतकमलके समान नेत्रवाले, अथवा विष्णुस्वरूप, ७१८. आत्मभूः—स्वेच्छासे प्रकट होनेवाले, ७१९. संकर्षणः—शत्रुओंको कर्षण करनेवाले बलदेवस्वरूप, ७२०. विशुद्धात्मा—परम पवित्रस्वरूप, ७२१. विद्याराशिः—विद्याकी राशि—पूर्ण विद्वान्, ७२२. सुरेश्वरः—देवताओंके स्वामी ॥ ९५ ॥

अचलोद्धारको नित्यः सेतुकृद् रामसारथिः ।
आनन्दः परमानन्दो मत्स्यः कूर्मो निराश्रयः ॥९६॥

७२३. अचलोद्धारकः—अचलों (पर्वतों) का उद्धार करनेवाले, ७२४. नित्यः—नित्य विद्यमान, ७२५. सेतुकृत्—सेतु बनानेवाले, ७२६. रामसारथिः—श्रीरामके वाहन, ७२७. आनन्दः—आनन्द प्रदान करनेवाले, ७२८. परमानन्दः—परमानन्दस्वरूप, ७२९. मत्स्यः—मत्स्यस्वरूप, ७३०. कूर्मः—कूर्मस्वरूप, ७३१. निराश्रयः—आश्रयरहित ॥ ९६ ॥

वाराहो नारसिंहश्च वामनो जमदग्निजः ।
रामः कृष्णः शिवो बुद्धः कल्की रामाश्रयो हरिः ॥९७॥

७३२. वाराहः—वराहस्वरूप, ७३३. नारसिंहः—नृसिंहस्वरूप, ७३४. वामनः—वामनस्वरूप, ७३५. जमदग्निजः—परशुरामस्वरूप, ७३६. रामः—श्रीरामस्वरूप, ७३७. कृष्णः—श्रीकृष्णस्वरूप, ७३८. शिवः—शिवस्वरूप, ७३९. बुद्धः—बुद्धस्वरूप, ७४०. कल्किः—कल्किस्वरूप, ७४१. रामाश्रयः—श्रीरामके आश्रित, ७४२. हरिः—जगत्का दुःख हरनेवाले ॥ ९७ ॥

नन्दी भृङ्गी च चण्डी च गणेशो गणसेवितः ।
कर्माध्यक्षः सुराध्यक्षः विश्रामो जगतीपतिः ॥९८॥

७४३. नन्दी—नन्दीस्वरूप, ७४४. भृङ्गी—भृङ्गीस्वरूप, ७४५. चण्डी—देवीस्वरूप, ७४६. गणेशः—गणपतिरूप, ७४७. गणसेवितः—वानरगणोंद्वारा सेवित, ७४८.कर्माध्यक्षः—कर्मोंके स्वामी, ७४९. सुराध्यक्षः—देवताओंके अध्यक्ष, ७५०. विश्रामः—सब प्राणियोंके विश्रामस्थल, ७५१. जगतीपतिः—पृथ्वीका पालन करनेवाले ॥ ९८ ॥

जगन्नाथः कपीशश्च सर्वावासः सदाश्रयः ।
सुग्रीवादिस्तुतो दान्तः सर्वकर्मा प्लवङ्गमः ॥ ९९ ॥

७५२. जगन्नाथः—जगत्के स्वामी, ७५३.कपीशः—वानरोंके स्वामी, ७५४.सर्वावासः—सबके निवासस्थान, ७५५. सदाश्रयः—परमार्थपथपर चलनेवालोंके आश्रय, ७५६. सुग्रीवादिस्तुतः—सुग्रीव आदि वानर जिनकी स्तुति करते हैं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७५७. दान्तः—इन्द्रियोंको वशमें रखनेवाले, ७५८. सर्वकर्मा—कृतकृत्य, ७५९. प्लवङ्गमः—वानररूप ॥ ९९ ॥

नखदारितरक्षाश्च नखयुद्धविशारदः ।
कुशलः सुधनः शेषो वासुकिस्तक्षकस्तथा ॥१००॥

७६०. नखदारितरक्षाः—नखोंके द्वारा राक्षसोंको विदीर्ण करनेवाले, ७६१. नखयुद्धविशारदः—नखयुद्धमें कुशल, ७६२. कुशलः—परम निपुण, ७६३. सुधनः—भक्तिरूपी सुन्दर धनवाले, ७६४. शेषः—शेषनागस्वरूप, ७६५. वासुकिः—वासुकिसर्पस्वरूप, ७६६. तक्षकः—तक्षक सर्पस्वरूप ॥ १०० ॥

स्वर्णवर्णो बलाढ्यश्च पुरुजेताघनाशनः ।
कैवल्यरूपः कैवल्यो गरुडः पन्नगोरगः ॥१०१॥

७६७. स्वर्णवर्णः—सोनेके समान दीप्तवर्णवाले, ७६८. बलाढ्यः—अति शक्तिशाली, ७६९. पुरुजेता—बहुल विजयी, ७७०. अघनाशनः—पापका नाश करनेवाले, ७७१. कैवल्यरूपः—मुक्तिस्वरूप, ७७२. कैवल्यः—अद्वयस्वरूप, ७७३. गरुडः—गरुडरूप, ७७४. पन्नगोरगः—लेटे-लेटे चलनेवाले तथा उरसे चलनेवाले अर्थात् हनुमानजी सब प्रकारसे चलनेवाले हैं ॥ १०१ ॥

किल्किल्रावहतारातिर्गर्वपर्वतभेदनः ।
वज्राङ्गो वज्रदंष्ट्रश्च भक्तवज्रनिवारकः ॥१०२॥

७७५. किल्किल्रावहताराति:—किल-किल शब्दसे शत्रुओंका नाश करनेवाले, ७७६. गर्वपर्वतभेदनः—गर्वरूप पर्वतको काट गिरानेवाले, ७७७. वज्राङ्गः—वज्रशरीर, ७७८. वज्रदंष्ट्रः—वज्रके समान दाँतवाले, ७७९. भक्तवज्रनिवारकः—भक्तोंके ऊपर गिरते हुए वज्रको रोकनेवाले ॥ १०२ ॥

नखायुधो मणिग्रीवो ज्वालामाली च भास्करः ।
प्रौढप्रतापस्तपनो भक्ततापनिवारकः ॥१०३॥

७८०. नखायुधः—नख जिनके शस्त्र हैं, ७८१. मणिग्रीवः—कण्ठमें मणि धारण करनेवाले, ७८२. ज्वालामाली—लंकादाहके समय अग्नि-ज्वालाकी माला धारण करनेवाले, ७८३. भास्करः—सूर्यके समान प्रकाशस्वरूप, ७८४. प्रौढप्रतापः—प्रवृद्ध प्रतापवाले, ७८५. तपनः—सूर्यरूप, ७८६. भक्ततापनिवारकः—भक्तोंका संताप दूर करनेवाले ॥ १०३ ॥

शरणं जीवनं भोक्ता नानाचेष्टो ह्यचञ्चलः ।
स्वस्तिमान् स्वस्तिदो दुःखशातनः पवनात्मजः ॥१०४॥

७८७. शरणम्—शरणागत-रक्षक, ७८८. जीवनम्—सबके जीवनस्वरूप, ७८९. भोक्ता—सबको पालन करनेवाले, ७९०. नानाचेष्टः—अनेक चेष्टावाले, ७९१. अचञ्चलः—स्वरूपमें अटल रहनेवाले, ७९२. स्वस्तिमान्—कल्याणस्वरूप, ७९३. स्वस्तिदः—कल्याण वितरण करनेवाले, ७९४. दुःखशातनः—दुःखोंके नाशक, ७९५. पवनात्मजः—पवनके पुत्र ॥ १०४ ॥

पावनः पवनः कान्तो भक्तागःसहनो बली ।
मेघनादरिपुर्मेघनादसंहतराक्षसः ॥१०५॥

७९६. पावनः—पवित्र करनेवाले, ७९७. पवनः—वायुरूप, ७९८. कान्तः—कान्तिमान्, ७९९. भक्तागःसहनः—भक्तोंके अपराधोंको सहन करनेवाले, ८००. बली—बलवान्, ८०१. मेघनादरिपुः—मेघनादके शत्रु, ८०२. मेघनादसंहतराक्षसः—जिनकी मेघ-तुल्य गर्जनासे राक्षस नष्ट हो जाते हैं ॥ १०५ ॥

क्षरोऽक्षरो विनीतात्मा वानरेशः सतां गतिः ।
श्रीकण्ठः शितिकण्ठश्च सहायः सहनायकः ॥१०६॥

८०३. क्षरः—प्रकृतिकार्यस्वरूप, ८०४. अक्षरः—अविनाशी आत्म स्वरूप, ८०५. विनीतात्मा—विनम्र-स्वभाव ८०६. वानरेशः—वानरोंके ईश, ८०७. सतां गतिः—संतोंकी गति, ८०८. श्रीकण्ठः—शोभायमान कण्ठवाले, ८०९. शितिकण्ठः—नीलकण्ठ भगवान् शंकरस्वरूप, ८१०. सहायः—सहायता करनेवाले, ८११. सहनायकः—अपने स्वामी श्रीरामके साथ रहनेवाले ॥ १०६ ॥

अस्थूलस्त्वनणुर्भर्गो दिव्यः संसृतिनाशनः ।
अध्यात्मविद्यासारश्च ह्यध्यात्मकुशलः सुधीः ॥१०७॥

८१२. अस्थूलः—सूक्ष्मस्वरूप, ८१३. अनणुः—महान्, ८१४. भर्गः—आभायुक्त, ८१५. दिव्यः—दिव्यरूपधारी, ८१६. संसृतिनाशनः—भवबन्धनको मिटानेवाले, ८१७. अध्यात्मविद्यासारः—अध्यात्मविद्याके सार-तत्त्व, ८१८. अध्यात्मकुशलः—अध्यात्मविद्यामें कुशल, ८१९. सुधीः—सुन्दर बुद्धिवाले ॥ १०७ ॥

अकल्मषः सत्यहेतुः सत्यदः सत्यगोचरः ।
सत्यगर्भः सत्यरूपः सत्यः सत्यपराक्रमः ॥१०८॥

८२०. अकल्मषः—निष्पाप, ८२१. सत्यहेतुः—सत्यस्वरूप परमात्माकी प्राप्ति करानेवाले, ८२२. सत्यदः—सत्य प्रदान करनेवाले, ८२३. सत्यगोचरः—सत्यसे दृष्टिगोचर होनेवाले, ८२४. सत्यगर्भः—सत्य आशयवाले, ८२५. सत्यरूपः—सत्य (प्रशस्त) रूप-सौन्दर्यसे युक्त, ८२६. सत्यः—सत्य-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वरूप, ८२७. सत्यपराक्रमः—जिनका पराक्रम निष्फल नहीं होता ॥ १०८ ॥

अञ्जनाप्राणलिङ्गश्च वायुवंशोद्भवः शुभः ।
भद्ररूपो रुद्ररूपः सुरूपश्चित्ररूपधृक् ॥१०९॥

८२८. अञ्जनाप्राणलिङ्गः—माता अञ्जनाके प्राणप्यारे पुत्र, ८२९. वायुवंशोद्भवः—वायुदेवताके वंशमें उत्पन्न, ८३०. शुभः—कल्याणप्रद, ८३१. भद्ररूपः—मङ्गलमय, ८३२. रुद्ररूपः—शंकरस्वरूप, ८३३. सुरूपः—सुन्दर स्वरूपवाले, ८३४. चित्ररूपधृक्—चित्र-विचित्र रूप धारण करनेवाले ॥ १०९ ॥

मैनाकवन्दितः सूक्ष्मदर्शनो विजयो जयः ।
क्रान्तदिङ्मण्डलो रुद्रः प्रकटीकृतविक्रमः ॥११०॥

८३५. मैनाकवन्दितः—मैनाकपर्वतद्वारा वन्दित, ८३६. सूक्ष्मदर्शनः—सूक्ष्मदृष्टिवाले, ८३७. विजयः—अर्जुन-स्वरूप, ८३८. जयः—विष्णुके द्वारपालस्वरूप, ८३९. क्रान्त-दिङ्मण्डलः—दिशाओंके पार जानेवाले, ८४०. रुद्रः—आर्द्रा-नक्षत्ररूप, ८४१. प्रकटीकृतविक्रमः—अपने पराक्रमको प्रकट करनेवाले ॥ ११० ॥

कम्बुकण्ठः प्रसन्नात्मा ह्रस्वनासो वृकोदरः ।
लम्बौष्ठः कुण्डली चित्रमाली योगविदां वरः ॥१११॥

८४२. कम्बुकण्ठः—शङ्खके समान सुन्दर गर्दनवाले, ८४३. प्रसन्नात्मा—सदा प्रसन्न चित्त रहनेवाले, ८४४. ह्रस्वनासः—छोटी नासिकावाले, ८४५. वृकोदरः—भेड़ियाके समान बड़े उदरवाले, ८४६—लम्बौष्ठः—बड़े-बड़े ओठवाले, ८४७. कुण्डली—कानोंमें कुण्डल धारण करनेवाले, ८४८. चित्रमाली—चित्र-विचित्र पुष्पोंकी माला पहननेवाले, ८४९. योगविदां वरः—योगवेत्ताओंमें श्रेष्ठ ॥ १११ ॥

विपश्चित्कविरानन्दविग्रहोऽनल्पशासनः ।
फाल्गुनीसूनुरव्यग्रो योगात्मा योगतत्परः ॥११२॥

८५०. विपश्चित्कविः—तत्त्वज्ञ कवि, ८५१. आनन्द-विग्रहः—मूर्तिमान् आनन्द, ८५२. अनल्पशासनः—सबके ऊपर शासन करनेवाले, ८५३. फाल्गुनीसूनुः—पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रमें उत्पन्न होनेके कारण वे फाल्गुनीपुत्र हैं, ८५४. अव्यग्रः—कभी व्याकुल न होनेवाले, ८५५. योगात्मा—योगस्वरूप, ८५६—योगतत्परः—योगमें तत्पर रहनेवाले ॥ ११२ ॥

योगविद् योगकर्ता च योगयोनिर्दिगम्बरः ।
अकारादिहकारान्तवर्णनिर्मितविग्रहः ॥११३॥

८५७. योगवित्—योगके ज्ञाता, ८५८. योगकर्ता—योगको बनानेवाले, ८५९. योगयोनिः—योगकी उत्पत्तिके कारण, ८६०. दिगम्बरः—दिशारूपी वस्त्रधारी, ८६१. अकारादि-हकारान्तवर्णनिर्मितविग्रहः—सर्ववर्णस्वरूप ॥ ११३ ॥

उलूखलमुखः सिद्धसंस्तुतः प्रमथेश्वरः ।
श्लिष्टजङ्घः श्लिष्टजानुः श्लिष्टपाणिः शिखाधरः ॥११४॥

८६२. उलूखलमुखः—ओखलीके समान मुखारविन्दवाले, ८६३. सिद्धसंस्तुतः—सिद्धपुरुषोंके द्वारा जिनकी सम्यक् रीतिसे स्तुति होती है, ८६४. प्रमथेश्वरः—भूतगणोंके स्वामी,[1] ८६५. श्लिष्टजङ्घः—सटी हुई जङ्घावाले, ८६६. श्लिष्टजानुः—मिले हुए घुटनोंवाले, ८६७—श्लिष्टपाणिः—मिले हुए हाथोंवाले, ८६८. शिखाधरः—चोटी धारण करनेवाले ॥११४॥

सुशर्मामितशर्मा च नारायणपरायणः ।
जिष्णुर्भविष्णू रोचिष्णुर्ग्रसिष्णुः स्थाणुरेव च ॥ ११५ ॥

८६९. सुशर्मा—सुन्दर सुख देनेवाले, ८७०. अमितशर्मा—असीम सुख देनेवाले, ८७१. नारायणपरायणः—भगवान् नारायणमें लीन रहनेवाले, ८७२. जिष्णुः—जीतनेवाले, ८७३. भविष्णुः—भविष्यमें होनेवाले, ८७४. रोचिष्णुः—कान्तिमान्, ८७५. ग्रसिष्णुः—सर्वसंहार करनेवाले शिवरूप, ८७६.—स्थाणुः—स्थिर रहनेवाले ॥ ११५ ॥

हरिरुद्रानुसेकोऽथ कम्पनो भूमिकम्पनः ।
गुणप्रवाहः सूत्रात्मा वीतरागस्तुतिप्रियः ॥ ११६ ॥

८७७. हरिरुद्रानुसेकः—भगवान् विष्णु और शंकरका अभिषेक करनेवाले, ८७८. कम्पनः—शत्रुओंको कम्पायमान करनेवाले, ८७९. भूमिकम्पनः—पृथ्वीको कम्पित करनेवाले, ८८०. गुणप्रवाहः—गुणोंके प्रवाह, अर्थात् सर्वगुणसम्पन्न, ८८१. सूत्रात्मा—यज्ञोपवीतधारी, ८८२. वीतरागस्तुतिप्रियः—वीतराग पुरुषके द्वारा की गयी स्तुति जिन्हें प्रिय लगती है ॥ ११६ ॥

नागकन्याभयध्वंसी रुक्मवर्णः कपालभृत् ।
अनाकुलो भवोपायोऽनपायो वेदपारगः ॥ ११७ ॥

८८३. नागकन्याभयध्वंसी—नागकन्याओंके भयका ध्वंस करनेवाले, ८८४. रुक्मवर्णः—सुवर्णके समान वर्णवाले, ८८५. कपालभृत्—कपाल धारण करनेवाले महादेवस्वरूप, ८८६. अनाकुलः—व्यग्रतारहित, ८८७. भवोपायः—भवसागर पार करनेके लिये उपायरूप, ८८८. अनपायः—भगवान् श्रीरामसे कभी वियुक्त न होनेवाले, ८८९. वेदपारगः—वेदोंमें पारंगत ॥ ११७ ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अक्षरः पुरुषो लोकनाथ ऋक्षप्रभुर्दृढः ।
अष्टाङ्गयोगफलभुक् सत्यसंधः पुरुष्टुतः ॥ ११८ ॥

८९०. अक्षरः—अविनाशी, ८९१. पुरुषः—बुद्धिरूपी पुरीमें सोनेवाले, ८९२. लोकनाथः—सम्पूर्ण लोकोंके स्वामी, ८९३. ऋक्षप्रभुः—नक्षत्रोंके स्वामी, अर्थात् चन्द्रस्वरूप, ८९४. दृढः—हृष्ट-पुष्टशरीर, ८९५. अष्टाङ्गयोगफलभुक्—अष्टाङ्गयोगके फलका उपभोग करनेवाले, ८९६. सत्यसंधः—दृढ़ मैत्रीवाले, ८९७. पुरुष्टुतः—देवताओंके द्वारा संस्तुत ॥ ११८ ॥

श्मशानस्थाननिलयः प्रेतविद्रावणक्षमः ।
पञ्चाक्षरपरः पञ्चमातृको रञ्जनध्वजः ॥११९॥

८९८. श्मशानस्थाननिलयः—श्मशानमें निवास करनेवाले, ८९९. प्रेतविद्रावणक्षमः—प्रेतको तुरंत भगानेमें समर्थ, ९००. पञ्चाक्षरपरः—'नमः शिवाय' इस प्रधान पञ्चाक्षर मन्त्रको जपनेवाले, ९०१. पञ्चमातृकः—सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्ति तथा अञ्जना—इन पाँच माताओंवाले, ९०२. रञ्जनध्वजः—लाल रंगकी ध्वजावाले ॥ ११९ ॥

योगिनीवृन्दवन्द्यश्रीः शत्रुघ्नोऽनन्तविक्रमः ।
ब्रह्मचारीन्द्रियरिपुर्धृतदण्डो दशात्मकः ॥१२०॥

९०३. योगिनीवृन्दवन्द्यश्रीः—योगिनीवृन्दके द्वारा वन्दनीय शोभास्वरूप, ९०४. शत्रुघ्नः—शत्रुओंको हनन करनेवाले, ९०५. अनन्तविक्रमः—अपार पराक्रमशाली, ९०६. ब्रह्मचारी—ब्रह्ममें विचरण करनेवाले, ९०७. इन्द्रियरिपुः—इन्द्रियोंके शत्रु अर्थात् जितेन्द्रिय, ९०८. धृतदण्डः—दण्डधारी (गदाधारी), ९०९. दशात्मकः—दशावतारस्वरूप ॥ १२० ॥

अप्रपञ्चः सदाचारः शूरसेनाविदारकः ।
वृद्धः प्रमोद आनन्दः सप्तद्वीपपतिन्धरः ॥१२१॥

९१०. अप्रपञ्चः—संसारके प्रपञ्चसे रहित, ९११. सदाचारः—सदाचारयुक्त, ९१२. शूरसेनाविदारकः—शूर पुरुषोंकी सेनाको विदीर्ण करनेवाले, ९१३. वृद्धः—सब प्रकारसे बड़े, ९१४. प्रमोदः—प्रमोद-तृप्तिस्वरूप, ९१५. आनन्दः—आनन्दस्वरूप, ९१६. सप्तद्वीपपतिन्धरः—सप्तद्वीपपतियोंको धारण करनेवाले ॥ १२१ ॥

नवद्वारपुराधारः प्रत्यग्रः सामगायकः ।
षट्चक्रधाम स्वर्लोकाभयकृन्मानदो मदः ॥१२२॥

९१७. नवद्वारपुराधारः—नवद्वारवाले पुर अर्थात् शरीरोंके आधार, ९१८. प्रत्यग्रः—सबके आगे चलनेवाले, ९१९. सामगायकः—सामवेदका गान करनेवाले, ९२०. षट्चक्रधाम—सहस्रार आदि षट्चक्रोंमें परमात्मरूपसे निवास करनेवाले,* ९२१. स्वर्लोकाभयकृत्—स्वर्गलोकको अभय करनेवाले, ९२२. मानदः—मान देनेवाले, ९२३. मदः—सम्पूर्ण अहंकृतिरूप ॥ १२२ ॥

सर्ववश्यकरः शक्तिरनन्तोऽनन्तमङ्गलः ।
अष्टमूर्तिर्नयोपेतो विरूपः सुरसुन्दरः ॥१२३॥

९२४. सर्ववश्यकरः—सबको वशमें करनेवाले, ९२५. शक्तिः—शक्तिस्वरूप, ९२६. अनन्तः—जिनके गुणोंका अन्त नहीं है, ९२७. अनन्तमङ्गलः—जो अनन्त मङ्गलोंसे पूर्ण हैं, ९२८. अष्टमूर्तिः—पञ्च भूत, सूर्य, चन्द्र और आत्मा—ये आठ जिनकी मूर्ति अर्थात् स्वरूप हैं, ९२९. नयोपेतः—नीतिमान्, ९३०. विरूपः—विविध रूपवाले, ९३१. सुरसुन्दरः—देवताओंसे भी अधिक सुन्दर ॥ १२३ ॥

धूमकेतुर्महाकेतुः सत्यकेतुर्महारथः ।
नन्दिप्रियः स्वतन्त्रश्च मेखली डमरुप्रियः ॥१२४॥

९३२. धूमकेतुः—अग्निस्वरूप, ९३३. महाकेतुः—विशाल बुद्धिवाले, ९३४. सत्यकेतुः—जिनका सत्य आदर्श है, ९३५. महारथः—महारथी, ९३६. नन्दिप्रियः—नन्दि (शिववाहन) जिनके प्रिय हैं, ९३७. स्वतन्त्रः—जो किसीके अधीन नहीं हैं, ९३८. मेखली—कटिसूत्र धारण करनेवाले, ९३९. डमरुप्रियः—जिनको डमरू प्रिय है उस शिवके स्वरूप ॥ १२४ ॥

लौहाङ्गः सर्वविद्धन्वी खण्डलः शर्व ईश्वरः ।
फलभुक् फलहस्तश्च सर्वकर्मफलप्रदः ॥१२५॥

९४०. लौहाङ्गः—लोहेके समान दृढ़ शरीरवाले, ९४१. सर्ववित्—सब कुछ जाननेवाले, ९४२. धन्वी—धनुर्धर, ९४३. खण्डलः—द्रोणगिरिको खण्डित कर लानेवाले, ९४४. शर्वः—शिवस्वरूप, ९४५. ईश्वरः—ईश्वरस्वरूप, ९४६. फलभुक्—फल खानेवाले वानररूप, ९४७. फलहस्तः—जिनके करकमलमें फल है, ९४८. सर्वकर्मफलप्रदः—सब कर्मोंका फल प्रदान करनेवाले ॥ १२५ ॥

धर्माध्यक्षो धर्मपालो धर्मो धर्मप्रदोऽर्थदः ।
पञ्चविंशतितत्त्वज्ञस्तारको ब्रह्मतत्परः ॥१२६॥

९४९. धर्माध्यक्षः—धर्म-निधिके अध्यक्ष, ९५०. धर्मपालः—धर्मका पालन करनेवाले, ९५१. धर्मः—धर्मस्वरूप, ९५२. धर्मप्रदः—न्यायधर्मके दाता, ९५३. अर्थदः—अर्थ

* मूलाधार, अधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा—ये षट्-चक्र हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रदान करनेवाले, ९५४. पञ्चविंशतितत्त्वज्ञः—पचीस तत्त्वोंके यथार्थ ज्ञाता,* ९५५. तारकः—भवसागरसे तारनेवाले, ९५६. ब्रह्मतत्परः—परब्रह्ममें तत्पर ॥ १२६ ॥

त्रिमार्गवसतिर्भीमः सर्वदुःखनिबर्हणः ।
ऊर्जस्वान् निष्कलः शूली मौलिर्गर्जन्निशाचरः ॥१२७॥

९५७. त्रिमार्गवसतिः—ज्ञानयोग, भक्तियोग और कर्मयोग—इन तीनों मार्गोंके निवास-स्थल, ९५८. भीमः—भयंकरस्वरूप, ९५९. सर्वदुःखनिबर्हणः—सारे दुःखोंको दूर करनेवाले, ९६०. ऊर्जस्वान्—बलशाली, ९६१. निष्कलः—निर्गुण ब्रह्मस्वरूप, ९६२. शूली—शूल धारण करनेवाले, ९६३. मौलिः—किरीट धारण करनेवाले, ९६४. गर्जन्निशाचरः—रात्रिमें गर्जते हुए विचरण करनेवाले अर्थात् निःशङ्क ॥ १२७ ॥

रक्ताम्बरधरो रक्तो रक्तमाल्यो विभूषणः ।
वनमाली शुभाङ्गश्च श्वेतः श्वेताम्बरो युवा ॥१२८॥

९६५. रक्ताम्बरधरः—लाल वर्णका वस्त्र धारण करनेवाले, ९६६. रक्तः—लाल वर्णवाले, ९६७. रक्तमाल्यः—लाल रंगकी मालासे सुशोभित, ९६८. विभूषणः—अलंकारस्वरूप, ९६९. वनमाली—वन्य पुष्पोंकी माला पहननेवाले, ९७०. शुभाङ्गः—मङ्गलस्वरूप, ९७१. श्वेतः—श्वेतरूप, ९७२. श्वेताम्बरः—शुक्ल वर्णका वस्त्र धारण करनेवाले, ९७३. युवा—सदा तरुणस्वरूप ॥ १२८ ॥

जयोऽजयपरीवारः सहस्रवदनः कपिः ।
शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूतप्रभञ्जकः ॥१२९॥

९७४. जयः—विजेता, ९७५. अजयपरीवारः—जिसका विजय ही परिवार है, ९७६. सहस्रवदनः—सहस्र मुखवाले, ९७७. कपिः—कपिस्वरूप, ९७८. शाकिनीडाकिनीयक्षरक्षोभूतप्रभञ्जकः—शाकिनी, डाकिनी, यक्ष, राक्षस, भूत आदिका नाश करनेवाले ॥ १२९ ॥

सद्योजातः कामगतिर्ज्ञानमूर्तिर्यशस्करः ।
शम्भुतेजाः सार्वभौमो विष्णुभक्तः प्लवङ्गमः ॥१३०॥

९७९. सद्योजातः—तुरंत प्रकट होनेवाले, ९८०. कामगतिः—स्वच्छन्द घूमनेवाले, ९८१. ज्ञानमूर्तिः—ज्ञानकी साक्षात् मूर्ति, ९८२. यशस्करः—यशस्वी, ९८३. शम्भुतेजाः—भगवान् शंकरके समान तेजस्वी, ९८४. सार्वभौमः—सब संसारके अधिपति, ९८५. विष्णुभक्तः—भगवान् विष्णुके भक्त, ९८६. प्लवङ्गमः—मर्कटस्वरूप ॥ १३० ॥

चतुर्नवतिमन्त्रज्ञः पौलस्त्यबलदर्पहा ।
सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानङ्गदप्रिय ईडितः ॥१३१॥

९८७. चतुर्नवतिमन्त्रज्ञः—चौरानवे मन्त्रोंके ज्ञाता, ९८८. पौलस्त्यबलदर्पहा—रावणके बलके घमंडको नष्ट करनेवाले, ९८९. सर्वलक्ष्मीप्रदः—सारे ऐश्वर्यको प्रदान करनेवाले, ९९०. श्रीमान्—सर्वैश्वर्यशाली, ९९१. अङ्गदप्रियः—अङ्गदके प्यारे, ९९२. ईडितः—स्तुत्य ॥ १३१ ॥

स्मृतिबीजं सुरेशानः संसारभयनाशनः ।
उत्तमः श्रीपरीवारः श्रितो रुद्रश्च कामधुक् ॥१३२॥

९९३. स्मृतिबीजम्—स्मृतियोंके बीज, ९९४. सुरेशानः—देवताओंके स्वामी, ९९५. संसारभयनाशनः—संसारके भयका नाश करनेवाले, ९९६. उत्तमः—श्रेष्ठ, ९९७. श्रीपरीवारः—श्री (माता जानकी) के पुत्र, ९९८. श्रितः—आश्रयवान्, ९९९. रुद्रः—रुद्रस्वरूप, १०००. कामधुक्—सारी कामनाओंको पूर्ण करनेवाले ॥ १३२ ॥

श्रीवाल्मीकिरुवाच

इति नाम्नां सहस्रेण स्तुतो रामेण वायुभूः ।
उवाच तं प्रसन्नात्मा संधायात्मानमव्ययम् ॥१३३॥

वाल्मीकिमुनि बोले—इस प्रकार श्रीरामके द्वारा सहस्रनामसे स्तुति किये जानेपर प्रसन्नचित्त श्रीहनुमानजी अपने अविनाशी आत्मस्वरूपमें स्थित होकर उनसे बोले ॥ १३३ ॥

श्रीहनुमानुवाच

ध्यानास्पदमिदं ब्रह्म मत्पुरः समुपस्थितम् ।
स्वामिन् कृपानिधे राम ज्ञातोऽसि कपिना मया ॥१३४॥

श्रीहनुमानजी बोले—स्वामिन् ! कृपासिन्धु श्रीरामचन्द्रजी ! मैं कपि होते हुए भी आपको जान गया कि मेरे सामने आप परम ध्येय, परात्पर परब्रह्म ही समुपस्थित हैं ॥ १३४ ॥

त्वद्ध्याननिरता लोकाः किं न पश्यन्ति सादरम् ।
तवागमनहेतुश्च ज्ञातो ह्यत्र मयानघ ॥१३५॥

निष्पाप श्रीरामजी ! आदरपूर्वक आपके ध्यानमें लगे हुए भक्तलोग क्या नहीं देखते ? अर्थात् सब कुछ देख

* पञ्च महाभूत, अहंकार, बुद्धि, मन, पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच विषय और प्रकृति तथा चेतन—ये पञ्चविंशति तत्त्व हैं ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेते हैं। अतएव आपके यहाँ आनेका हेतु मैं जान गया ॥ १३५ ॥

कर्तव्यं मम किं राम तथा त्वं ब्रूहि राघव।
इति प्रचोदितो रामः प्रहृष्टात्मा तमब्रवीत् ॥१३६॥

राघवेन्द्र श्रीराम ! मेरे लिये क्या कर्तव्य है, उसे आप मुझसे कहिये। इस प्रकार श्रीहनुमानजीद्वारा प्रेरित किये जानेपर हर्षितचित्त श्रीरामजी उनसे बोले ॥ १३६ ॥

श्रीराम उवाच

दुर्जयः खलु वैदेहीं गृहीत्वा कोऽपि निर्गतः।
हत्वा तं निर्गुणं वीरमानय त्वं कपीश्वर ॥१३७॥

श्रीरामजी बोले—कपीश्वर ! निश्चय ही कोई महान् दुरात्मा विदेहराजपुत्रीको लेकर निकल गया है। अतः तुम उस निर्दयी वीरको मारकर सीताको ले आओ ॥ १३७ ॥

मम दास्यं कुरु सखे भव विश्वासकारकः।
तथा कृते त्वया वीर मम कार्यं भविष्यति ॥१३८॥

मित्र ! तुम मेरी दासता स्वीकार करो और विश्वासपात्र बनो। ऐसा करनेपर वीर ! तुम्हारेद्वारा मेरा कार्य हो जायगा ॥ १३८ ॥

ओमित्याज्ञां तु शिरसा गृहीत्वा स कपीश्वरः।
विधेयं विधिवत्तच्च चकार शिरसा स्वयम् ॥१३९॥

कपीश्वर श्रीहनुमानजीने 'ओम्' (अच्छा) कहकर उस आज्ञाको नम्रतापूर्वक शिरसे धारण किया और फिर स्वयं उस कार्यको विधिवत् सम्पन्न किया ॥ १३९ ॥

श्रीवाल्मीकिरुवाच

इदं नाम्नां सहस्रं तु योऽधीते प्रत्यहं नरः।
दुःखौघो नश्यते तस्य सम्पत्तिर्वर्धते चिरम् ॥१४०॥

श्रीवाल्मीकिजी बोले—जो मनुष्य इस सहस्रनाम-स्तोत्रका प्रतिदिन पाठ करता है, उसके दुःखोंके समूह नष्ट हो जाते हैं और चिरकालतक धन-सम्पत्ति बढ़ती रहती है ॥ १४० ॥

वश्यं चतुर्विधं तस्य भवत्येव न संशयः।
राजानो राजपुत्राश्च राजकीयाश्च मन्त्रिणः ॥१४१॥

तथा राजा, राजपुत्र, मन्त्री और राजकीय नौकर-चाकर—ये चारों उसके वशमें हो जाते हैं। इसमें तनिक भी संशय नहीं है ॥ १४१ ॥

अश्वत्थमूले जपतां नास्ति वैरिकृतं भयम्।
त्रिकालपठनात्तस्य सिद्धिः स्यात् करसंस्थिता ॥१४२॥

अश्वत्थ वृक्षके नीचे इस स्तोत्रका पाठ करनेवालोंको शत्रुसे भय नहीं होता। प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल तीनों समय पाठ करनेसे सिद्धि उनके हाथोंमें स्थित हो जाती है ॥ १४२ ॥

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय प्रत्यहं यो पठेन्नरः।
ऐहिकामुष्मिकीं चैव लभते ऋद्धिमुत्तमाम् ॥१४३॥

जो मनुष्य प्रतिदिन ब्राह्म मुहूर्त्तमें उठकर इसका पाठ करता है, वह इहलोक और परलोककी उत्तम ऋद्धि (सम्पन्नता) को प्राप्त करता है ॥ १४३ ॥

संग्रामे संनिविष्टानां वैरिविद्रावणं परम्।
ज्वरापस्मारशमनं गुल्मादीनां निवारणम् ॥१४४॥

यह स्तोत्र युद्धभूमिमें प्रविष्ट वीरोंके लिये विशेष रूपसे शत्रुहन्ता है तथा ज्वर, अपस्मार (मूर्च्छा) का शमन करनेवाला और गुल्म आदि रोगोंका निवारक है ॥ १४४॥

साम्राज्यसुखसम्पत्तिदायकं पठनान्नृणाम्।
स्वर्गं मोक्षं समाप्नोति रामचन्द्रप्रसादतः ॥१४५॥

यह स्तोत्र पाठ करनेसे साम्राज्यकी सुख-सम्पत्ति प्रदान करता है तथा इसका पाठ करनेवालोंको श्रीरामचन्द्र-जीकी कृपासे स्वर्ग और मोक्षकी प्राप्ति होती है ॥ १४५ ॥

य इदं पठते नित्यं श्रावयेद्वा समाहितः।
सर्वान् कामानवाप्नोति वायुपुत्रप्रसादतः ॥१४६॥

जो मनुष्य इन्द्रियोंका संयम करके इसे पढ़ता है अथवा किसीको सुनाता है, वह श्रीहनुमानजीकी कृपासे सारी अभिलषित वस्तुओंको प्राप्त करता है ॥ १४६ ॥*

इति मन्त्रमहार्णवे पूर्वखण्डे नवमतरङ्गे श्रीरामकृतं हनुमत्सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

इस प्रकार मन्त्रमहार्णव-ग्रन्थके पूर्वखण्डके नवम तरङ्गमें श्रीरामचन्द्रजीके द्वारा कथित 'हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र' समाप्त हुआ।

---

* श्रीविष्णुसहस्रनाम आदि अन्य सहस्रनामस्तोत्रोंकी तरह श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रमें भी कई नाम एकसे अधिक बार आये हैं। नाम-स्मरणमें एक ही नामका बार-बार आना पुनरुक्ति-दोष नहीं, अपितु गुण ही है। यह मन्त्रशक्तिकी महत्ताका परिचायक है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

महायोगी श्रीहनुमान

(लेखक—पं० श्रीरेवाप्रसादजी द्विवेदी)

श्रीहनुमानजी महान् योगी हैं। उन्हें प्राणायामकी सिद्धि प्राप्त है। प्राण वायु है। इस प्रकार प्रत्येक योगी वायु-पुत्र होता है। केसरीकी पत्नी अञ्जनाके कोखमें जब हनुमानजी आये, तभी उन्हें उसी प्रकार योगाभ्यास करा दिया गया, जिस प्रकार अभिमन्युको चक्रव्यूह-भेदनका परिज्ञान हो गया था। 'जातो वातेन'का अर्थ है—वायुके उपायसे, अथवा उनकी साधनासे उत्पन्न।

निस्संदेह केसरीने हनुमानजीको प्राणायाम या प्राण-विद्याकी साधना गर्भमें ही करा दी थी। हनुमानजी शंकरजी-के अवतार माने जाते हैं। वे शंकर-सुत भी हैं। शंकरजीसे बड़ा योगी कौन हो सकता है। अतः हनुमानजी जन्मतः योगी हैं ही।

हनुमानजी योगी हैं—इस तथ्यकी पुष्टि उनकी विशेषताओं और योगसूत्रके तुलनात्मक अध्ययनसे भी होती है। हनुमानजीके विषयमें वाल्मीकिरामायणमें कहा गया है कि पैदा होते ही उन्हें छोड़कर अञ्जना कहीं चली गयीं। तब भयंकर भूखसे पीड़ित होकर हनुमानजी उगते हुए सूर्यको फल समझकर उसे खानेके लिये आकाशमें उछले। उसी समय राहु भी सूर्यको ग्रसने आ रहा था। उसने हनुमानजीको भी राहु समझा और इन्द्रसे शिकायत की। इन्द्रने हनुमानजीपर वज्रसे प्रहार किया। वह हनुमानजीकी बायीं ठुड्डीमें लगा और वे मूर्च्छित होकर गिर पड़े—

तदोद्यन्तं विवस्वन्तं जपापुष्पोत्करोपमम्।
ददर्श फललोभाच्च ह्युत्पपात रविं प्रति॥

* * *

पितुर्बलाच्च बाल्याच्च भास्कराभ्याशमागतः॥
(वा० रा० ७। ३५। २३, २९)

योगसूत्रमें भगवान् पतञ्जलिकी उक्ति है—

'भुवनज्ञानं सूर्ये संयमात्।'　(विभूति० २६)

सूर्यमें संयम अर्थात् धारणा, ध्यान तथा समाधि करनेसे भुवनज्ञान हो जाता है। सूर्यका अर्थ व्यासजीने अपने भाष्यमें सूर्यद्वार किया है और वाचस्पतिमिश्रने सुषुम्णा नाडी। अर्थ स्पष्ट है। जो योगी सुषुम्णासे समाधि लगाता है, वह सर्वज्ञ बन जाता है। सुषुम्णासे ही कुण्डलिनी उठती है और सहस्रारचक्रतक पहुँचती है। सूर्यको सहस्रार्चि कहा जाता है और सहस्रार ही सहस्रार्चि सूर्य है। पैदा होते ही हनुमानजीको यह सिद्धि प्राप्त हो गयी थी। यह सिद्धि अविदेहलय-नामक योगीके लिये बतलायी गयी है। विदेहलयका अर्थ है—असम्प्रज्ञात-समाधिका योगी अर्थात् वह योगी जिसे समाधिकी स्थितिमें द्वैतका भान सर्वथा नहीं होता। सम्प्रज्ञात-समाधिमें द्वैतका भान होता है, किंतु यह योगी भी प्रायः विदेह-जैसा ही होता है। हनुमानजीके चरित्रसे उनका विदेहत्व भी स्पष्ट है।

यह भी विदित है कि सीताजीकी खोजके लिये हनुमानजी-को ही भेजा गया। जिसे भुवनज्ञान न हो, वह किस प्रकार खोज कर सकता है। दूसरे सीताजीको जो ले गया है, वह रावण भी स्वयं महान् योगी है। योगसाधनामें यम और नियमकी अपेक्षा होती है! रावणने नियमके प्रथम अङ्ग तपका घोर अनुष्ठान किया था, किंतु वाल्मीकीय रामायणके उत्तरकाण्डके अनुसार उसकी उत्पत्तिकी जड़में वंश-परम्परासे तमोवृत्ति चली आ रही थी, अतः वह योगसिद्धि पाकर तमोमार्गकी ओर बढ़ा। रावणको अमृतत्व भी प्राप्त था ही। मेघनाद आदि राक्षसगण भी आकाशमें उड़ जाते थे तथा उन्हें छाया पकड़ लेने तककी सिद्धि प्राप्त थी। इस प्रकार वे भी योगसिद्धिसे विभूषित थे।

योगशास्त्रमें संयम (धारणा, ध्यान, समाधि) के और भी अनेक फल निरूपित हैं। उनमें अणिमादि सिद्धियाँ भी हैं। हनुमानजीमें भी ये सिद्धियाँ विद्यमान हैं। वे जब चाहते, तब छोटा या बड़ा रूप धारण कर लेते थे। सुरसाके मुखमें प्रवेशके पूर्व वे अपना आकार बढ़ाते गये और जब उसका मुख उत्तरोत्तर विस्तीर्ण होता गया तो अँगूठेके बराबर छोटे हो गये तथा उसमें प्रवेश करके बाहर निकल आये। (वा० रा० ५। १५०—१६१) सिंहिकाके साथ भी उन्होंने ऐसा ही व्यवहार किया (वा० रा० ५। १। १९१)।

किष्किन्धाकाण्डमें हनुमानजीने भगवान् श्रीरामके समक्ष सुन्दर रूप धारण किया था, जब वे सुग्रीवके द्वारा भेद लेनेके लिये भेजे गये थे। उन्हें वाल्मीकिजीने सुन्दर ही नहीं, 'वज्रसंहननः' भी कहा है। सिंहिकाने जब हनुमानजीकी छाया पकड़ ली और मुँह फैलाया तो हनुमानजी, जिनका शरीर पर्वतके समान विशाल था, लघुकाय हो गये और उसमें प्रवेश कर बाहर निकल आये। तत्पश्चात् उसे मार भी डाला। वाल्मीकिजीका कथन है—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स तस्या विकृते वक्त्रे वज्रसंहननः कपिः ॥
संक्षिप्य मुहुरात्मानं निपपात महाकपिः ।
(वा० रा० ५ । १ । १९४½)

योगशास्त्रमें वर्णन है—'सिद्ध योगीके शरीरमें रूप, लावण्य, वल और वज्र-सी दृढ़ता आ जाती है'—

रूपलावण्यबलवज्रसंहननत्वानि कायसंपत् ।
(विभूति० ४६)

वज्रसंहननत्वका अर्थ करते हुए वाचस्पति मिश्रने लिखा है—'वज्रस्येव संहननम् अवयवव्यूहो दृढो (ढं) यस्य स तथोक्तः ॥' अर्थात् जिसका संहनन—अङ्गोंका समुदाय अर्थात् शरीर वज्रके समान दृढ़—कठोर या घना हो। संस्कृतमें संहननका अर्थ शरीर है। अमरकोषके इस वचनसे यह तथ्य स्पष्ट है—

'गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्ष्म विग्रहः ।'
(२ । ६ । ७०)

'बजरंगवली' या 'वज्राङ्गवीर' शब्द हनुमानजीके अतिरिक्त अन्य किसी देवताके लिये नहीं प्रयुक्त हुआ है। ये शब्द संस्कृतके 'वज्रसंहनन शब्दके ही रूपान्तर हैं।

योगसिद्धिमें 'मनोजवित्व'की भी गणना की जाती है। कहा जाता है—विशिष्ट संयमद्वारा इन्द्रियजयकी सिद्धिपर पहुँचते ही 'मनोजवित्व' चला आता है अर्थात् योगी वेगमें मनके समान तीव्रता प्राप्त कर लेता है—

ग्रहणस्वरूपास्मितान्वयार्थवत्त्वसंयमादिन्द्रियजयः ॥
ततो मनोजवित्वं विकरणभावः प्रधानजयश्च ॥
(यो० सू० वि० पा० ४७-४८)

हनुमानजीके लिये मनोजवित्व प्रसिद्ध ही है। यथा—
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।

इन्द्रियजयके लिये रावणके अन्तःपुरमें अस्त-व्यस्त अवस्थामें सोयी हुई स्त्रियोंके दर्शनके बाद हनुमानजीके निम्नलिखित वाक्य भारतीय साहित्यके अमूल्य रत्न हैं—

कामं दृष्टा मया सर्वा विश्वस्ता रावणस्त्रियः ।
न तु मे मनसा किंचिद् वैकृत्यमुपपद्यते ॥
मनो हि हेतुः सर्वेषामिन्द्रियाणां प्रवर्तने ।
शुभाशुभास्ववस्थासु तच्च मे सुव्यवस्थितम् ॥
* * *
तदिदं मार्गितं तावच्छुद्धेन मनसा मया ॥
(वा० रा० ५ । ११ । ४१-४२—४५)

'मैंने स्त्रियोंको देखा तो अवश्य, किंतु इन्हें देखकर मेरे मनमें कोई विकार उत्पन्न नहीं हुआ।' बहुत बड़ी कसौटी है यह जितेन्द्रियत्वकी ।

हनुमानजी किष्किन्धाकाण्डमें ऋक्षबिलमें प्रवेश करके स्वयंप्रभा नामक कृष्णाजिनधारिणी दिव्य तापसीके दर्शन करते हैं। वही तापसी उन्हें उस बिलसे बाहर निकालती है और निकालनेके पहले कहती है कि सभी वानर अपनी-अपनी आँखें बंद कर लें। यह तापसी हेमानामक देवीके उत्तम उपवनकी रक्षामें उद्यत है। क्या है वह स्वयंप्रभा ? स्पष्ट ही 'हिरण्मयेन पात्रेण' जिस सत्यका मुख ढका है, उसे अनावृत करने-वाली प्रतिभा ही तो है । योगशास्त्र प्रतिभाको 'उदयके पूर्वकी सूर्य-प्रभा' की उपमा देता है। 'प्रातिभाद्वा सर्वम्'—सूत्रके भाष्यमें व्यासजीका कथन है—

'प्रतिभं नाम तारकम्, तद् विवेकजस्य ज्ञानस्य पूर्वरूपम् । यथा उदये प्रभा भास्करस्य । तेन वा सर्वं जानाति योगी प्रातिभस्य ज्ञानस्योत्पत्तौ । (विभूति० ३३ व्यासभाष्य)

यह प्रभा अहैतुकी है, अतः स्वयम्भू अर्थात् स्वयं प्रभा है । यह हनुमानजीको प्राप्त हुई, तभी वे दक्षिण दिशाकी यात्रा कर जगदम्बा सीताजीके दर्शन कर सके।

इस स्थूल विवेचनसे भी यह स्पष्ट है कि हनुमानजीका चरित्र योगीका चरित्र है—उस योगीका जो प्राणायाम अथवा प्राणनिरोधके द्वारा प्राणशक्तिको वशीभूत करके मृत्यु पर विजय प्राप्त कर चुका हो। यह तो सर्वविदित ही है कि हनुमानजी चिरंजीवी हैं और भगवान्‌का जहाँ कथा-कीर्तन होता है, वहाँ वे विद्यमान रहते हैं।

महाकवि कालिदासने समुद्रसंतरणके समय हनुमानजीको ममत्वसे रहित योगीकी उपमा दी है और कहा है—'जिस प्रकार निर्मम योगी संसार-सागरको पार कर जाता है, उसी प्रकार मारुति समुद्र-पार हो गये'—

'मारुतिः सागरं तीर्णः संसारमिव निर्ममः'
(रघुवंश १२ । ६०)

सत्य यह है कि जो योगी होता है, वह ममतारहित भी होता है, अतः संसारको भी पार कर लेता है। यहाँ हनुमानजीके विषयमें महाकवि कालिदास दोनों बातें कह रहे हैं—मारुति योगी हैं, अतः वे ममता-मोहके बन्धनसे परे हैं। उन्होंने समुद्रको ही नहीं, संसारको भी पार कर लिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीभरत और हनुमानजी

(लेखक—श्रीरामाश्रयप्रसादसिंहजी)

पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदासजीने अपने इष्टदेव मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान् श्रीरामके अतिरिक्त अपने ग्रन्थोंमें जिन पात्रोंको अपना आदर्श बनाया है, उनमें प्रेममूर्ति श्रीभरत एवं सेवामूर्ति हनुमानजी सर्वाधिक प्रशस्त हैं। गोस्वामीजीकी रचनाओंमें प्रेम-भक्ति और सेवाका जो सात्त्विक रूप मिलता है, वह अधिकांश इन्हीं दोनों पात्रोंके माध्यमसे स्पष्ट हो सका है। वास्तवमें भक्तिके जिन विविध रूपोंका वर्णन मानस तथा अन्य ग्रन्थोंमें किया गया है, उनकी समग्रता श्रीभरत एवं हनुमानजीके चरित्रमें ही मिलती है। श्रीभरतके माध्यमसे प्रेम, दैन्य, तप एवं त्यागका तथा हनुमानजीके माध्यमसे सेवा, कर्म, शक्ति एवं शौर्यका प्रतिपादन हुआ है।

श्रीरामचरितमानसमें जब हम श्रीभरत और हनुमानजीके चरित्रका अवलोकन करते हैं तो बाहरसे भिन्नता प्रतीत होनेपर भी दोनोंके पावन चरित्रमें अद्भुत साम्य है। दोनोंने स्वेच्छासे अपने-आपको प्रभु श्रीरामके चरणोंमें अर्पित कर दिया है। दोनोंका जीवन अपने लिये न होकर प्रभु श्रीरामके लिये है। भगवान् श्रीरामकी इच्छा ही इन दोनोंके लिये एकमात्र करणीय कर्म है। दोनोंका मार्ग भिन्न है, पर लक्ष्य एक। दोनों एक ही जगह पहुँचना चाहते हैं—पतितपावन भगवान् श्रीरामके दिव्य चरणोंतक। श्रीभरतकी मान्यता है—

अरथ न धरम न काम रुचि गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद यह बरदान न आन॥

और हनुमानजी तो भगवान् श्रीरामके चरणोंको छोड़ अन्यत्र रहते ही नहीं। गोस्वामीजीने बार-बार हनुमानजीको भगवान् श्रीरामके चरणोंपर प्रणिपात करते हुए दिखलाया है—

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना। सो सुख उमा जाइ नहिं बरना॥
(मानस ४ । १ । ३)

अस कहि परेउ चरन अकुलाई। निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई॥
(मानस ४ । २ । ३)

सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत॥
(मा० सुन्दरकाण्ड ३२)

श्रीभरत और हनुमानजी—दोनों सीताजीको माँ मानते हैं और सीताजीने दोनोंको आशीर्वाद भी दिया है; किंतु अन्तर इतना ही है कि हनुमानजीको प्रकट रूपमें और श्रीभरतको अप्रकट रूपमें।

हनुमानजीको—

आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना। होहु तात बल सील निधाना॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू॥
(मानस ५ । १६ । १-२)

श्रीभरतको—

सीयँ असीस दीन्हि मन माहीं। मगन सनेह देह सुधि नाहीं॥

श्रीभरत और हनुमानजी दोनों भक्तिके आचार्य हैं। दोनों जीवको भगवान् श्रीरामतक पहुँचाते हैं। दोनोंका जीवन परोपकारके लिये है। दोनोंकी यात्रा श्रीरामकार्यके लिये होती है। श्रीभरतकी यात्रा भूमिपर होती है और हनुमानजीकी यात्रा आकाशमार्गसे। श्रीभरतलालकी यात्रा भावकी भूमिपर हुई और हनुमानजीकी यात्रा चिदाकाश-में। श्रीभरतके साथ समाज है, हनुमानजी अकेले हैं। श्रीभरतके समाजके साथ सबके अपने-अपने वाहन हैं। हनुमान-जीके साथ कुछ नहीं। चिदाकाशकी यात्रामें ज्ञान और वैराग्यके पंख एवं देहाभिमानसे ऊपर उठना अनिवार्य है। इसीलिये हनुमानजी समुद्रके ऊपर आकाशमार्गसे जा रहे हैं। सागर देहाभिमानका प्रतीक है। 'विनयपत्रिका' में गोस्वामीजीने लिखा है—

'कुणप-अभिमान सागर भयंकर घोर,
बिपुल अवगाह, दुस्तर अपारं।'

अर्थात् देहाभिमान अत्यन्त भयंकर, अथाह, अपार एवं दुस्तर समुद्र है। अतः हनुमानजी देहाभिमानसे ऊपर उठ-कर ज्ञान-वैराग्यके पंखसे चिदाकाशमें यात्रा कर रहे हैं।

चित्रकूटके श्रीराम-भरत-मिलन और ऋष्यमूक पर्वतके निकट श्रीराम-हनुमान-मिलनमें एक और अन्तर द्रष्टव्य है। श्रीभरत मिलते समय बिलकुल चुप थे, श्रीराम भी चुप थे और सारा समाज चुप था। किंतु हनुमानजी मिलते समय बोलते गये और प्रश्न पूछते गये। पर अन्तमें जब अपनी अज्ञताका बोध हुआ, तब दीन भावसे प्रार्थना करने लगे—

एकु मैं मंद मोहबस कुटिल हृदय अग्यान।
पुनि प्रभु मोहि बिसारेउ दीनबंधु भगवान॥
(मानस ४ । २)

तब भगवान् श्रीरामने उन्हें हृदयसे लगा लिया।

श्रीभरत और हनुमानजी ऐसे उच्चकोटिके संत हैं, जो अपने पावन साहचर्य और दर्शन-लाभसे सबको पवित्र करते हैं। हनुमानजी-जैसे संतके दर्शनसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लंकिनी-जैसी निशाचरी (या निशिचरी) का कल्याण हो जाता है और उसे स्वर्ग तथा अपवर्गके अलभ्य सुखसे भी अत्यधिक सुखकी प्राप्ति हो जाती है—

तात मोर अति पुन्य बहूता। देखेउँ नयन राम कर दूता॥
(मानस ५। ३। ४)

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥
(मानस ५। ४)

विभीषण भी हनुमानजीको संत कहकर सम्बोधित करते हैं—

अब मोहि भा भरोस हनुमंता। बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता॥

भरद्वाज मुनि तो श्रीभरतके दर्शनको श्रीसीतारामके दर्शनका ही फल मानते हैं। वे भरतलालजीसे कहते हैं—

सुनहु भरत हम झूठ न कहहीं। उदासीन तापस बन रहहीं॥
सब साधन कर सुफल सुहावा। लखन राम सिय दरसनु पावा॥
तेहि फल कर फलु दरस तुम्हारा। सहित पयाग सुभाग हमारा॥
(मानस २। २०९। २-३)

हनुमानजी श्रीभरतकी सराहना करते हैं और श्रीभरत हनुमानजीकी। हनुमानजीकी धारणा है कि श्रीभरतका चरित अद्वितीय महासागर है। धरतीका सागर तो श्रीभरतचरित-सागरके समक्ष अत्यन्त छोटा और न्यून है। धरतीके सागर-को सगर-पुत्रोंने खोदा है, देवता और दैत्योंने मथा है, स्वयं हनुमानजीने लाँघा है, नल-नीलने बाँधा है और अगस्त्य-जीने पी लिया है, किंतु श्रीरघुनाथजीके भाई श्रीभरतकी महिमाको कौन तर सकता है—

धनि भरत! धनि भरत! करत भयो,
मगन मौन रह्यो मन अनुराग रयो है॥
यह जलनिधि खन्यो, मथ्यो,
लँघ्यो, बाँध्यो, अँचयो है।
तुलसिदास रघुबीरबंधु महिमा को सिंधु
तरि को कवि पार गयो है?
(गीतावली, लंकाकाण्ड ११)

हनुमानजी अत्यन्त स्पष्ट शब्दोंमें कहते हैं कि यदि धरतीपर भरतजीका जन्म नहीं हुआ होता तो खाँड़ेकी धार-रूप इस दुर्गम मार्गपर चलकर प्रेमव्रतका आचरण कौन करता—

होतो नहि जौ जग जनम भरतको।
तौ कपि कहत, कृपान-धार मग चलि आचरत बरत को?
(गीतावली, लंकाकाण्ड १२)

दूसरी ओर श्रीभरत पवनतनय हनुमानजीकी प्रशस्ति गाते नहीं थकते। अपनेको मूढ़ कहते हुए श्रीभरत हनुमान-जीको शुद्धचित्त, सुमतिवाला और सुहृद् कहते हैं। उनकी उक्ति है कि 'हे हनुमान! तुम भगवान् श्रीरामके पैरोंको पकड़कर मेरी एक विनय सुनाना। मुझ मूढ़को मेरी माताने प्रभुको कष्ट पहुँचानेके लिये व्यर्थ ही जन्म दिया है; क्योंकि मैं उनका सेवक कहलाकर भी समय उपस्थित होनेपर उनकी सहायता न कर सका'—

बिनय सुनायबी परि पाय।
कहौं कहा, कपीस! तुम्ह सुचि, सुमति, सुहृद सुभाय॥
स्वामि-संकट-हेतु हौं जड़ जननि जनम्यो जाय।
समौ पाइ, कहाइ सेवक घट्यो तौ न सहाय॥
(गीतावली, लंकाकाण्ड १४)

इतना ही नहीं, श्रीराम-विरह-सागरमें डूबते हुए श्रीभरतको जब हनुमानजीने यह समाचार दिया कि रघुकुलतिलक भगवान् श्रीराम अपने अनुज और धर्मपत्नी सीताके साथ सकुशल वापस आ रहे हैं, तब श्रीभरतने दौड़कर हनुमानजीको गले लगाते हुए कहा—तुम्हारे दर्शनमात्रसे ही मेरे सारे कष्ट मिट गये, जो आज तुम-जैसे 'रामपिरीते' से भेंट हुई।

श्रीभरत एवं हनुमानजी—दोनों भक्तवत्सल, दीनबन्धु भगवान् श्रीरामके अनन्य भक्त एवं सेवक हैं। भगवान् श्रीरामकी लीलामें श्रीभरत और हनुमानजी—दोनोंको जो भाग दिया गया था, उसका वे पूर्णरूपसे निर्वाह करते हैं। दोनों ही साधकोंकी सहायता करते हैं। संतोंकी मान्यता है कि प्रभु श्रीराम-भक्तिकी प्राप्तिके लिये भरत-चरितका पाठ नियमपूर्वक करना चाहिये। अयोध्याकाण्डके अन्तमें गोस्वामीजी कहते हैं—

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं।
सीयराम पद प्रेमु अवसि होइ भवरस बिरति॥
(मानस २। ३२६)

हनुमानजीका चरित्र भी ऐसा ही पावन है। ये वैराग्यके प्रतीक तो हैं ही, कर्म, सेवा और भक्तिके मानदण्ड भी हैं। हनुमानजी भक्तोंकी कामनाओंकी भी पूर्ति करते हैं और प्रभु-भक्ति तथा श्रीराम-प्रेम भी प्रदान करते हैं। श्रीभरत भगवत्सेवामय प्रेम-विग्रह हैं तो हनुमानजी भगवत्प्रेममय सेवा-विग्रह।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कल्याण'का आगामी विशेषाङ्क—'श्रीभगवत्कृपा-अङ्क'

[सम्मान्य लेखक महानुभावोंसे सादर प्रार्थना]

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥

हमारे सम्मान्य पाठक-पाठिकाओं, संत-महात्माओं, विद्वानों एवं विचारकोंकी सेवामें 'कल्याण'के दिसम्बर १९७४ ई०के अङ्कमें विज्ञप्ति प्रकाशित की गयी थी कि जनवरी १९७६ ई०का विशेषाङ्क 'श्रीभगवत्कृपा-अङ्क' होगा। देवदुर्लभ मानव-शरीरकी प्राप्ति भगवत्कृपासे ही होती है। मानवकी पारलौकिक और लौकिक उन्नति तथा सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक क्षेत्रोंकी प्रगतिकी आधारशिला भगवत्कृपा ही है। भगवत्कृपाका आश्रय लेनेपर हमारे पुरुषार्थचतुष्टय—अर्थ, काम, धर्म और मोक्षकी सहज सिद्धि सुलभ हो जाती है। इसी भगवत्कृपाकी अमोघ शक्तिके स्वरूप, प्रभाव, तत्त्व, रहस्य, आदिका तात्पर्य अपने प्रेमी कृपालु पाठकोंतक पहुँचानेके लिये 'श्रीभगवत्कृपा-अङ्क' के प्रकाशनका निश्चय किया गया है। आशा है, कृपालु पाठक तथा 'कल्याण'के प्रति रुचि रखनेवाले सज्जन हमारे निर्णयका स्वागत करेंगे। 'कल्याण' सभीका है, इस बातकी ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए हम आपसे विशेषाङ्कके लिये उपयोगी निबन्ध, लेख, रचनाएँ आदि यथाशीघ्र भेजनेकी विनम्र प्रार्थना करते हैं। रचनाएँ हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, बंगला, मराठी, गुजराती एवं अन्य भारतीय भाषाओंमें भेजी जा सकती हैं। साफ-साफ एक तरफ लिखी गयी रचनाएँ भेजनेसे हमें सामग्री-उपयोगमें सुविधा होगी। कृपया अपनी रचनाएँ जुलाई १९७५ ई०के अन्तिम सप्ताहतक अवश्य भेज दें, जिससे उन्हें उचित स्थान दिया जा सके। इस अवधिके बाद आनेवाली रचनाओंको समुचित स्थान मिलनेमें कठिनता हो सकती है। विशेषाङ्ककी संक्षिप्त प्रस्तावित सूची नीचे दी गयी है। इस सूचीमें निर्धारित विषयोंके अतिरिक्त भी भगवत्कृपासे सम्बन्धित लेखादि तथा सुझाव आनेपर हमें प्रसन्नता ही होगी। हमारा विनम्र निवेदन है कि लेख भेजनेका कष्ट वे ही लेखक महानुभाव करें, जिनका सम्बन्धित विषयपर अधिकार हो, जो लेखन-कलासे परिचित हों एवं अपने विचार बोधगम्य, प्रभावपूर्ण भाषामें व्यक्त करनेकी क्षमता रखते हों। आशा है, संत-महात्मा, विद्वज्जन, साहित्यसेवी तथा कवि हमारी प्रार्थनापर ध्यान देकर 'कल्याण'की निष्काम सेवामें सहयोग देंगे। —सम्पादक

प्रस्तावित विषय-सूची

१–अदभ्रकरुणामय श्रीभगवान् और उनकी दिव्य कृपाशक्ति
२–परम कल्याणकारिणी भगवत्कृपा
३–महामहिमामयी भगवत्कृपा
४–अचिन्त्य चमत्कारिणी भगवत्कृपा
५–विश्वसंकटनिवारिणी भगवत्कृपा
६–विश्व-कल्याणकारिणी भगवत्कृपा
७–प्रपन्नता और भगवत्कृपा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८-प्रभुमूरति कृपामयी है !
९-भगवत्कृपाके लक्षण, स्वरूप और उदाहरण
१०-भगवत्कृपाकी महिमा
११-भगवत्कृपाकी अमोघता
१२-भगवत्कृपाकी व्यापकता
१३-भगवत्कृपाका वैशिष्ट्य
१४-भगवत्कृपाका रहस्य
१५-भगवत्कृपाका प्रभाव
१६-भगवत्कृपा-वैभव
१७-भगवत्कृपासे सर्वार्थसिद्धि
१८-भगवत्कृपा ही साधन और सिद्धि है
१९-भगवत्कृपाका अजस्र स्रोत
२०-भगवत्कृपाकी अलोकसामान्यता (अलौकिकता)
२१-अहैतुकी भगवत्कृपा
२२-जगत्के सर्जन, पालन और संहारमें भगवत्कृपा
२३-सुख-वैभवमें भगवत्कृपा
२४-अनुकूलतामें भगवत्कृपा
२५-दुःखमें भगवत्कृपा
२६-दीनता और भगवत्कृपा
२७-विपत्ति भी भगवत्कृपाका ही रूप है
२८-क्रोधोऽपि देवस्य वरेण तुल्यः
२९-भगवान्का कृपामय विधान
३०-प्रतिकूलतामें भगवत्कृपा
३१-अन्तकालमें भगवत्कृपा
३२-भगवत्कृपाकी विस्मृति ही दुर्भाग्य है
३३-भगवत्कृपाका सर्वत्र, सब कालमें दर्शन
३४-सतत भगवत्कृपा-स्मृति ही सौभाग्य है
३५-प्रत्येक परिस्थितिमें भगवत्कृपा
३६-अघटनघटनापटीयसी भगवत्कृपा
३७-भगवत्कृपाका प्रत्यक्ष अनुभव
३८-भगवत्कृपाकी पहचान
३९-शोक-चिन्ता-भयनाशक भगवत्कृपा
४०-वेदोंमें भगवत्कृपाका स्वरूप और उसकी प्राप्तिके साधन
४१-उपनिषदोंमें भगवत्कृपाका स्वरूप और उसकी प्राप्तिके साधन
४२-स्मृतियोंमें भगवत्कृपाका स्वरूप और उसकी प्राप्तिके साधन
४३-तन्त्र और आगमोंमें भगवत्कृपा और उसकी प्राप्तिके उपाय
४४-नारद-पञ्चरात्रमें भगवत्कृपा
४५-भक्ति-सूत्र एवं भगवत्कृपा
४६-दर्शनोंमें भगवत्कृपा
४७-योगशास्त्रमें भगवत्कृपा
४८-मन्त्रशक्ति और भगवत्कृपा
४९-श्रीवाल्मीकीय रामायणमें भगवत्कृपा
५०-अन्यान्य रामायणोंमें भगवत्कृपा
५१-श्रीमद्भागवतमें भगवत्कृपा
५२-इतिहास-पुराणोंमें भगवत्कृपा
५३-महाभारतमें भगवत्कृपाका रूप
५४-श्रीमद्भगवद्गीतामें भगवत्कृपाका स्वरूप
५५-श्रीरामचरितमानसमें भगवत्कृपा
५६-आयुर्वेद और भगवत्कृपा
५७-ज्योतिष और भगवत्कृपा
५८-संत-साहित्यमें भगवत्कृपा
५९-तुलसी-साहित्यमें भगवत्कृपा
६०-सूर-साहित्यमें भगवत्कृपा
६१-काव्य ग्रन्थोंमें भगवत्कृपा
६२-भक्त कवियोंकी रचनाओंमें भगवत्कृपाका स्वरूप
६३-लोक-साहित्यमें भगवत्कृपा
६४-पाश्चात्त्य-साहित्यमें भगवत्कृपा
६५-भौतिक विज्ञान और भगवत्कृपा
६६-विश्वके विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायोंमें भगवत्कृपावर्णन
६७-श्रीशंकराचार्य और भगवत्कृपा
६८-श्रीरामानुजाचार्य और भगवत्कृपा
६९-श्रीमध्वाचार्य और भगवत्कृपा
७०-श्रीनिम्बार्काचार्य और भगवत्कृपा
७१-श्रीविष्णुस्वामि-मत और भगवत्कृपा
७२-श्रीवल्लभाचार्य और भगवत्कृपा
७३-श्रीचैतन्यमहाप्रभु और भगवत्कृपा
७४-संत-महात्मा-ऋषि-मुनि और भगवत्कृपा
७५-श्रीशिवोपासना और भगवत्कृपा
७६-श्रीविष्णु-उपासना और भगवत्कृपा
७७-श्रीरामोपासना और भगवत्कृपा
७८-श्रीकृष्णोपासना और भगवत्कृपा
७९-युगलोपासना और भगवत्कृपा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८०–शाक्त-मतमें भगवत्कृपा
८१–सौर-मतमें भगवत्कृपा
८२–गाणपत-मतमें भगवत्कृपा
८३–भगवान्‌के विविध अवतार और उनकी कृपाशक्ति
८४–स्तोत्रकदम्ब और भगवत्कृपा
८५–भगवत्कृपासे भगवद्दर्शन
८६–भगवन्नाम-जप और भगवत्कृपा
८७–भगवत्कृपा-प्राप्तिके सरल उपाय
८८–भगवत्कृपा-दर्शनके उपाय
८९–भक्तियोग और भगवत्कृपा
९०–ज्ञानयोग और भगवत्कृपा
९१–कर्मयोग और भगवत्कृपा
९२–ध्यानयोग और भगवत्कृपा
९३–प्रेमयोग और भगवत्कृपा
९४–प्रेमाभक्ति और भगवत्कृपा
९५–कर्म-सिद्धान्त और भगवत्कृपा
९६–भगवत्कृपामें प्रारब्धकी अबाधकता
९७–भगवत्कृपा और भाग्य
९८–क्या भगवत्कृपा-आश्रयी कर्म नहीं करता ?
९९–भगवत्कृपा और मोक्ष
१००–भगवत्कृपा और पुरुषार्थ
१०१–मुक्ति भगवत्कृपासे या पुरुषार्थसे
१०२–भगवत्कृपापर अटूट विश्वासका फल
१०३–भगवत्कृपापर अविश्वाससे हानि
१०४–तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्षमाणः
१०५–भक्त और भगवत्कृपा
१०६–संतकृपा और भगवत्कृपा
१०७–बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं संता
१०८–गुरु-कृपा और भगवत्कृपा
१०९–शास्त्र-कृपा और भगवत्कृपा
११०–भगवत्कृपासे मानसिक, शाब्दिक तथा दृष्टि और स्पर्श-सम्बन्धका भाव
१११–भगवत्कृपाका तात्पर्य
११२–भगवत्कृपाके पर्याय—अनुकम्पा, करुणा, दया, अनुग्रह, अनुक्रोश, अनुभव, प्रसाद, आश्रय, अवलम्बन, शरण, रहम आदि शब्दोंकी विभिन्न सार्थकता
११३–भगवत्कृपाके कारण
११४–निष्कामभाव और भगवत्कृपा
११५–दैवी सम्पत्ति और भगवत्कृपा
११६–साधन-सम्पत्ति और भगवत्कृपा
११७–भगवत्कृपा और सत्सङ्ग
११८–भक्तभयहारिणी भगवत्कृपा
११९–देश-भक्ति और भगवत्कृपा
१२०–मातृ-पितृ-भक्ति और भगवत्कृपा
१२१–भगवत्कृपा और आदर्श जीवन
१२२–लोकसंग्रह और भगवत्कृपा
१२३–सभी युगोंमें आश्रयरूपा भगवत्कृपा-शक्ति
१२४–कलियुगमें परमाश्रयरूपा भगवत्कृपा
१२५–कलियुगमें विशेष भगवत्कृपा
१२६–भगवत्कृपाकी नित्यता
१२७–भगवत्कृपा सदा सुलभ है
१२८–भगवत्कृपाके सभी अधिकारी
१२९–देवताओंपर भगवत्कृपा
१३०–असुरोंपर भगवत्कृपा
१३१–पतितोंपर भगवत्कृपा
१३२–नास्तिकोंपर भगवत्कृपा
१३३–भगवत्कृपा-प्राप्तिके मन्त्र
१३४–भगवत्कृपा-प्राप्तिके अनुष्ठान
१३५–श्रीभगवत्कृपाकटाक्षस्तोत्र
१३६–श्रीरामकृपाकटाक्षस्तोत्र
१३७–श्रीकृष्णकृपाकटाक्षस्तोत्र
१३८–श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तोत्र
१३९–भगवत्कृपा-प्राप्त्यर्थ स्तोत्र-प्रार्थना
१४०–स्तुतियोंद्वारा भगवत्कृपा-प्रसादकी प्राप्ति
१४१–भगवत्कृपा-शक्तिकी विविध चमत्कारपूर्ण घटनाएँ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढ़ो, समझो और करो

(१)

जीवनदाता श्रीहनुमानजी

सन् १९५९ ई०में मेरी सिकमी जमीनकी मकई कुछ विरोधी भाइयोंने जबरदस्ती काट ली। जब मैं स्कूलसे गाँव पहुँचा तो लोग मुझे धिक्कारने लगे। मेरी पत्नीने भी पूजा-पाठके समय ताना मारा। मैं रो पड़ा। इसी समय मनमें आया कि 'आजीवन जिस पथसे चला हूँ, उसी पथसे मैं विरोधी भाइयोंका भी प्रतिकार करूँगा तथा शेष खेतको स्वयं काटूँगा।' इसके लिये मैंने हनुमानचालीसाका सौ बार पाठ किया और जलपान करके खेतकी ओर चल पड़ा। पत्नी घबरायी। उसने मेरे भाई तथा एक मजदूरको साथ कर दिया। मैं लगातार हनुमानचालीसाका पाठ करता हुआ ग्यारह बजे खेतपर पहुँचा। वहाँ कोई न था। आँखें उठायीं तो सामने हनुमानजीकी एक विशाल मूर्ति दिखायी दी, जो एक पैर दूसरी जाँघपर टेके सुरसाके सामनेवाले विशाल रूपमें थी। मैंने एक विचित्र स्फूर्तिका अनुभव किया और खचाखच मकई काटने लगा। पर मेरा भाई और मजदूर भयभीत होकर चारों ओर घूम-घूमकर देखने लगे। वे बीच-बीचमें मकई भी काटते जाते थे। लगभग तीन घंटेतक हमलोग मकई काटते रहे। मुझे बड़ा उत्साह था और बार-बार मैं उनसे कह रहा था कि देखो सामने हनुमानजी स्वयं हमारी रक्षामें आ गये हैं। पर वे उन्हें नहीं देख पा रहे थे और 'बोझ ढो लें'—कहकर वे मुझे खेतपरसे हट जानेके लिये विनय करने लगे; क्योंकि बगलके मकई-खेतमें कुछ शोर-गुल होने लगा था। मैंने उनसे कहा कि 'जबतक मैं हूँ, बोझ ढोकर ले जाओ, नहीं तो आपत्तिकी आशङ्का है।'

विरोधियोंकी ओरसे एकाध आदमी झाँकी देकर चले गये। बोझ ढोनेमें काफी समय लग गया। जब थोड़े-से बोझ रह गये, तब मेरा एक धोबी मित्र आया और वह मुझे वहाँसे खींच ले चला। मैं उसके साथ चला कि वह विशाल मूर्ति ओझल हो गयी और हो-हल्ला करते बाईस विरोधी नौजवान बर्छे-भालोंके साथ हमारे चारों ओर आ खड़े हुए। हम कुछ सँभलें, इससे पहले ही वे धड़ाधड़ मेरे धोबी मित्रको मारने लगे और मुझे उठाकर सघन मकईमें ले गये। मेरे भाईको एक ओर पकड़ रखा। मैं आँखें बंदकर अब भी 'जै हनुमंत संत हितकारी' गुनगुना रहा था। इतनेमें ही बाहरसे आवाज आयी—'महावीर बजरंगबलीकी जय!' और विरोधी कुछ घबराये हुए-से बोले—'क्या आप आपसमें ही दंगा कराना चाहते हैं?' मैंने कहा कि 'जल्दी मुझे जहाँसे उठाकर लाये हो, वहीं रख दो। नहीं तो अनर्थ हो जायगा।' उन्होंने वैसा ही किया और साठ-सत्तर जवान जो पड़ोसके गाँवसे मेरे वधका समाचार सुनकर आ गये थे, मेरे इशारेपर वापस लौट गये। बात यह हुई कि पड़ोसके भाइयोंने मेरे मजदूरसे जब यह हाल सुना, तब वे एकाएक जोशमें आ गये थे। पर मेरी तथा विरोधी भाइयोंकी आँखोंके सामने एक दूसरी ही झाँकी थी, जिसके बलपर आज भी ये विरोधी भाई मेरे सहयोगी बने हुए हैं। अस्तु, **'एक भरोसो एक बल'** हो जानेपर श्रीहनुमानजी महाराज रक्षा करते ही हैं। आवश्यकता है सच्चे विश्वासकी।

—हनुमानजीका भक्त एक भाई

(२)

निस्संदेह श्रीहनुमानजी ही प्रकट हो गये

राजस्थानके अन्तर्गत मेवाड़राज्यमें स्थित सियारवाँ ग्राम उदयपुरके महाराणा सज्जनसिंहने ब्राह्मणोंको प्रदान कर दिया था तथा इस ग्राम-दानके अतिरिक्त उन्हें राज्यकी ओरसे बारह सौ रुपयेकी भेंट भी मिलती थी। इतना ही नहीं, ग्रामके लिये उन्हें कर भी नहीं देना पड़ता था। महाराणा सज्जनसिंहके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंहने निश्चित प्रमाण अथवा किसी दानपत्र या ताम्रलेखके अभावमें ब्राह्मणोंको उपर्युक्त रकम देना बंद कर देनेके साथ-ही-साथ पूरे सियारवाँ ग्रामसे कर लेनेका भी निश्चय कर लिया। महाराणाके इस निर्णयसे ब्राह्मणोंके मनमें अत्यन्त क्षोभ हुआ। बात सन् १९२२ ई०की है। उन दिनों भारतके शासक अंग्रेज थे। उदयपुरके रेजीडेंट श्रीविलकिंसन साहब थे तथा आबूमें ए० जी० जी० श्रीकालोन इलियट रहते थे। यद्यपि भारत-सरकारका राजनीतिक विभाग (पोलिटिकल डिपार्टमेंट) देशी राज्योंके भीतरी मामलोंमें हस्तक्षेप नहीं करता था, तथापि सियारवाँ ग्रामके ब्राह्मणोंके विशेष आवेदनपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इलियट महोदयने मामलेको स्वयं समझना चाहा। एक सुनिश्चित तिथिको वे सियारवाँमें रेजिडेंटके साथ वस्तुस्थितिका पता लगानेके लिये आ पहुँचे, उनके साथ महाराणा फतहसिंह भी विराजमान थे।

सियारवाँ ग्राम उदयपुरके संनिकट ही है। एक रमणीय स्थानमें महाराणाने श्रीइलियट महोदयके पड़ावका प्रबन्ध किया था। पड़ावके निकट ही एक मनोरम बावली थी, जिसके किनारोंपर संगमरमरका फर्श बड़ा सुहावना लगता था। बावलीके किनारे एक विशाल वृक्ष भी था। वह नीरव स्थान पहाड़ तथा सघन वृक्षोंसे आच्छन्न था। महाराणा आदि अपने स्थानपर बैठे थे, ठीक सामने सियारवाँके ब्राह्मण बैठकर अपने आवेदनका निर्णय सुननेके लिये समुत्सुक थे।

'यदि ग्राम-दान तथा बारह सौ रुपयोंकी भेंटके सम्बन्धमें आपलोगोंके पास कोई दानपत्र या ताम्रलेख हो तो उसे इस न्यायालयमें उपस्थित कर सकते हैं।' इलियट महोदयने नीरवता भङ्ग की।

ब्राह्मण एक-दूसरेका मुख देखने लगे। उनके प्रखिन्न भालसे यह स्पष्ट हो गया था कि उनके पास कोई प्रमाणपत्र नहीं है। ग्रामके मुखियाके मुखसे एक शब्द भी नहीं निकला। तब एक अधेड़ व्यक्तिने साहसपूर्वक निवेदन किया कि महाराणा सज्जनसिंहने ताम्रपत्रपर हस्ताक्षर तो किया था, पर हमें उस सम्बन्धमें अब कोई जानकारी नहीं है। यह बात प्रायः निश्चित-सी हो चली थी कि निर्णय सियारवाँके ब्राह्मणोंके विरुद्ध होगा।

अचानक लोगोंका ध्यान एक वृद्ध ब्राह्मणकी ओर खिंच गया। वह लाठीके सहारे खड़ा था और आँखें बंदकर मन-ही-मन कुछ गुनगुना रहा था। वह मेवाड़ी बोलीमें अपने इष्ट देवताकी स्तुति कर रहा था और कह रहा था कि 'हे देव! हमारे ग्रामके लोगोंने यदि जीवनमें सदा सत्य...। आश्रय लिया हो तो आप कृपापूर्वक इस आकस्मिक संकटसे हमें मुक्त करें, हमारी रक्षा करें, हमें विजय प्रदान करें।' लोग ब्राह्मणको विस्मयभरी दृष्टिसे देख ही रहे थे कि सहसा मनुष्यके आकार-प्रकारका एक बंदर घने वृक्षपरसे बावलीमें कूद पड़ा। पलभरमें ही बाहर आकर उसने एक ताम्रपत्र बावलीमेंसे निकालकर इलियट महोदयके सामने रख दिया और तत्काल वृक्षपर चढ़ गया। ताम्रपत्र पढ़ा गया। इलियट महोदयको बतलाया गया कि महाराणा सज्जनसिंहने ब्राह्मणोंकी सदाचार-निष्ठा और कर्तव्यपरायणतासे प्रसन्न होकर उन्हें सियारवाँ ग्राम प्रदान कर दिया था तथा साथ-ही-साथ उसे करमुक्त भी कर दिया था। इस (ताम्रपत्र) पर महाराणाकी मुद्रा अङ्कित है। लोग ताम्रलेखसे आश्चर्यचकित हो गये। वह बंदर यथासमय वृक्षसे उतर पड़ा और लोगोंके देखते-ही-देखते उसने ताम्रपत्र पुनः बावलीमें फेंक दिया।

'मैं ताम्रपत्रका सम्मान करता हूँ। अपने पूर्वजोंकी उदारताकी हृदयसे सराहना करता हूँ। ब्राह्मणोंके प्रति पूज्यभाव तथा श्रद्धा-निष्ठा मेरी वंशपरम्पराकी अक्षय निधि है, सियारवाँ ग्राम सदा ब्राह्मणोंके अधिकारमें रहेगा, यह करमुक्त होगा, मेरे उत्तराधिकारी मेवाड़के सभी भावी शासक मेरे इस वचनका आदर करेंगे'—मेवाड़-कुलसूर्यकी इस घोषणासे उपस्थित लोग रोमाञ्चित हो उठे।

निस्संदेह श्रीहनुमानजीने ही साक्षात् प्रकट होकर अपने भक्त वृद्ध ब्राह्मणकी मनःकामना पूर्ण की। हैं भी तो वे 'अष्ट सिद्धि नौ निधिके दाता।'　—श्रीअमरनाथजी सत्सङ्गी

(प्रे०—स्वामी श्रीपारसनाथजी सरस्वती)

(३)

लोभीको शिक्षा और भूखेको भिक्षा

जयपुरसे कुछ ही दूर हनुमानजीके एक मन्दिरमें प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला पूर्णिमाको हनुमान-जयन्तीका मेला लगता है। आस-पासके हजारों लोग मेलेमें आते हैं। आठ-दस दिन पूर्व ही दूकानदार अपनी दूकानें लगा देते हैं। पिछले तीन दिनोंमें यह मेला विशेष आकर्षक बन जाता है।

एक धनाढ्य-कंजूस हलवाई प्रतिवर्ष अपनी दूकान लगाकर बैठता है। इस वर्ष बरसात अच्छी होनेके कारण लोगोंकी भीड़ भी अच्छी हो गयी थी। उस हलवाईका नियम था—मेलेमें मिठाइयोंको तिगुने भावसे बेचना। भला, ऐसा मौका बार-बार कहाँ मिलता? आज मेलेका अन्तिम दिन था, इसलिये वह जितना बन सके, अधिक कमा लेनेमें लगा हुआ था।

संध्याका समय था। मेला धीरे-धीरे शान्त होता जा रहा था। उसी समय एक मस्त साधुने आकर हलवाईके हाथमें चार आने पैसे (चवन्नी) रखकर कहा—'इस चार आनेके पावभर पेड़े दे दो।' हलवाईने चवन्नी देखी और पावभर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पेड़ेकी माँग सुनी तो उसका मिजाज ठिकानेपर न रहा। वह ऊँचे स्वरसे बोला—

'बाबाजी ! पेड़ेका भाव तीन रुपये सेरका है। एक पाव पेड़ेके लिये बारह आने दीजिये।'

'सेठजी !' साधुने शान्त स्वरमें कहा—'कलसे तो मैंने श्रीहनुमान-जयन्तीका उपवास कर रखा है, आज भी कुछ खाया नहीं और मेरे पास चार ही आने हैं। अतः आप कृपया चार आनेके एक पाव पेड़े दे दीजिये। मुझे बहुत भूख लगी है।'

'भूख लगी है तो इस गड्ढेमें गिर पड़ो।' चवन्नीको सामनेके एक गड्ढेमें फेंककर हलवाई बोल उठा—'तुम्हारे बापका माल है, जो मुफ्तमें लेना चाहते हो ?'

'सेठजी !' साधुने कहा—'सामनेवाले ध्वजाधारी महाबली हनुमान मेरे बाप होते हैं और आपके भी बाप हैं। उनके निमित्तसे ही आप बहुत रुपये कमा लेते हैं, अतः मेरे बापका ही माल है। आप पावभर पेड़े न दे सकें तो मेरी चवन्नी वापस दीजिये। मैं दूसरी दूकानसे कुछ ले लूँगा। संध्या होने आयी है, दूकानें उठ जायँगी तो मुझे आज भी भूखा रहना पड़ेगा।'

'चवन्नी चाहिये' हलवाई बोला—'तो सामनेके गड्ढेमेंसे ले ले। मुझे फुरसत नहीं है, बड़ा आया है पेड़े खाने।'—और वह दूसरे ग्राहकोंको माल देनेमें व्यस्त हो गया। श्रीहनुमानजीकी ओर देखता हुआ वह निराश साधु एक पत्थरके ऊपर बैठ गया। सायंकाल होनेके कारण धीरे-धीरे ग्राहक भी कम होते जा रहे थे। इधर हलवाई दिनभरकी कमायी हुई धनराशि गिननेमें संलग्न हो गया। चार सौ नब्बे रुपये गिनकर उसने एक थैलीमें बाँध दिये; किंतु लोभका मारा वह अब भी बैठा रहा कि दस रुपयेकी बिक्री और हो जाय तो पाँच सौ रुपये पूरे हो जायँगे।

थोड़े ही समयमें न मालूम कहाँसे चार बंदर उस दूकानमें घुस गये। एक बड़े बंदरने चार सौ नब्बे रुपयेवाली थैली हड़प ली। दूसरा टोकरीमेंसे मिठाई ले-लेकर उछालने लगा और तीसरेने सेर-डेढ़-सेर पेड़े लेकर उस साधुकी गोदमें रख दिये और चौथा दूकानके द्वारपर प्रहरी बनकर चौकी करने लगा।

यह सब देखते-ही-देखते हो गया। बहुत-से लोग एकत्र हो गये। रुपये और माल-सामान लूटे जानेके कारण लोभी हलवाई सिर पीटकर रोने लगा। रुपयेकी थैली लेकर बंदर सामनेके पेड़पर जा बैठा।

अन्य वानर दूकानके माल-सामानको नष्ट करके चले गये। केवल रुपयोंकी थैली लेकर एक वानर सामनेवाले वृक्षकी डालीपर बैठा हुआ दिखायी पड़ता था। उसको प्रलोभन देकर थैली छुड़ानेके सभी प्रयत्न व्यर्थ हो चुके थे। आखिर हलवाईकी आँखें खुल गयीं। सामने पत्थरपर बैठे हुए उस भूखे साधुके चरणोंमें नमस्कार कर वह कहने लगा—

'महाराजजी ! मैं लुट गया। मैं आपके पैरों पड़ता हूँ। मेरे रुपये उस वानरसे दिलवा दीजिये। नहीं तो मैं कहींका न रहूँगा।'

'मैं क्या कर सकता हूँ भाई ! जिसके बापके थे, वही तो ले गया है रुपये ? मेरी भी चवन्नी गयी। अब मेरी चवन्नीको गड्ढेमेंसे खोजकर ला दे। दूसरेके बापके रुपये अपने बनानेमें तो उन्हींके चरणोंमें गिरना पड़ता है, इसलिये मेरे पाँव छूनेसे कुछ न मिलेगा; भगवान् महावीरके चरणोंमें जाकर प्रार्थना करनेसे तुम्हें सब कुछ मिल सकता है। अन्य कोई उपाय नहीं।'—साधुने कहा।

पेड़ेके टोकरेमें बस, दो-ढाई सेर ही पेड़े बच रहे थे। उन्हें लेकर हलवाई मन्दिरमें आया और श्रीहनुमानजीको भोग लगाकर सभीको प्रसाद बाँट दिया। गड्ढेमें फेंकी हुई चवन्नी और पावभर पेड़ेका प्रसाद उस साधुके हाथमें देकर उसने नम्र भावसे क्षमा माँगी।

इस ओर पेड़के ऊपर बैठे हुए वानरने जोरसे उस थैलीको नीचे फेंक दिया। लोगोंने रुपये बटोरकर हलवाईको दे दिये। वे वानर देवता अदृश्य हो गये थे।

—श्रीविनोदकुमारजी एम्० पुरोहित, एम्० ए०, बी० एड्०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रद्धाञ्जलि

आत्मा अजर, अमर और अक्षर है। पाञ्चभौतिक देह विनाशी है, उसीकी मृत्यु होती है; क्योंकि वह क्षर है। इस विनाशी देहमें स्थित जीवात्मा अपने जन्म-जन्मान्तरके शुभाशुभ कर्मोंके फलका भोग करनेके लिये जन्म लेता और मृत्युको प्राप्त होता है। यद्यपि आत्मा शोकका विषय नहीं है, तथापि श्रेष्ठ पुरुषोंकी मृत्यु हो जानेपर उनके पुण्यकर्मोंकी स्मृति लोक-प्रेरणाके प्रतीक-रूपमें लोगोंकी श्रद्धाञ्जलिका विषय बन जाती है। इसी श्रद्धा-सद्भावनाकी दृष्टिसे हम भारतीय संस्कृतिके अप्रतिम संदेशवाहक, महान् दार्शनिक, भगवती सरस्वतीकी साधनामें निरन्तर तल्लीन रहनेवाले अध्यात्म-मानव, स्वतन्त्र भारतके भूतपूर्व राष्ट्रपति परम सम्मान्य सर्वपल्ली डॉ० श्रीराधाकृष्णन्‌जीकी अमर आत्माके प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि व्यक्त करते हैं। वे गत १६ अप्रैल १९७५ ई०को ८८ वर्षकी आयुमें पाञ्चभौतिक शरीरसे निष्क्रमण कर परलोकवासी हो गये। आप जब आन्ध्र विश्वविद्यालयमें कुलपति थे, तभीसे आपकी 'कल्याण'पर कृपा एवं आत्मीयता रही है। आप भारतीय संस्कृतिके उपासक एवं प्राच्य-पाश्चात्त्य दर्शनके उद्भट विद्वान् थे। आपके निधनसे देशकी एक विशिष्ट विभूति उठ गयी। आपके स्थानकी पूर्ति होना कठिन-सा दीखता है।

श्रद्धेय सर्वपल्ली डॉ० श्रीराधाकृष्णन् महोदयने तमिलनाडुके एक अत्यन्त गौरवशाली पवित्र एवं सम्पन्न तेलुगु ब्राह्मण-कुलमें जन्म लिया था। वे अत्यन्त पवित्र संस्कारोंसे सम्पन्न थे।

उन्होंने विदेशी दर्शन-साहित्यका मन्थन कर उसपर भारतीय संस्कृतिकी छाप अङ्कित कर दी। वे भारतीय संस्कृतिके महान् मर्मज्ञ थे। उन्होंने जड़ विज्ञानसे प्रभावित जगत्‌को अपनी आदर्श हिंदुत्व-निष्ठा और आचरणसे समाकृष्टकर भारतीय मानवका मानदण्ड उन्नत रखनेका सफल प्रयास किया।

उन्होंने भारतीय संस्कृति और सनातन धर्मके अनेकानेक ग्रन्थोंका प्रणयन कर भारतकी गौरव-गरिमाकी संवृद्धि की। श्रीमद्भगवद्गीतापर लिखा गया उनका भाष्य दार्शनिक दृष्टिसे एक महान् प्रयास है, जिसके विमल प्रकाशमें पाश्चात्त्य जगत्‌के बड़े-बड़े विद्वानोंने श्रीमद्भगवद्गीताके महत्त्वकी प्रेरणा प्राप्त की एवं कर रहे हैं।

महामनीषी डॉ० श्रीराधाकृष्णन् महान् शिक्षक थे। काशीके शिक्षापीठ हिंदूविश्वविद्यालयके उपकुलपतिपदको अनेक वर्षोंतक समलंकृतकर उन्होंने गुरु-शिष्यके सम्बन्धको अनुशासित और संनियमित किया। आप आदर्श भारतीय, मनीषी और आचार्य थे। 'कल्याण'के पाठकोंको भी उनके बताये हुए मार्गका अनुसरण तथा उनके पवित्र भावों और विचारोंका अनुशीलन कर जीवनमें लाभ उठाना चाहिये। यह उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। —सम्पादक

......'कल्याण' मार्च ७५ ई०का साधारण अङ्क विशेष परिस्थितियोंके कारण मईमें प्रकाशित हो रहा है अतः यह श्रद्धाञ्जलि इसी अङ्कमें प्रकाशित की गयी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विद्वान् लेखकोंसे प्रार्थना

सद्ज्ञानवृद्धिके द्वारा आध्यात्मिकता एवं सदाचारकी स्थापनासे ही समाज, राष्ट्र एवं विश्वका सच्चा कल्याण सम्भव है। एतदर्थ अधिकारी संतों एवं विद्वानोंसे प्रार्थना है कि वे 'कल्याण' पत्रिकाके साधारण अङ्कोंके लिये निम्नलिखित विषयोंपर अपने लेखादि भेजने-भिजवानेकी कृपा करें—

१—ज्ञान, वैराग्य और भक्तिसे परिपूर्ण आध्यात्मिक एवं धार्मिक निबन्ध।

२—वेद, पुराण, गीता, रामायण आदि ग्रन्थों तथा सूर, तुलसी आदिके काव्योंपर शङ्का-समाधान, साहित्यिक शोध, सारांश आदि।

३—प्राचीन एवं अर्वाचीन विज्ञान, राजनीति, अर्थशास्त्र आदिकी तुलनात्मक समीक्षा तथा कल्याणकारी नीति-विद्या-कलादिके मण्डनपूर्वक शान्ति-लाभके लिये सफल उपायोंका निदर्शन।

४—व्रत, पर्व, जयन्ती, सामयिक उत्सव—कुम्भ, अर्द्धकुम्भ, महावारुणी, पुरुषोत्तम (अधिक) मास, क्षयमास, जन्माष्टमी आदिपर ऐतिहासिक, खोजपूर्ण, कर्तव्यनिर्देशक एवं गवेषणात्मक प्रबन्ध।

५—तीर्थ, मन्दिर, वन-आश्रमोंके भौगोलिक निर्देश, माहात्म्य, प्रभाव आदि।

६—ज्योतिष, कर्मविपाक, परलोक, पराविद्यादिसे सम्बद्ध चेतावनीप्रद सामयिक निर्देशादि।

७—मन्दिर, प्रतिमा, चित्रादि तथा अन्य सात्त्विक कलाओंपर निबन्ध।

८—दर्शन, कर्मकाण्ड, देवपूजा, धर्मशास्त्रादिपर परिचयात्मक एवं विवरणात्मक निबन्ध।

९—प्राचीन आचार्यों, संतों और भक्तोंके चरित्र।

१०—स्त्री-जगत्-उपकारी लेख, घटना, नियम आदिका निर्देश।

११—बाल, युवा, छात्र-जगत्-उपयोगी घटना-निर्देश, उपदेश, परामर्शादि।

१२—अर्थ-काम-प्रधान आधुनिक मिथ्या आडम्बरपूर्ण सिद्धान्तोंकी सभ्य शब्दोंमें समीक्षा।

१३—आकर्षक ऐतिहासिक, सामाजिक, प्राचीन एवं वर्तमान घटनाओं (Current Topics) आदिके प्रकाशद्वारा दिशा-निदर्शन।

१४—अहिंसा, क्षमा, दया, प्रेम, सरलता, संयम, ब्रह्मचर्य आदिपर श्रेष्ठ, सामाजिक एवं शिक्षाप्रद पौराणिक कथाएँ, ऐतिहासिक घटनाएँ, कहानियाँ, एकाङ्की नाटक आदि।

१५—भगवत्सम्बन्धी भावपूर्ण कविताएँ, सूक्तियाँ, भजन, संकलित गद्यांश आदि।

हमारी विनम्र प्रार्थना है कि लेख भेजनेकी कृपा वे ही सज्जन करें, जिनका सम्बन्धित विषयोंपर अधिकार हो एवं जो लेखन-कलासे परिचित हों। कृपया अपनी रचनाएँ 'सम्पादक—'कल्याण', पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)' के पतेपर ही भेजें।

—सम्पादक, 'कल्याण', पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

'कल्याण' नामक हिंदी मासिक-पत्रके सम्बन्धमें विवरण

फार्म चार—नियम-संख्या—आठ

१—प्रकाशनका स्थान—गीताप्रेस, गोरखपुर
२—प्रकाशनकी आवृत्ति—मासिक
३—मुद्रकका नाम—मोतीलाल जालान
राष्ट्रगत सम्बन्ध—भारतीय
पता—गीताप्रेस, गोरखपुर
४—प्रकाशकका नाम—मोतीलाल जालान
राष्ट्रगत सम्बन्ध—भारतीय
पता—गीताप्रेस, गोरखपुर
५—सम्पादकका नाम—स्वामी श्रीरामसुखदासजी
राष्ट्रगत सम्बन्ध—भारतीय
पता—गीताप्रेस, गोरखपुर
६—उन व्यक्तियोंके नाम-पते जो इस समाचार-पत्रके मालिक हैं और जो इसकी पूँजीके भागीदार हैं। — श्रीगोविन्दभवन-कार्यालय
पता—नं० १५१, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता (सन् १८६० के विधान २१ के अनुसार रजिस्टर्ड धार्मिक संस्था)

मैं मोतीलाल जालान, इसके द्वारा यह घोषित करता हूँ कि ऊपर लिखी बातें मेरी जानकारी और विश्वासके अनुसार यथार्थ हैं।

मोतीलाल जालान
प्रकाशक

दि० १।३।१९७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri